Braj Ras Madhuri (Hindi) Part-2

Copy right © Radha Govind Samiti

Published by:

Radha Govind Samiti

Golok Dham, H.A.F. (B) Part-1, Sector-10, Dwarka,
New Delhi - 110075 Phone: 011-25081088
E-mail: rgs108del@yahoo.com

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ÕÁÚâ ×æÏÚè

Öæ» - w

श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारीण,
वेदमार्गप्रतिष्ठापनाचार्य, निखिलदर्शनसमन्वयाचार्य,
सनातनवैदिकधर्मप्रतिष्ठापनसत्संप्रदायपरमाचार्य,
भक्तियोगरसावतार, भगवदनन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु १००८

स्वामी श्री कृपालु जी महाराज

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जगद्गुरु कृपालु परिषत्

प्रकाशकीय

ब्रजरस रसिक **जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज,** रसिक शिरोमणि, रसरूप श्यामसुन्दर एवं रससिन्धु रासेश्वरी श्री राधारानी की रसमयी लीलाओं का रसास्वादन साधारण जीवों को भी कराने के लिये सदैव आतुर रहते हैं। दिव्य उन्माद की अवस्था में वे रसिक और रसरूप दोनों ही प्रतीत होते हैं। साथ ही यह भी अनुभूति होती है कि वह जीवों को बरबस ब्रजरस वितरित करना चाहते हैं। उनके श्री मुख से निःसृत संकीर्तन ब्रजरस ही है, पीने वाला होना चाहिये।

'ब्रजरस माधुरी' में समस्त संकीर्तन संकलित किये गये हैं। यह पुस्तक तीन भागों में प्रकाशित की गई है।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधा गोविंद समिति

चतुर्थ संस्करण:
7 जुलाई, 2009

प्राक्कथन

पुस्तक के नाम से ही पुस्तक की विषय-सामग्री का स्पष्टीकरण हो जाता है। दिव्यानन्द के अनेकों स्तर हैं जिनमें सर्वश्रेष्ठ है ब्रजरस। उस ब्रजरस की प्राप्ति श्री राधा-कृष्ण की निष्काम रागानुगा भक्ति के द्वारा ही संभव है। रागानुगा भक्ति दास्य, सख्य, वात्सल्य, माधुर्य- इन चार भावों से की जाती है। इन चारों भावों में भी माधुर्य भाव सर्वश्रेष्ठ है, क्योंकि प्रथम तो उसमें अन्य समस्त भावों का समावेश हो जाता है और दूसरा कारण यह है कि इसी माधुर्य भाव की निष्काम भक्ति द्वारा ब्रजरस के सर्वश्रेष्ठ स्तर कुंज रस की प्राप्ति हो सकती है। बस! यह अन्तिम कक्षा है जहाँ तक कोई जीव जा सकता है। उस सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति-हेतु साधक के हृदय में जिन भावों की पुष्टि परमावश्यक है, उन्हीं को इस पुस्तक में संकलित संकीर्तनों में अभिव्यक्त किया गया है। भगवदनुरागी जन इस पुस्तक से अवश्य ही कुछ न कुछ लाभ प्राप्त कर सकेंगे, ऐसी आशा है।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

(नारद पुराण)

जगद्गुरु
कृपालु

जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज

वर्तमान काल में **जगद्गुरु स्वामि श्री कृपालु जी महाराज** विश्व के इतिहास में पंचम जगद्गुरु हैं। ये समन्वयवादी जगद्गुरु हैं अतएव ये पूर्ववर्ती समस्त आचार्यों **(जगद्गुरु निम्बार्काचार्य, जगद्गुरु रामानुजाचार्य, जगद्गुरु माध्वाचार्य एवं चैतन्यदेव)** के दार्शनिक सिद्धान्तों को सही सिद्ध करते हुए अपना समन्वयवादी दर्शनिक सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं। इनके मतानुसार यद्यपि ईश्वर- प्राप्ति के अनेक मार्ग हैं तथापि भक्ति ही सर्वश्रेष्ठ तथा सर्वसुलभ मार्ग है, प्रत्येक जीव का लक्ष्य **स्वसुखवासनागंधलेश-शून्य श्रीकृष्ण सुखैक तात्पर्यमयी सेवा ही है।** इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु श्रवण, कीर्तन, स्मरण तीन प्रकार की प्रमुख भक्ति करनी होगी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अनुक्रमणिका

1.	अद्वितीय इक तत्व कहाय।	8
2.	अलबेली मम सरकार	111
3.	आजु कान्ह को नींद न आय।	206
4.	आ जा आ जा पुनि ब्रज आ जा नँदनंदन।	195
5.	आली लखु लाली लाल झुलन बहार।	331
6.	इष्टों में इष्ट तो है इष्ट श्यामा श्याम।	17
7.	इक दिन आपुहिं यशुमति माय।	208
8.	एक बार ज्ञानी ऊधो पूछे बलभाय।	12
9.	ऐसी अलबेली सरकार।	112
10.	ओरी गोरी गोरी गोरी तोरी मोरी जोरी।	15
11.	ओरी मोरी सखि लूट्यो मोहिं भल बलभाय।	228
12.	ओरे जादूगर श्याम तू बड़ोई जादूगर।	233
13.	ओरे नटखट मोते न लिपट परे हट।	231
14.	ओली मोली माय थुनु कह लाली तुतुराय।	321

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

15.	कब देखूँ नैनन छवि घनश्याम।	50
16.	कृष्ण भक्ति ही वेद बताय।	18
17.	कामरि वारे पै का मरि जाय।	235
18.	काहे लिया चितचोर मोर चोर सिरमोर।	238
19.	किया कैसा जादू पिया जादूगर सरदार।	241
20.	कीरति सों कुँवरि कहति तुतुराय।	318
21.	गुरु चरण कमल बलिहार	1
22.	चलु चलु चलु तजु अंचल चंचल।	244
23.	छल किया पिया छलि लिया मन छलिया।	246
24.	छू मंतर करि गयो मेरो यार।	249
25.	जब ते मैं लखी सखि छवि वाय बलभाय।	316
26.	जय जय राधारानी राधारानी राधारानी।	117
27.	जयति जयति जय भानुदुलार।	114
28.	जा जा जा जा जा जा जार जा जा कुब्जा यार	251
29.	जायो यशुमति सुत बलिहार।	196
30.	जोड़ अलबेली सरकार	119
31.	ठकुरानी राधा रानी प्रेम सुख दानी	121
32.	तजु मनमानी भजु नँदनंदन।	56
33.	तीन ही तत्व श्रुति नित्य बताय।	21
34.	तुम दीनन को रखवार	55
35.	तुम ही रहु ब्रज महँ इकली माय।	253

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

36. तुम ही मम नंदकुमार, थे हो रहिहौ सरकार। 59
37. तुम ही मम नंदकुमार, तुम स्वामि सखा 60
38. तू ही स्वामी बलभाय, है सखा तु ही बलभाय। 64
39. तू ही तू ही तू ही तो है मेरी एक राधारानी 128
40. तू ही तू ही तू ही तो है मेरा नँदनंदन 65
41. तू भी मेरा यह माना मैंने बार बार। 61
42. तू तो मेरी थी है रहेगी भी राधारानी। 126
43. तूने अब लौं छला मोहिं वो छलिया। 256
44. तेरे अगनित गुन गन नँदनंदन। 69
45. तेरी कृपा का भरोसा भारी राधारानी। 122
46. तोसों नहिं बोलूँ जारे जारे हरजाई। 261
47. तोहिं कहा भयो सखि मोहिं काहे न बताय। 258
48. देखो देखो आली लाली 328
49. दे जा दे जा री सखी मोहिं दधि को दान। 263
50. दोउ प्राणवल्लभ प्राणनाथ श्यामा श्याम। 183
51. धनि धनि प्रेम धनि धनि नँदनंदन 71
52. नाथों के नाथ दीनानाथ सो जगन्नाथ। 73
53. नंद घर ब्रह्म बन्यो नँदनंद। 199
54. नंद महल महँ बजत बधाई। 202
55. नारी जाने कछु प्रीति रीति बनवारी। 265
56. निज कर निज गर फाँसी डार। 268
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

57.	प्यारी प्यारी प्यारी प्यारी प्यारी छवि वारी।	131
58.	प्यारी राधा रानी ब्रज रस की खानी।	133
59.	प्यारी प्यारी सुकुमार	136
60.	प्राणधन नँदनंदन घनश्याम।	76
61.	पालने झूलत यशुमति लाल।	212
62.	पिय फोरी मोरी गागरि बरजोरी।	271
63.	पिया बिनु मोरा जिया हाय घबराय।	273
64.	ब्रह्म रूप आनँद कहाय।	26
65.	ब्रह्मा भृगु संवाद सुनाय।	29
66.	बरसाने वारी प्यारी जू पै वारी वारी।	137
67.	बलि बलि अलबेली सरकार।	140
68.	बलिहारी है तिहारी गुरु बलिहारी।	5
69.	बलिहारी बलिहारी वारी बनवारी।	78
70.	बैठी सखि सँग यशुमति माय।	214
71.	भक्ति कल्प तरु सम श्रुति गाय।	32
72.	भज मन जीवन धन नँदनंदन।	82
73.	भज मन राधा रमन घनश्याम।	85
74.	भज मन राधा राधा, रस प्रेम सुधा राधा।	142
75.	भाय गयो भाय गयो बलभाय	89
76.	भाय गयो भाय गयो भाय गयो बलभाय।	275
77.	भोला भाला कह श्यामा सम श्याम।	191

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

78.	मम स्वामी प्राणाधार	98
79.	मम ठाकुर श्यामा श्याम	194
80.	मन करु सुमिरन राधा	144
81.	मन करु सुमिरन यशुदा को ललन।	92
82.	मम स्वामिनि श्यामा भाम	149
83.	मन तेरो साँचो मीत गोपाल।	95
84.	मन भाये राधारानी छवि अभिराम।	147
85.	मनिहारिनि बनि गये नंदकुमार।	278
86.	मिलि द्वै द्वै ह्वै गये चार यार।	280
87.	मेरी राधे मेरी राधे मेरी प्यारी राधे	154
88.	मेरी राधा रानी हैं अवढर दानी।	162
89.	मेरी राधारानी, हैं ब्रज रस की खानी	153
90.	मेरी प्यारी राधे बरसाने वारी राधे।	153
91.	मेरी प्यारी प्यारी प्यारी बरसाने वारी।	150
92.	मेरी राधारानी राधारानी राधारानी।	164
93.	मेरी राधा रानी प्रेम रूप रस खानी	167
94.	मेरी राधा रानी रस की खानी	159
95.	मेरे नँदनंदन मेरे यशुदा सुवन।	204
96.	मेरे दोउ श्यामा श्याम	195
97.	मेरे चितघन आनन्दघन घनश्याम।	99
98.	मेरे गुरुवर भक्ति रस अवतार।	2

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

99. मेरो धन राधा जू को नाम। 169
100. मैं तो बिकि गई बिनु ही दाम सखी। 285
101. मैं तो लुटि गइ लुटि गइ लुटि गइ यार। 288
102. मैं तो लुटि गई बीच बजार सखी। 290
103. मैंने जाना तोहिं भोरा भारा छोरा छलिया। 293
104. मैंने जाना नहिं तू ही मेरा पिय रसिया। 283
105. मैंने जब ते लखी है सखी दृग बलभाय। 295
106. मोहिं मारे जनि मैं न माटी खायो मैया। 218
107. मोरा चित चोरा काहे तू बता दे चितचोर। 298
108. मोरा चोरा चित काहे चोरी चोरी चितचोर। 300
109. मोते लिपट न निपट यमुन तट हट। 303
110. मोरी वृषभानु दुलार 171
111. यार सो ह्वै गये नैना चार। 305
112. रूप रसो वै सः बलभाय। 35
113. लरे भोरी भारी कुँवरि माय बिरुझाय। 323
114. लाल कह मैया अस ब्रज बाल। 220
115. वारी भोरी भारी बरसाने वारी प्यारी। 173
116. वारी वारी वारी बनवारी छवि प्यारी। 101
117. वाने जाने कैसा जादू किया पिया जादूगर। 308
118. वेद तत्व परब्रह्म बताय। 38
119. वेदन तीन तत्व बतलाय। 41

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

120.	वो बरसाने वारी, मनमोहन मन हारी।	175
121.	वो बरसाने वारी, वो सुख घन तन वारी।	176
122.	श्री वृन्दावन कुंज मझार।	178
123.	सखि लखु सावन मास बहार।	333
124.	सखि कोउ देउ वैद बुलवाय।	311
125.	सखि नटखट नंदकुमार,	310
126.	सब शास्त्र वेद बतलाय, है लक्ष्य भक्ति	46
127.	सत चित आनँद घन नँदनंदन।	107
128.	साधन एक भक्ति श्रुति गाय।	47
129.	सुनु ओरी गोरी तोरी मोरी भल जोरी।	314
130.	सुनि सुनि उरहन खीझी माय।	223
131.	सो छबीली छबि छली अति छल बलिया।	326
132.	हमारे मन भाय गईं राधारानी।	181
133.	हैं बाँको सुंदर श्याम	109
134.	होड़ परी राम श्याम दोउ भाय।	226

COPYRIGHT

RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे
राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे राधे

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

1

(हैं बाँको सुन्दर...)

गुरु चरण कमल बलिहार, गुरु पर तन मन धन वार।
गुरु चरण धूरि सिर धार, गुरु महिमा अपरंपार॥
सद्‌गुरु भज नंदकुमार, हरि भज सद्‌गुरु सरकार।
दोउ कह दोउ प्राण हमार, गुरु महिमा अपरंपार॥
गुरु रह उर नंदकुमार, गुरु उर रह हरि रिझवार।
दोउ करुणा को भंडार, गुरु महिमा अपरंपार॥
गुरु चह सुख नंद कुमार, गुरुवर सुख चह रिझवार।
हरि गुरु दोउ प्राणाधार, गुरु महिमा अपरंपार।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गुरु मिले कृपा रिझवार, गुरु कृपा मिले सरकार।
दोउ कृपा रूप साकार, गुरु महिमा अपरंपार॥
गुरु कह भजु नंदकुमार, गुरु कहँ भजु कह रिझवार।
दोउ दास्य धर्म उर धार, गुरु महिमा अपरंपार॥
गुरु पतितन सों कर प्यार, हरि निर्मल जन को यार।
यह अंतर सुजन विचार, गुरु महिमा अपरंपार॥
यह है भवसिंधु अपार, नर देह नाव अनुहार।
नाविक सद्गुरु सरकार, गुरु महिमा अपरंपार॥
जो समझा दे श्रुति सार, उर भरा प्रेम रिझवार।
सोइ है सद्गुरु सरकार, गुरु सोइ 'कृपालु' सरकार॥

2

(नीको लागे मोको...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरे गुरुवर भक्ति रस अवतार।
गुरु कह गुरु हरि दोउ इक सार।
गुरु कह गुरु का अधिक आभार।
गुरु कह सेव्य तत्व नंदकुमार।

गुरु कह प्राप्ति साधन भक्ति सार।
गुरु कह साधन भक्ति नौ प्रकार।
गुरु कह नौ में स्मरण भक्ति सार।
गुरु कह भाव के भी चार प्रकार।
गुरु कह भाव में माधुर्य भाव सार।
गुरु कह यह संसार असार।
गुरु कह तनु हित सब संसार।
गुरु कह जीव हित नंदकुमार।
गुरु कह धर्म आदि कैतव चार।
गुरु कह मोक्ष कैतव सरदार।
गुरु कह कामना है पाँच प्रकार।
गुरु कह पाँच कामना मन धार।
गुरु कह जीव अंश नंदकुमार।
गुरु कह जीव विषय नंदकुमार।
COPYRIGHT
गुरु कह सतघन नंदकुमार।
RADHA GOVIND SAMITI
गुरु कह चितघन नंदकुमार।
गुरु कह सुखघन नंदकुमार।
गुरु कह सब उर नंदकुमार।
गुरु कह सर्वत्र नंदकुमार।

गुरु कह हरि से ही करु नित प्यार।
गुरु कह मन शुद्ध करे हरि प्यार।
गुरु कह शुद्ध मन पावे दिव्य प्यार।
गुरु कह दिव्य प्रेम ह्लादिनी सार।
गुरु कह दिव्य मन दिव्य प्रेम धार।
गुरु कह तन करे जग व्यवहार।
गुरु कह मन करे हरि सों ही प्यार।
गुरु कह माँगो रो के निष्काम प्यार।
गुरु कह गुरु ही देय दिव्य प्यार।
गुरु कह कृष्ण तत्ववित गुरु धार।
गुरु कह वेद शास्त्रवित गुरु धार।
गुरु कह दिव्य प्रेम प्राप्त गुरु धार।
गुरु कह हरि गुरु को ही उर धार।
गुरु कह गुरु करुणा भंडार।
गुरु कह गुरु दीनन रखवार।
गुरु कह गुरु पतितन पतवार।
गुरु कह गुरु निराधार आधार।
गुरु कह गुरु दिव्य गुण साकार।
गुरु कह गुरु दे अहैतुक प्यार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गुरु कह गुरु पै दे सर्वस वार।
गुरु कह 'गु' का अर्थ है अंधकार।
गुरु कह 'रु' का अर्थ मेटनहार।
गुरु कह जग प्रेम काम अन्धकार।
गुरु कह हरि प्रेम रवि अनुहार।
गुरु कह हरि सुख निष्काम प्यार।
गुरु कह निज सुख है सकाम प्यार।
गुरु कह हरि गुरु सेवा सार।
गुरु कह गुरु ही 'कृपालु' कर्णधार॥

3

(नथवारी रंगीली...)

COPYRIGHT

बलिहारी है तिहारी गुरु बलिहारी।

RADHA GOVIND SAMITI

तो पै तन मन धन प्रानन वारी।
तू तो है इक रूप ब्रह्म बनवारी।
तेरे भक्त ही हैं साँचे भक्त बनवारी।
तेरी भक्ति बिनु मिले नहिँ बनवारी।

तेरी भक्ति से प्रसन्न होवैं बनवारी।
तेरे भक्त की भी भक्ति करें बनवारी।
तू है पतितन भक्तन बनवारी।
तू ही तत्व बतावे कौन बनवारी।
तू ही पुनि करवावे भक्ति बनवारी।
तू ही करे दान दिव्य प्रेम बनवारी।
तो को माने प्राण ते अधिक बनवारी।
तेरे पाछे पाछे डोलें ब्रह्म बनवारी।
तेरे हाथ बिके बिनु दाम बनवारी।
तेरी पद रज आँजें तनु बनवारी।
तेरी रक्षा करें आठों याम बनवारी।
तेरे जैसा विधि नहिँ प्रिय बनवारी।
तेरे जैसा शिव नहिँ प्रिय बनवारी।
तेरे जैसा दाऊ नहिँ प्रिय बनवारी।
तेरे जैसी पद्मा न प्रिय बनवारी।
तेरे जैसी आत्मा न प्रिय बनवारी।
तू है डोरी सौं पतंग सौं हैं बनवारी।
तेरी रुचि में ही रुचि राखें बनवारी।
तेरा पतन न होने देयँ बनवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरे आगे भूलें भगवत्ता बनवारी।
तू जैसा भी नचावे नाचें बनवारी।
तेरा क्रीतदास बनि जायँ बनवारी।
तेरी भक्ति करें भक्त बनि बनवारी।
तोहिं बिनु माँगे मुक्ति देयँ बनवारी।
तोहिं त्रिगुण अतीत करें बनवारी।
तोहिं तीनों कर्म मुक्त करें बनवारी।
तेरे सब पाप पुण्य नासैं बनवारी।
तेरे तीनों ताप आप नासैं बनवारी।
तेरे पंचक्लेश नष्ट करें बनवारी।
तेरे पंचकोश भस्म करें बनवारी।
तेरी दोनों माया को भगावें बनवारी।
तेरे काम को बनावें प्रेम बनवारी।
तेरे कृपा पात्र पावें कृपा बनवारी।
तेरी कृपा पावे ज्ञानी प्रेम बनवारी।
तू है विधि हरि हर तू है बनवारी।
तोहिं पावे जा पै कृपा करें बनवारी।
तोहिं जाने सो जनावे जेहि बनवारी।
तेरी सेवा माने निज सेवा बनवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरी नीच टहल बलि बनवारी।
तेरे सुख में ही सुख मानें बनवारी।
तेरे सर्व कर्म करें आपु बनवारी।
तेरे प्रिय के परम प्रिय बनवारी।
तेरे प्रेम के पुजारी बने बनवारी।
तेरे दिये पत्र पुष्प खायँ बनवारी।
तेरी भक्ति आगे शक्ति भूलें बनवारी।
तेरी कृपा ते 'कृपालु' पावें बनवारी॥

4

(नीको लागे...)

अद्वितीय इक तत्व कहाय।
ब्रह्म नाम जेहि वेद बताय।
ब्रह्म रूप भी तीन बताय।
एक रूप तो ब्रह्म कहाय।
एक रूप परमात्मा आय।
एक रूप भगवान कहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तीनिहुँ रूप अभिन्न बताय।
निराकार तो ब्रह्म कहाय।
ब्रह्म शक्ति अव्यक्त बताय।
परमात्मा साकार बताय।
वामें शक्ति कछुक प्रकटाय।
जो स्वरूप भगवान कहाय।
वामें सर्वशक्ति प्रकटाय।
सोइ साकार ब्रह्म बलभाय।
कृष्ण शक्ति अगनित श्रुति गाय।
वामें तीन प्रमुख बतलाय।
एक परा इक जीव कहाय।
एक शक्ति माया कहलाय।
तीनिहुँ शक्ति नित्य कहलाय।
परा स्वरूप शक्ति कहलाय।
अंतरंग परा कहलाय।
जीव शक्ति तटस्थ कहाय।
माया बहिरंगा कहलाय।
वाके भेदहुँ तीन बताय।
कृष्ण सच्चिदानंद कहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सत की शक्ति संधिनी आय।
संवित चित की शक्ति कहाय।
आनँद शक्ति ह्लादिनी आय।
सर्वश्रेष्ठ ह्लादिनि बतलाय।
याते ब्रह्म सदा सुख पाय।
ह्लादिनि सार प्रेम कहलाय।
जीव साध्य यह प्रेम बताय।
प्रेम प्राप्ति क्रम सुनु मन लाय।
सर्वप्रथम श्रद्धा उर लाय।
पुनि प्रेमी गुरु के ढिंग जाय।
मन बुधि गुरु के शरण कराय।
पुनि मन ते सत्संग कराय।
पुनि मन ते हरि भजन कराय।
पुनि अनर्थ मन ते मिटि जाय।
पुनि हो उर निष्ठा बलभाय।
पुनि उपजे उर रुचि बलभाय।
पुनि हो सक्त चित्त बलभाय।
पुनि हो भाव भक्ति बलभाय।
अंतिम दिव्य प्रेम बलभाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गुरु की कृपा प्रेम तब पाय।
प्रेम वश्य रह नित बलभाय।
प्रेमी पाछे चल बलभाय।
कारण प्रेमी पद रज पाय।
सर्वश्रेष्ठ रस प्रेम कहाय।
कोटिन मुक्तन महँ कोउ पाय।
उपर्युक्त जो क्रम बतलाय।
वाते साध्य प्रेम मिलि जाय।
साधन ही दे साध्य दिलाय।
साधन ते मन शुद्ध कराय।
गुरु की कृपा प्रेम तब पाय।
जाके उर श्रद्धा नहिं आय।
सोउ सत्संग करे मन लाय।
सत्संगहिं श्रद्धा उपजाय।
यदि सत्संगहुँ नहिं कोउ पाय।
रोकर विनय करे बलभाय।
तब 'कृपालु' हरि संत मिलाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

5

(नीको लागे...)

एक बार ज्ञानी ऊधो पूछे बलभाय।
श्रेय के अनेक पथ बुध क्यों बताय॥
इतने बने क्यों पथ मोहिं समुझाय।
इनमें हैं सत्य कौन और क्यों बताय॥
तुमने तो एक भक्ति योग ही बताय।
सोइ निरपेक्ष सर्वश्रेष्ठ पथ आय॥
तुम वेदकृत वेदवित बलभाय।
तुम को ही सर्ववित श्रुति बतलाय॥
यह प्रश्न मेरा ही नहीं है बलभाय।
बड़े बड़े ज्ञानी जन रहे भरमाय॥
मेरे प्राण सखा ऊधो सुनु मन लाय।
इतने बने क्यों पथ अभी समुझाय॥
प्रलय में मेरी वेद वाणी भी नसाय।
सृष्टि में प्रथम वेद विधि को बताय॥
वेद में तो मैंने एक धर्म बताय।
सोइ धर्म भागवत धर्म कहाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्मा ने तो वेद ज्ञान मनु को कराय।
ऐसे ही परंपरा से वेद चलि आय॥
वेद पाठियों का तो स्वभाव भिन्न आय।
वासना भी उन मन भिन्न भिन्न आय॥
सत्व रज तम गुण माया के बताय।
याते वासना के तीन गुण युत भाय॥
वेद पाठियों की चित्तवृत्ति भिन्न आय।
याते वेद वाणी अर्थ नाना प्रकटाय॥
मेरी वेद वाणी तो अलौकिक आय।
वामें जो भी जैसा चाहे अर्थ मिलि जाय॥
कुछ पथ वेद निंदकों ने भी चलाय।
कुछ पथ दंभी जनों ने भी चलवाय॥
मायावश सब की ही मति भरमाय।
याते निज रुचि का ही पथ बतलाय॥
कोउ पथ धर्म कोउ यश को बताय।
कोउ पथ काम कोउ सत्य को बताय॥
कोउ श्रेय पथ शम दम को बताय।
कोउ ऐश्वर्य कोउ भोग को बताय॥
कोउ त्याग कोउ यज्ञ तप बतलाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कोउ व्रत कोउ यम नियम बताय॥
ऊधो जो बताये सब कर्म कहलाय।
कर्म फल तो सदा अनित्य बतलाय॥
कछु काल अल्प स्वर्ग लोक सुख पाय।
पुण्य क्षीण होय जब पुनि दुख पाय॥
स्वर्ग सुख भोगि पुनि मर्त्य लोक आय।
स्वर्ग कामी को प्रमूढ़ वेद बतलाय॥
सत्य दया युक्त धर्म श्रेष्ठ कहलाय।
सोऊ मन को न पूर्ण शुद्ध कराय॥
तप युक्त ज्ञान भी प्रवर कहलाय।
सोऊ मन को न पूर्ण शुद्ध करवाय॥
याते साध्य एकमात्र भक्ति कहाय।
भक्ति निष्काम सर्वश्रेष्ठ बताय॥
भक्त भुक्ति मुक्ति को तो डाकिनी बताय।
शुद्ध भक्त चह सेव्य सुख ही सदाय॥
मोहिं वैसे प्रिय नहिं विधि शिव आय।
जैसे निष्काम भक्त प्रिय मोहिं आय॥
वैसे प्रिय रमा राम आत्मा न आय।
जैसे निष्काम भक्त प्रिय मोहिं आय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐसे भक्त पाछे पाछे चलूँ मैं सदाय।
पद रज उड़ि परे मेरे तनु आय॥
याते तुम ऊधो करो भक्ति ही सदाय।
यह ही 'कृपालु' शास्त्र वेद सार आय॥

6

(नथवारी रंगीली...)

ओरी गोरी गोरी गोरी तोरी मोरी जोरी।
तू है ब्रह्म मैं हूँ जीव यह कैसी जोरी।
तू है विज्ञ मैं हूँ अज्ञ यह कैसी जोरी।
तू तो है नियंता मैं नियम्य हूँ गोरी।
तू तो सर्वव्यापक मैं हूँ व्याप्य गोरी।
तू तो उर प्रेरक मैं हूँ प्रेर्य गोरी।
तू तो मायाधीश मैं हूँ मायाधीन गोरी।
तू तो जग स्रष्टा मैं तो हूँ सृज्य गोरी।
तू तो मेरी आत्मा है मैं हूँ देह गोरी।
तू तो शक्तिमान मैं हूँ तेरी शक्ति गोरी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

तू तो मेरा अंशी है मैं हूँ अंश गोरी।
तू तो विभु ब्रह्म मैं हूँ अणु जीव गोरी।
तू तो मेरा द्रष्टा मैं हूँ तेरी दृश्य गोरी।
तू तो मेरा शासक मैं हूँ शास्य गोरी।
तू तो मेरा स्वामी मैं हूँ तेरी दासी गोरी।
तू तो कर्मफल दे मैं करूँ कर्म गोरी।
तू तो कर्म लिखे मैं तो कर्म करूँ गोरी।
तू तो है स्वतंत्र मैं हूँ परतंत्र गोरी।
तू तो नित्य सुखी मैं हूँ अति दुखी गोरी।
तू तो स्वप्रकाश मैं प्रकाशित गोरी।
तू तो रसरूप मैं तो नीरस गोरी।
तू तो परतत्व मैं हूँ अपर गोरी।
तू तो समर्थ मैं असमर्थ गोरी।
तू है देही देह इक मैं हूँ भिन्न गोरी।
तू है आश्रय मैं हूँ आश्रित गोरी।
तू है सर्वकारण मैं हूँ कार्य गोरी।
तू है चिन्मय मैं हूँ मायिक गोरी।
तू है पर उपकारी मैं हूँ स्वारथी गोरी।
तू है दिव्य धामी मैं हूँ माया धामी गोरी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू है पूर्णकाम मैं हूँ अति कामी गोरी।
तू है प्रेमदाता मैं हूँ भिखारी गोरी।
तू है परमात्मा मैं हूँ जीव गोरी।
तू है मेरा भर्ता मैं हूँ भृत्या गोरी।
तू है माता पिता मैं हूँ पुत्री गोरी।
तू है भगवान मैं तो बिनु भग गोरी।
तू तो चाहे मोहिं मैं न चाहूँ तोहिं गोरी।
तू तो है कारो कारो मैं हूँ गोरी गोरी गोरी।
याते बने ना 'कृपालु' तोरी मोरी जोरी गोरी॥

7

(मेरे प्राणाधार हैं ...)

इष्टों में इष्ट तो है इष्ट श्यामा श्याम।
रसों में रस तो है रस श्यामा श्याम।
नामों में नाम तो हैं नाम श्यामा श्याम।
रूपों में रूप तो हैं रूप श्यामा श्याम।
धामों में धाम तो है धाम श्यामा श्याम।
गुणों में गुण तो है गुणगण श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लीलाओं में लीला लीला श्यामा श्याम।
भक्तों में भक्त तो है भक्त श्यामा श्याम।
प्रेमों में प्रेम तो है प्रेम श्यामा श्याम।
दानियों में दानी है दानी श्यामा श्याम।
तेजों में तेज तो है तेज श्यामा श्याम।
ऐश्वर्य में तो ऐश्वर्य श्यामा श्याम।
माधुर्य में तो माधुर्य श्यामा श्याम।
औदार्य में तो औदार्य श्यामा श्याम।
सौकुमार्य में तो सौकुमार्य श्यामा श्याम।
सौशील्य में तो सौशील्य श्यामा श्याम।
रासों में रास तो महारास श्यामा श्याम।
कृपाओं में है 'कृपालु' कृपा श्यामा श्याम॥

8

RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

कृष्ण भक्ति ही वेद बताय।
कृष्ण भक्ति ही लक्ष्य दिलाय।

कृष्ण भक्ति दे कृष्ण मिलाय।
भक्तिहिं भेद अनेक बताय।
वामें द्वै ही प्रमुख बताय।
इक तो साधन भक्ति कहाय।
इक तो सिद्धा भक्ति बताय।
सोई प्रेमा भक्ति कहाय।
साधन भक्ति साध्य दिलवाय।
नवधा साधन भक्ति बताय।
वामें स्मरण प्रमुख कहलाय।
मन ही बंधन मोक्ष दिलाय।
मन का कार्य स्मरण बतलाय।
याते मन ते ध्यान कराय।
कृष्ण रूप अगनित श्रुति गाय।
जोइ मन भाये रूप बनाय।
करु श्रृंगार जोइ मनभाय।
गाइय नाम जोइ मनभाय।
गाइय गुन गन जोइ मनभाय।
गाइय लीला जोइ मनभाय।
कृष्ण मिलन व्याकुलता लाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शिशु जनु क्रंदन करुण सुनाय।
भोला भाला मन बनि जाय।
भाव रहे निष्काम सदाय।
भुक्ति मुक्ति दोउ मन नहिं भाय।
माँगहु दर्शन श्याम सदाय।
जब दर्शन दे दें बलभाय।
तब वर माँगु प्रेम बलभाय।
बुधि मानत जग महँ सुख आय।
बुधि को बार बार समुझाय।
आत्मा दिव्य अंश बलभाय।
जग माया प्रपंच कहलाय।
आत्मा विषय एक बलभाय।
तनु का विषय जगत कहलाय।
आत्मा सुख जग दे न सकाय।
COPYRIGHT
याते जग ते मनहिं हटाय।
RADHA GOVIND SAMITI
कृष्ण रूप में मनहिं लगाय।
यदि जग में पुनि मन हटि आय।
तब पुनि हरि में वाय लगाय।
यह अभ्यास सतत करवाय।

यह ही साधन भक्ति कहाय।
यही भक्ति मन शुद्ध कराय।
कृष्ण स्वरूप शक्ति इक आय।
सोइ शक्ति मन दिव्य बनाय।
तब मन प्रेम पात्र बनि जाय।
तब हरि दिव्य प्रेम दिलवाय।
ह्लादिनि सार प्रेम कहलाय।
गुरु की कृपा प्रेम सोइ याय।
जीव साध्य यह रसिक बताय।
याके वश 'कृपालु' बलभाय॥

9

(नीको लागे...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तीन ही तत्व श्रुति नित्य बताय।
ब्रह्म अरु जीव, अरु माया कहाय।
तीनों तत्व अनादि बताय।
ब्रह्म शब्द के द्वै अर्थ बताय।
वृहति ब्रह्म इक अर्थ बताय।

सबसे बड़ा जो हो भाव यह आय।
दूजो अर्थ वृंहयति आय।
जो कर बड़ा भाव यह आय।
बड़ा शब्द अर्थ अनंत बताय।
ब्रह्म समान न कोउ श्रुति गाय।
कोउ नहिं बड़ा ब्रह्म ते आय।
याते ब्रह्म अनंत कहाय।
ब्रह्म अनंत शक्ति युत आय।
ब्रह्म सर्ववित वेद बताय।
जीवहिं दे सुख ब्रह्म सदाय।
याते बड़ो करे कहलाय।
श्रुति आनंदो ब्रह्म बताय।
भाव ब्रह्म आनँद पर्याय।
सत चित दोउ विशेषण आय।
सत शाश्वत सत्ता कहलाय।
चित का अर्थ ज्ञान बतलाय।
आनंद चित चेतन कहलाय।
स्व प्रकाश सो ब्रह्म कहाय।
जो सत सो चित, आनँद आय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो चित सो सत, आनँद आय।
जो आनँद सो सत चित आय।
शक्ति ब्रह्म सविशेष बनाय।
प्रमुख स्वरूप शक्ति कहलाय।
सोई ब्रह्म साकार बनाय।
मंत्र रसो वै सः श्रुति गाय।
रस स्वरूप है ब्रह्म बतलाय।
सो रस रूपहुँ द्वै बतलाय।
ब्रह्म रूप इक मधु बतलाय।
दूजो रूप भ्रमर बतलाय।
याते ब्रह्म रसिक रस आय।
ब्रह्म गुणहिं माधुर्य बताय।
ब्रह्म गुणहिं ऐश्वर्य बताय।
ब्रह्म गुणहिं सर्वज्ञ बताय।
ब्रह्म गुणहिं इक तेज बताय।
ब्रह्म भक्त वत्सल गुण भाय।
ब्रह्महिं भक्त वश्य गुण आय।
अगणित गुण गण ब्रह्म बताय।
ब्रह्म अभिन्न त्रिरूप बताय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक रूप तो ब्रह्म कहाय।
एक रूप परमात्मा भाय।
एक रूप भगवान कहाय।
ब्रह्म स्वरूप पूर्ण श्रुति गाय।
ब्रह्म शक्ति युत वेद बताय।
शक्ति विकास न्यूनतम आय।
ब्रह्म सच्चिदानंद बताय।
ब्रह्म सर्वव्यापक बतलाय।
निराकार है ब्रह्म बताय।
दूजो परमात्मा कहलाय।
यामें अधिक शक्ति प्रकटाय।
यह सविशेष ब्रह्म कहलाय।
यामें लीला नाहिं बताय।
प्रमुख रूप भगवान कहाय।
यामें सर्व शक्ति प्रकटाय।
यामें लीला परिकर भाय।
यह भगवान कृष्ण कहलाय।
यही प्रतिष्ठा ब्रह्महुँ आय।
यही ब्रह्म योनिहुँ कहलाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक रूप बहु रूप बनाय।
यदपि कृष्ण साकार सुहाय।
तदपि सर्वव्यापक भी आय।
अग जग सब जग आत्मा आय।
कृष्ण दिव्य गुण युक्त बताय।
याते कृष्ण सगुण कहलाय।
कृष्ण प्रकृति गुण रहित बताय।
याते निर्गुण कृष्ण कहाय।
कृष्ण स्वयं भगवान कहाय।
अद्वय ज्ञान तत्व सोइ आय।
कृष्ण आदि कारण कहलाय।
कृष्णहिं आश्रय तत्व कहाय।
कृष्ण नराकृति ब्रह्म बताय।
लीलाधारी कृष्ण कहाय।
कृष्ण धाम गोलोक कहाय।
जन मन मोहन कृष्ण कहाय।
निज मन मोहन कृष्ण कहाय।
कृष्ण दयामय वेद बताय।
कृष्ण भक्त वश शास्त्र बताय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म कृष्ण द्वै रूप बनाय।
एक राधा एक कृष्ण कहाय।
कृष्ण सेव्य राधा कहलाय।
राधा सेव्य कृष्ण कहलाय।
ब्रह्म द्वारिका पूर्ण कहाय।
मथुरा ब्रह्म पूर्णतर भाय।
ब्रज के ब्रह्म पूर्णतम आय।
ब्रज रस सर्वश्रेष्ठ रस आय।
मोहूँ लो 'कृपालु' अपनाय॥

10

(नीको लागे...)

ब्रह्म रूप आनँद कहाय।
दोउ शब्द पर्याय बताय।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
ब्रह्म शक्ति सब जीव कहाय।
याते जीव अंश कहलाय।
अंश लक्ष्य अंशी बतलाय।
जीव लक्ष्य आनंदहिँ आय।

ब्रह्म अभिन्न रूप द्वै आय।
निराकार इक ब्रह्म कहाय।
इक साकार ब्रह्म कहलाय।
कृष्ण ब्रह्म साकार कहाय।
उनके रूप अनंत बताय।
वे सब ही अवतार कहाय।
कृष्ण प्राप्ति ही लक्ष्य बताय।
निराकार जो ब्रह्म कहाय।
वह है निर्गुण वेद बताय।
कृपा आदि गुण नहिँ प्रकटाय।
बिनु हरि कृपा न माया जाय।
निर्गुण ब्रह्म न लक्ष्य दिलाय।
कृष्ण प्राप्ति पथ तीन बताय।
कर्म, ज्ञान अरु भक्ति कहाय।
विधि निषेध श्रुति कर्म बताय।
सोइ वर्णाश्रमधर्म कहाय।
कर्म नियम श्रुति छे बतलाय।
नेकहुँ त्रुटि यजमान नसाय।
कलि महँ कर्म अशक्य बताय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि कर्महिं फल स्वर्ग बताय।
स्वर्गहुँ माया लोक कहाय।
स्वर्ग लोक सुख अल्प बताय।
दुख परिणामी स्वर्ग कहाय।
तहँ तम युत अज्ञान बताय।
तहाँ काम क्रोधादि सताय।
तृष्णा आदि और बढ़ि जाय।
भोग योनि पुनि स्वर्ग कहाय।
याते सुर चह नर तनु पाय।
कर्म योनि नर योनि कहाय।
कछुक काल कहँ स्वर्गहिं पाय।
पुनि कूकर शूकर तनु पाय।
याते स्वर्ग निंद्य बतलाय।
घोर मूर्ख तेहि वेद बताय।
दूजो मार्ग ज्ञान कहलाय।
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
अति विरक्त अधिकारी आय।
साधन चार युक्त बनि जाय।
यह पथ औरहुँ क्लिष्ट बताय।
बड़े बड़े ज्ञानी गिरि जाय।

कलि महँ ज्ञान असंभव आय।
पुनि याते माया नहिं जाय।
जो ज्ञानी भक्तिहिं अपनाय।
सो हरि कृपा मुक्त ह्वै जाय।
किन्तु प्रेम रस सोउ न पाय।
मुक्ति पिशाचिनि रसिक बताय।
केवल भक्ति लक्ष्य बतलाय।
भक्तहिं मुक्ति आपु मिलि जाय।
प्रेमानंद सदा को पाय।
साधन सिद्धि भक्ति कहलाय।
सबै जीव अधिकारी याय।
भक्तिहिं लक्ष्य 'कृपालु' बनाय॥

11

RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

ब्रह्मा भृगु संवाद सुनाय।
ब्रह्मा पितु अरु सुत भृगु आय।

पूछ्यो भृगु ब्रह्मा ढिंग जाय।
एक प्रश्न उत्तर समुझाय।
वर माँग्यो तुमने बलभाय।
गोपी पद रज मोहिं दिलाय।
शिव शुक महाभक्त कहलाय।
उन तजि गोपिन पद रज भाय।
ब्रह्मा कह सुनु भृगु मन लाय।
ब्रह्म ज्ञान तुम कहँ भरमाय।
महिमा भक्ति न जानि सकाय।
तप चिरकाल कियो हौं जाय।
तबहुँ न गोपी पद रज पाय।
गोपिन कायव्यूह बलभाय।
ज्ञान स्वरूपा ऋचन बताय।
उनकी स्वामिनि गोपिन आय।
रहीं ऋचन निष्काम सदाय।
गोपी प्रेम सकाम बनाय।
जेहि ज्ञानी खोजत श्रुति जाय।
सोइ आपुहिं गोपिन घर जाय।
वेद स्तुति नहिं वाय सुहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गोपिन गारी अति मनभाय।
जेहि खोजत तुम ध्यान लगाय।
सोइ ब्रज गोपिन खोजत जाय।
जेहि लखि शंभु समाधि लगाय।
सोइ कर गोपिन दास्य सदाय।
वैधी भक्ति न वाय सुहाय।
गोपी अपमानहुँ मनभाय।
जासु नाम भवबंध छुड़ाय।
सोइ यशुमति ऊखल बँधि जाय।
जेहि माया सब जगहिं नचाय।
तेहि गोपिन दै छाछ नचाय।
जो नहिं सनक समाधिहुँ जाय।
तासों श्यामा पग पलुटाय।
श्याम स्वामिनी श्यामा आय।
ज्ञानिन मनन काल्पनिक आय।
कारण मन मायिक कहलाय।
भक्तन मनन दिव्य कहलाय।
पराशक्ति मन दिव्य बनाय।
ज्ञानी ब्रह्म कृपा नहिं पाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कारण ब्रह्म अगुण कहलाय।
बिना भक्ति माया नहिं जाय।
भक्तिहुँ मिले कृपा बलभाय।
याते लेहु भक्ति अपनाय।
महाभाव जो भक्ति बताय।
सर्वश्रेष्ठ सोइ भक्ति कहाय।
सोइ 'कृपालु' रति गोपिन पाय॥

12

(नीको लागे...)

भक्ति कल्प तरु सम श्रुति गाय।
भक्ति सबहिं सब फल दिलवाय।
जो चह जग सुख भक्ति दिलाय।
सात स्वर्ग सुख भक्ति दिलाय।
सिद्धि आठहूँ भक्ति दिलाय।
ऐन्द्र ब्राह्म पद भक्ति दिलाय।
पाँच मुक्तिहूँ भक्ति दिलाय।
जो नर दुर्लभ भक्ति दिलाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो अलभ्य सो भक्ति दिलाय।
मनहुँ अगोचर भक्ति दिलाय।
पंचक्लेशहूँ भक्ति नसाय।
पंचकोशहूँ भक्ति जराय।
पंच प्रपंचहुँ भक्ति मिटाय।
तीनिहुँ कर्मन भक्ति नसाय।
तीनि देह ते भक्ति छुड़ाय।
राग द्वेष को भक्ति मिटाय।
विद्या माया भक्ति भगाय।
प्रबल अविद्या भक्ति नसाय।
कर्म धर्म फल भक्ति दिलाय।
ज्ञान योग फल भक्ति दिलाय।
जपिन तपिन फल भक्ति दिलाय।
भक्ति पुत्र ही ज्ञान कहाय।
भक्ति पुत्र वैराग्य बताय।
बिनु माँ के सुत ह्वै न सकाय।
भक्ति अधीन ब्रह्म बलभाय।
डोरी सम हरि भक्ति कहाय।
सरिस पतंग ब्रह्म बलभाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्ति नटी मर्कट बलभाय।
भक्ति न देन चहत बलभाय।
भुक्ति मुक्ति दे द्रुत बलभाय।
ह्लादिनि सार भक्ति कहलाय।
भक्तिहिं कोटि अनेक बताय।
प्रेम स्नेह अरु मान कहाय।
प्रणय राग अनुराग कहाय।
एक कोटि कहँ भाव बताय।
अंतिम महाभाव कहलाय।
महाभाव रस गोपिन पाय।
महाभाव पायेहु बलभाय।
भक्ति मुकुट मणि मादन आय।
मादन रति राधा ही पाय।
भक्ति तत्व परतत्व कहाय।
तेहि बिनु धर्म अधर्म कहाय।
ब्रह्म ज्ञान अज्ञान कहाय।
अष्ट योगहूँ रोग कहाय।
सब साधन फल भक्ति बताय।
बिनु हरि भक्ति न माया जाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बिनु हरि भक्ति न कोउ सुख पाय।
करहु 'कृपालु' भक्ति बलभाय॥

13

(नीको लागे...)

रूप रसो वै सः बलभाय।
भाव रूप रस कृष्ण कहाय।
रस भूमा अनंत श्रुति गाय।
रस नित नव नव होत सदाय।
रस नित क्षण क्षण बाढ़त जाय।
रस जो पाय सनातन पाय।
इक रस ब्रह्मानंद कहाय।
यह रस निराकार बलभाय।
यह रस प्रेम हीन कहलाय।
यह रस द्वैत रहित बलभाय।
यह रस बस कैवल्य दिलाय।
इक रस बैकुण्ठहुँ को आय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यह रस नारायण को आय।
यामें रूप चतुर्भुज भाय।
लीला परिकर रहित बताय।
शांत भाव युत भक्तन पाय।
निराकार ते सरस बताय।
यामें नाम रूप गुण भाय।
एक रस द्वारवती को आय।
यह रस द्विभुज कृष्ण को आय।
यह रस वैधी भक्तन पाय।
बैकुंठहुँ ते सरस बताय।
यामें लीला परिकर भाय।
इक मथुरा को रस बतलाय।
यह रस देवकि सुत को आय।
यामें लीला परिकर आय।
द्वारवती ते श्रेष्ठ बताय।
इक रस वृंदावन को आय।
यामें नहिं ऐश्वर्य बताय।
एकहिं रस माधुर्य बताय।
यह रस सर्वश्रेष्ठ कहलाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यह रस ब्रज रस रसिक बताय।
चार भाव या रस में आय।
एक भाव तो दास्य कहाय।
वाते श्रेष्ठ सख्य कहलाय।
वाते वर वात्सल्य बताय।
सर्वश्रेष्ठ माधुर्य बताय।
तीन भेद माधुर्य बताय।
इक माधुर्य सकाम बताय।
उदाहरण कुब्जादि बताय।
यह रति साधारणी कहाय।
इक माधुर्य मिश्र बतलाय।
निज सुख पिय सुख मिश्र बताय।
समंजसा रति यह कहलाय।
उदाहरण महिषी समुदाय।
इक माधुर्य अकाम बताय।
याय समर्था रति बतलाय।
यह रति पिय सुख हित ही भाय।
याको गोपी प्रेम बताय।
सर्वश्रेष्ठ यह प्रेम कहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सर्वोपरि रस रास बताय।
गोपी प्रेम युक्त नर पाय।
सब ते दुर्लभ रास बताय।
यह रस कमलाहूँ नहिं पाय।
रसिक 'कृपालु' कृपा ते पाय॥

14

(नीको लागे...)
वेद तत्व परब्रह्म बताय।
ब्रह्म अभिन्न रूप द्वै आय।
एक रूप साकार कहाय।
निराकार इक रूप बताय।
कृष्ण रूप साकार बताय।
निराकार तो ब्रह्म बताय।
कृष्ण उपासक भक्त कहाय।
ब्रह्म उपासक ज्ञानी आय।
जीव चराचर जेतिक आय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भक्तिहिं अधिकारी बतलाय।
साधन चार युक्त जो आय।
ज्ञानहिं अधिकारी बतलाय।
भाव प्रथम मन शुद्ध कराय।
कृष्ण भक्ति मन शुद्ध कराय।
भक्ति मार्ग निष्कंटक आय।
आँख मूँदि पथ भाजत जाय।
वाको साथ देत बलभाय।
याते पतन न होने पाय।
यह प्रण गीता माहिँ बताय।
ज्ञान पथिक निज बल ते जाय।
याते बार बार गिरि जाय।
ब्रह्म ज्ञान ज्ञानी नहिं पाय।
मोक्ष लाभ ज्ञानी नहिं पाय।
कारण माया वाय न जाय।
द्वै माया का रूप बताय।
विद्या तथा अविद्या आय।
सत्व गुणी विद्या कहलाय।
रज तम गुणी अविद्या आय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ज्ञानिहुँ की विद्या न नसाय।
बिनु हरि भक्ति न विद्या जाय।
ज्ञानिहुँ भक्ति अपेक्षा आय।
निर्गुण ब्रह्म वेद बतलाय।
वाते ज्ञानी कृपा न पाय।
कृपा हेतु भक्तिहिं अपनाय।
तब हरि कृपा मुक्ति पद पाय।
मुक्तहुँ प्रेमानंद न पाय।
प्रेमानंद हेतु ललचाय।
कोटिन मुक्तन कोउ इक पाय।
भक्ति अधीन ब्रह्म बलभाय।
ब्रह्म अधीन मोक्ष कहलाय।
सोइ लक्ष्य ज्ञानिन कहलाय।
भक्त न चाहत मुक्ति बलाय।
मुक्ति पिशाचिनि भक्त बताय।
ज्ञान व्यर्थ बिनु भक्ति सदाय।
भक्ति रेवैनं श्रुति बतलाय।
भाव भक्ति ही हरि मिलवाय।
करहु 'कृपालु' भक्ति बलभाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

15

(नीको लागे...)

वेदन तीन तत्व बतलाय।
ब्रह्म जीव माया कहलाय।
तीनहुँ तत्व अनादि बताय।
ब्रह्म शक्ति श्रुति तीन बताय।
परा स्वरूप शक्ति कहलाय।
अपरा जीव शक्ति बतलाय।
जड़ शक्तिहिं माया कहलाय।
जीव शक्ति चेतन बतलाय।
जीव अर्थ द्वै बुध बतलाय।
जो रह चेतन स्वयं सदाय।
जो तनु को चेतन करवाय।
COPYRIGHT
जीव परा ते पृथक बताय।
RADHA GOVIND SAMITI
जीव पृथक माया ते आय।
याते जीव तटस्थ कहाय।
ब्रह्म कृष्ण रवि सम कहलाय।
सूर्य किरन सम जीव बताय।

मायाधीश ब्रह्म कहलाय।
मायाधीन जीव श्रुति गाय।
ब्रह्म अंश नहिं जीव कहाय।
ब्रह्म अखंड एक कहलाय।
उसका खंड असंभव आय।
माया शक्तिहुँ जड़ बतलाय।
वाको अंशहुँ जीव न आय।
परा अंश भी जीव न आय।
परा शक्ति तो वाय बताय।
जासु ब्रह्म स्रष्टा कहलाय।
जासु नियामक ब्रह्म कहाय।
जासु ब्रह्म व्यापक कहलाय।
यह तीनहुँ गुण जीव न पाय।
ब्रह्म अभिन्न जीव नहिं आय।
मायाधीन जीव बतलाय।
परा जीव रह बिच बलभाय।
जीव परा का गुण नहिं पाय।
कृष्ण अंश भी द्वै बतलाय।
स्वांश विभिन्नांशहिं बुध गाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

स्वांश कृष्ण अवतार कहाय।
स्वांश नियंता परा बताय।
विभिन्नांश जीवहुँ द्वै आय।
इक तो नित्य मुक्त कहलाय।
इक अनादि मायिक श्रुति गाय।
जीव शक्ति युत कृष्ण कहाय।
वाको अंश जीव बतलाय।
जीव नियामक ब्रह्म बताय।
जीव आयतन अणु श्रुति गाय।
गमनागमन जीव कहँ आय।
उत्क्रांतिहुँ जीव न बतलाय।
याते जीव न विभु कहलाय।
ये वै के च मंत्र बतलाय।
तनु तजि चंद्र लोक सब जाय।
तस्माल्लोकात् मंत्र बताय।
जीव जगत में पुनि पुनि आय।
स यदा अस्मात् मंत्र बताय।
उत्क्रांतिहुँ सब जीव न आय।
कर्महिं शक्ति देय बलभाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्महिं जीव स्वतंत्र बताय।
फल भोगहिं परतंत्र बताय।
जीव ब्रह्म दोउ चित् श्रुति गाय।
जीव ब्रह्म दोउ नित्य बताय।
याते दोउ अभिन्न कहाय।
विभु चित् ब्रह्म वेद बतलाय।
अणु चित जीव भेद यह आय।
सर्वशक्ति युत ब्रह्म कहाय।
अल्प शक्ति युत जीव कहाय।
ब्रह्म कृष्ण सर्वज्ञ कहाय।
जीव सबहिं अल्पज्ञ बताय।
ब्रह्म नियामक वेद बताय।
जीव नियम्य भेद बतलाय।
मायाधीश ब्रह्म श्रुति गाय।
मायाधीन जीव बतलाय।
कृष्ण दास हैं जीव सदाय।
जीव वास सब हृदय बताय।
जीव व्याप्त पूरे तनु आय।
मुक्ता अपि यह मंत्र बताय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मुक्त जीव भी अणु श्रुति गाय।
मुक्त जीव धरि तनु जग आय।
तनु धरि कृष्ण भक्ति रस पाय।
शंकर का भी भाष्य बताय।
जीवहिं ज्ञाता वेद बताय।
जीवहिं कर्ता वेद बताय।
जीवहिं भोक्ता वेद बताय।
जीवहिं अणु स्वातंत्र्य बताय।
ज्ञानाश्रय सब जीव कहाय।
जीव ज्ञान गुण युक्त बताय।
जीव अतीत प्रकृति बतलाय।
निर्विकार है जीव सदाय।
अव्यय जीव अनंत बताय।
जीव अदाह्य अशोष्य बताय।
जीव सदा अच्छेद्य बताय।
जीव सदा अक्लेद्य बताय।
जीव 'कृपालु' शरण बलभाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

16

(हैं बाँको सुन्दर...)

सब शास्त्र वेद बतलाय, है लक्ष्य भक्ति बलभाय।
यह साधन साध्य बताय, अधिकारी हैं सब याय॥
जो सदाचार युत आय, सोउ करत भक्ति बलभाय।
जो दुराचार युत आय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय॥
जो वैरागी कहलाय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय।
जो जग रागी जन आय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय॥
जो ज्ञानी जन कहलाय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय।
जो अज्ञानी कहलाय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय॥
जो जन मुमुक्षु कहलाय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय।
जो माया मुक्त कहाय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय॥
जो साधक जन कहलाय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय।
जो पूर्ण सिद्ध कहलाय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय॥
जो पार्षद जन कहलाय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय।
जो नित्य पार्षद आय, सोउ कर हरि भक्ति सदाय॥
सर्वत्र भक्ति बलभाय, सब लोकन भक्ति बताय।
सब इंद्रिन भक्ति कराय, मन ते भी भक्ति कराय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब द्रव्यन भक्ति बताय, सब अर्पित करु बलभाय।
जग जेतिक क्रिया बताय, सब में हरि भक्ति सुहाय॥
जेतिक नर कार्य कराय, सबमें हरि भक्ति बताय।
जेतिक कामना बताय, सबमें हरि भक्ति सुहाय॥
जो फल कामना बताय, वामें भी भक्ति सुहाय।
अभिधेय भक्ति बतलाय, करु भक्ति 'कृपालु' सदाय॥

17

(नीको लागे...)

साधन एक भक्ति श्रुति गाय।
जाको लक्षण सुनु मन लाय।
भक्ति कामना हीन बताय।
द्वै कामना प्रमुख बतलाय।
एक कामना भुक्ति कहाय।
एक कामना मुक्ति बताय।
भुक्ति कामना मायिक आय।
मुक्ति कामना दिव्य बताय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्मलोक लौं जो सुख आय।
सो सबरोइ सुख भुक्ति कहाय।
यह सुख अल्प अनित्य बताय।
यह सब दुख परिणामी आय।
पुनि पुनि जन्म मरण करवाय।
लख चौरासी योनि घुमाय।
महामूढ़ येहि वेद बताय।
याते भुक्ति त्याज्य बतलाय।
मुक्ति भेद तो पाँच बताय।
एक मुक्ति सायुज्य कहाय।
यही मुक्ति कैवल्य कहाय।
कोउ मुक्ति एकत्व बताय।
यह ज्ञानिन की मुक्ति कहाय।
जीव ब्रह्म में घुल मिलि जाय।
प्रेमानंद बिन्दु नहिं पाय।
याते यह भी त्याज्य बताय।
भुक्तिहुँ ते यह निंद्य बताय।
चार मुक्ति भक्तन की आय।
एक मुक्ति तो सार्ष्टि कहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक मुक्ति सालोक्य बताय।
एक मुक्ति सारूप्य कहाय।
एक मुक्ति सामीप्य कहाय।
चारहुँ प्रेम सुधा रस पाय।
किंतु सकाम भक्त कहलाय।
जो निष्काम भक्त कहलाय।
उन मन चारिहुँ मुक्ति न भाय।
शुद्ध भक्त तो वाय बताय।
जो पिय सुख ही चहत सदाय।
निज सुख गंध न सपनेहुँ आय।
भक्ति अनावृत रसिक बताय।
एक आवरण कर्म कहाय।
एक आवरण ज्ञान कहाय।
एक आवरण योग कहाय।
भक्ति सदा निरपेक्ष बताय।
भक्तिहिं चार भाव बतलाय।
एक भाव तो दास्य कहाय।
वाते श्रेष्ठ सख्य कहलाय।
सख्य श्रेष्ठ वात्सल्य बताय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सर्वश्रेष्ठ माधुर्य बताय।
यामें चारहुँ भाव समाय।
साधन नवधा भक्ति बताय।
स्मरण भक्ति तहँ प्रमुख बताय।
अन्य भक्ति सहयोगिनि आय।
साधन ही मन शुद्ध कराय।
गुरु की कृपा प्रेम तब पाय।
ह्लादिनि सार प्रेम कहलाय।
प्रेम जीवन का साध्य बताय।
प्रेम अधीन ब्रह्म बलभाय।
करहु 'कृपालु' भक्ति मन लाय॥

18

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

कब देखूँ नैनन छवि घनश्याम।
कब सुनूँ कानन मृदु बैन श्याम।
कब लउँ रस अधरामृत श्याम।

कब करूँ आलिंगन तनु श्याम।
कब सूँघूँ दिव्य तनु गंध श्याम।
कब ध्यावूँ दिव्य मन दिव्य श्याम।
कब चापूँ कर चरनन श्याम।
कब नित्य वास करूँ धाम श्याम।
कब सेवा करूँ अष्टयाम श्याम।
कब देखूँ यशुमति गोद लिये श्याम।
कब देखूँ मैया गोद पिये दूध श्याम।
कब देखूँ बाबा गोद छी छी करें श्याम।
कब देखूँ पग अँगुठा पियें श्याम।
कब देखूँ सोये सोये रोयेँ आपु श्याम।
कब देखूँ सोये सोये हँसें आपु श्याम।
कब देखूँ घुटुवन बल चलें श्याम।
कब देखूँ चुपके ते माटी खायेँ श्याम।
कब देखूँ चलनो सिखावे माय श्याम।
कब देखूँ लटपटात चलें श्याम।
कब देखूँ चलत चलत गिरें श्याम।
कब देखूँ मैया ते रूठें जब श्याम।
कब देखूँ मैया मनावे जब श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कब देखूँ गोद हित झगरत श्याम।
कब देखूँ सोवत राधे कह श्याम।
कब देखूँ बिनु बैन गावें कछु श्याम।
कब देखूँ तुतुरात बोलत श्याम।
कब देखूँ नंगे पुंगे नाचत श्याम।
कब देखूँ धूरि धूसरित श्याम।
कब देखूँ मारे गुलचा सखि श्याम।
कब देखूँ चंदा माँगे लोटत श्याम।
कब देखूँ नंगे पाम गो चारे श्याम।
कब देखूँ मुँह लटकाये रोये श्याम।
कब देखूँ द्वै दाँत किलकनि श्याम।
कब देखूँ बछरन बतरात श्याम।
कब देखूँ चाटत धेनु तनु श्याम।
कब देखूँ बछरन चूमत श्याम।
कब देखूँ सखन जितावें खेल श्याम।
कब देखूँ सखन रुवावें ब्रह्म श्याम।
कब देखूँ सखन चिढ़ावत श्याम।
कब देखूँ ग्वाल कह परो पायो श्याम।
कब देखूँ नंद चले घोड़ा बनि श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कब देखूँ संग संग खेलें राम श्याम।
कब देखूँ खेल महँ लरें राम श्याम।
कब देखूँ पकरत राम कान श्याम।
कब देखूँ मैया के पग सिर श्याम।
कब देखूँ नंद की खड़ाऊँ सिर श्याम।
कब देखूँ अँगुठा दिखावें ग्वाल श्याम।
कब देखूँ नाचत संग राम श्याम।
कब देखूँ माखन चोरत श्याम।
कब देखूँ चोरी करि भाजत श्याम।
कब देखूँ ऊखल बँधे ब्रह्म श्याम।
कब देखूँ ग्वाल घोड़ा बने भजे श्याम।
कब देखूँ छाछ दै नचावें सखि श्याम।
कब देखूँ मुख टीका गोबर श्याम।
कब देखूँ जोरी दोउ श्यामा श्याम।
कब देखूँ दिव्य रास सेवा कुंज श्याम।
कब देखूँ कुंज कुंज मंजु केलि श्याम।
कब देखूँ श्यामा जू के पग चापैं श्याम।
कब देखूँ श्यामा को मनावत श्याम।
कब देखूँ श्यामा डर काँपत श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कब देखूँ सांवरि सखि बने श्याम।
कब देखूँ श्यामा संग झूला झूलें श्याम।
कब देखूँ सखिन झुलावें श्यामा श्याम।
कब देखूँ यमुना में करें केलि श्याम।
कब देखूँ सखिन रिझावत श्याम।
कब देखूँ मो ढिंग आवत श्याम।
कब देखूँ मंद मंद मुसकात श्याम।
कब देखूँ चंचल चितवनि श्याम।
कब देखूँ अति मतवाली चाल श्याम।
कब देखूँ ललित त्रिभंगी श्याम।
कब देखूँ 'तू मेरी' जब कह श्याम।
कब देखूँ मारे मोहिं नैन बान श्याम।
कब देखूँ उरझाने श्यामा श्याम।
कब देखूँ नटखट नट वेष श्याम।
कब देखूँ हौं 'कृपालु' छेड़त श्याम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

19

(हैं बाँको सुन्दर...)

तुम दीनन को रखवार, हम दीनन को सरदार।
पुनि काहे करत अबार, सुन लो मम नंदकुमार॥
तुम पतितन सों कर प्यार, हौं पतितन को सरदार।
पुनि काहे मोहिं बिसार, सुन लो मम नंदकुमार॥
तुम जग के पालन हार, हौं हूँ रह तव संसार।
टुक हमरिहुँ ओर निहार, सुन लो मम नंदकुमार॥
तव माया अपरंपार, हारे हरि हर सरकार।
हौं तो लघु अंश तिहार, सुन लो मम नंदकुमार॥
तुम मम पितु वेद पुकार, सुत बूड़त सिंधु अपार।
सुत को बचाउ सरकार, सुन लो मम नंदकुमार॥
तुम माया गुन गोपार, लीला तव अपरंपार।
हम शिशु नवजात तिहार, सुन लो मम नंदकुमार॥
पुनि पुनि लिय तुम अवतार, किय लीला नर अनुहार।
मोहे ब्रह्मादि निहार, सुन लो मम नंदकुमार॥
जब कृपा करहु सरकार, तब कोउ तोहिं जान निहार।
तब माने तब हो प्यार, सुन लो मम नंदकुमार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तव माया शक्ति अपार, वाने किय बंटाढार।
याते हौं तोहिँ बिसार, सुन लो मम नंदकुमार॥
श्रुति बारंबार पुकार, तेरो इक नंदकुमार।
मानत नहिं मन हठ धार, सुन लो 'कृपालु' सरकार॥

20

(नीको लागे...)
तजु मनमानी भजु नँदनंदन।
सब जीवन जीवन नँदनंदन।
सब जीवन अंशी नँदनंदन।
सब उर नित रह सोइ नँदनंदन।
तव स्वामी भी सोइ नँदनंदन।
तव नित्य सखा सोइ नँदनंदन।
तव सुत है सोइ नँदनंदन।
तव प्रियतम भी सोइ नँदनंदन।
तव सब कुछ हैं सोइ नँदनंदन।
तव सँग नित रह सोइ नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग महँ व्यापक सोइ नँदनंदन।
कर्मन फल दे सोइ नँदनंदन।
तोहिँ दिय नर तनु सोइ नँदनंदन।
हैं कृपा सिन्धु सोइ नँदनंदन।
हैं प्रेम सिन्धु सोइ नँदनंदन।
हैं रूप सिन्धु सोइ नँदनंदन।
हैं ब्रज रस निधि सोइ नँदनंदन।
तेरे रक्षक सोइ नँदनंदन।
तेरे पालक सोइ नँदनंदन।
हैं दीनबन्धु सोइ नँदनंदन।
बिनु हेतु सनेही नँदनंदन।
पतितन अपनावत नँदनंदन।
अधमन उर लावत नँदनंदन।
रसना ते रटु नित नँदनंदन।
गावहु नित गुनगन नँदनंदन।
गावहु नित लीला नँदनंदन।
कानन सुनु लीला नँदनंदन।
कानन सुनु गुनगन नँदनंदन।
पग चलु लीला थल नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन ते करु चिंतन नँदनंदन।
मन ते लखु सब महँ नँदनंदन।
मन ते लखु जग महँ नँदनंदन।
मन ते करु सेवा नँदनंदन।
मन ते करु पूजा नँदनंदन।
मन ते परसहु तन नँदनंदन।
मन ते रिझवहु नित नँदनंदन।
मन ते सिंगार करु नँदनंदन।
मन ते बनु प्यारी नँदनंदन।
मन ते मनाउ नित नँदनंदन।
मन ते नहलावहु नँदनंदन।
मन ते खिलाउ नित नँदनंदन।
मन ते पग चापहु नँदनंदन।
मन ते लगाउ उर नँदनंदन।
मन ते माँगहु रति नँदनंदन।
मन ते माँगहु सुख नँदनंदन।
मन तव 'कृपालु' गति नँदनंदन॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोबिंद गोबिंद राधे। राधे राधे गोबिंद गोबिंद राधे॥

21

(हैं बाँको सुन्दर...)

तुम ही मम नंदकुमार, थे हो रहिहौ सरकार।
तुम ही मम साँचो यार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥
तू अंशी नंदकुमार, मैं तो हूँ अंश तिहार।
यह नात सोचु सरकार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥
तू शक्तिमान सरकार, मैं तो हूँ शक्ति तिहार।
तोसों ही नात हमार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥
तू आत्मा नंदकुमार, मैं तो हूँ देह तिहार।
यह कह तव वेद पुकार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥
तू ही पितु नंदकुमार, तू ही माता रिझवार।
तू ही गति मति सरकार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥
तू स्वामी नंदकुमार, तू ही है सखा हमार।
तू ही सुत पति सरकार, टुक हमरिहुँ ओर निहार।
तू दीनन को रखवार, तू पतितन को पतवार।
तू अधम उधारन हार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥
तू मन बुधि पर सरकार, कोउ पायो नहिं तव पार।
कह नेति नेति श्रुति चार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तव माया अपरंपार, गये विधि हरि हरहूँ हार।
हम तो अति लघु सरकार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥
गावूँ नित नाम तिहार, ध्यावूँ नित तोहिं सरकार।
पावूँ रति तव रिझवार, टुक हमरिहुँ ओर निहार॥
तव जन अनंत सरकार, हमरे इक तुम रिझवार।
दे दो मोहिं अपनो प्यार, टुक ओर 'कृपालु' निहार॥

22

(हैं बाँको सुन्दर...)

तुम ही मम नंदकुमार, तुम स्वामि सखा सुत यार।
तुम ही पतितन रखवार, हौं शरण शरण सरकार॥
तुम मम गति नंदकुमार, तुम ही मम मति रिझवार।
तुम ही अवलंब हमार, हौं शरण शरण सरकार॥
तुम ही हो मम भरतार, तुम ही हो हितू हमार।
तुम ही हो प्राणाधार, हौं शरण शरण सरकार॥
तुम प्रेरक नंदकुमार, तुम मम रक्षक रिझवार।
तुम ही सर्वस्व हमार, हौं शरण शरण सरकार॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

तुम ही पितु नंदकुमार, तुम ही माता रिझवार।
तुम सों सब नात हमार, हौं शरण शरण सरकार॥
तुम ही दीनन रखवार, तुम ही पतितन पतवार।
तुम अधम उधारन हार, हौं शरण शरण सरकार॥
तुम ही स्रष्टा संसार, तुम ही पालक भरतार।
तुम ही कर लय करतार, हौं शरण शरण सरकार॥
तुम शरणागत रखवार, तुम करुणा को भंडार।
तुम जन रंजन रिझवार, हौं शरण शरण सरकार॥
तुम भक्त वश्य रिझवार, तुम को प्रिय है प्रिय प्यार।
तुम नाचत प्रिय करतार, हौं शरण शरण सरकार॥
तुम सम तुम नंदकुमार, तुम पर कामहुँ बलिहार।
तुम सों विधि हरि हर हार, हौं शरण 'कृपालु' तिहार॥

23

RADHA GOVIND SAMITI

(नथवारी रंगीली...)

तू भी मेरा यह माना मैंने बार बार।
तू ही मेरा यह माना नहिं एक बार।

तुझसे भी किया प्यार जग से भी किया प्यार।
तू तो कह 'भी' से नहिं मोय 'ही' से ही है प्यार।
तेरा भाव यह इक मुझसे ही करु प्यार।
जग तो है माता पिता भ्राता सुत भरतार।
कोउ नहिं कह करु इक मुझसे ही प्यार।
माता पिता कह करु सुत पति से भी प्यार।
जग में तो सुत पितु नहिं बने भरतार।
ऐसा कहुँ हो तो वाय सब कह दुराचार।
तू भी दण्ड दे के भेजे वाय नरक मझार।
तू तो कह मैं ही स्वामी सखा सुत भरतार।
तू ही माता तू ही पिता कह तेरी श्रुति चार।
हम कैसे मानें पितु सुत कहँ भरतार।
पुनि एक बात और सुनु नंदकुमार।
तू तो सब में ही रह कह वेद पुकार।
पुनि उन ते ही प्यार क्यों न माने निज प्यार।
तू तो कह जग वालों का है प्यार अन्य प्यार।
तेरे सिवा और कछु नहिं कह श्रुति चार।
लोग मूर्ति पूजा करें पावें तोहिं रिझवार।
मूर्ति से ही तू प्रकट हो के मिले रिझवार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि माता पिता आदि प्यार कैसे अन्य प्यार।
तू तो जड़ में भी चेतन में भी रह यार।
पुनि कैसे कह जग प्यार है मिथ्या प्यार।
हरि कह सुनु तत्व ज्ञान सुनि उर धार।
मूर्ति भक्त नहिं पावे कबहूँ मम प्यार।
मूर्ति मधि मोय मानि मोते ही जो करे प्यार।
बस सोइ पावे निज भाव फल मम प्यार।
प्रेमियों के प्यार के हैं बस चार प्रकार।
एक वे हैं जो मोहिं ब्रह्म मानि करें प्यार।
एक वे जो बिनु जाने करें मो ही ते प्यार।
वे तो माने मोय स्वामी सखा सुत भरतार।
एक वे जो जग व्याप्त मोते ही करें प्यार।
जैसे मूर्ति में मोय मानि करि मोय प्यार।
उपर्युक्त तीनों को ही मिले मम प्यार।
एक वे जो जग को ही जग मानि करें प्यार।
वे न मोते करें प्यार करें माया ते ही प्यार।
याते फल पावें मायिक दुख संसार।
भाव यह अग जग में जो हरि भाव धार।
पावे हरि का ही फल करें हरि सों ही प्यार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

या तो हरि से ही करु जग भाव से ही प्यार।
हरि सत्य वस्तु याते फल पावे सत्य प्यार।
सारा जग तो है नश्वर माया का विकार।
याते जग प्यार फल नश्वर उर धार।
हरि अरु हरिजन सों ही करु नित प्यार।
सोइ है अनन्य भक्त तू 'कृपालु' उर धार॥

24

(हैं बाँको सुन्दर...)

तू ही स्वामी बलभाय, है सखा तु ही बलभाय।
तू ही है सुत बलभाय, तू ही प्रियतम बलभाय।
तू ही माता बलभाय, है पिता तु ही बलभाय।
भ्राता तू ही बलभाय, त्राता तू ही बलभाय।
तू ही अंशी बलभाय, तू ही मम गति बलभाय।
तू ही मम मति बलभाय, तू ही मम रति बलभाय।
तू ही भर्ता बलभाय, तू ही धर्ता बलभाय।
तू ही कर्ता बलभाय, तू ही हर्ता बलभाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू ही साक्षी बलभाय, तू ही है प्रभु बलभाय।
है सुहृत तु ही बलभाय, तू ही निवास बलभाय।
तू ही आत्मा बलभाय, तू ही पालक बलभाय।
तू ही दाता बलभाय, तू ही प्रेरक बलभाय।
तू ही मम धन बलभाय, तू ही मम बल बलभाय।
तू ही जीवन बलभाय, तू ही मम इक बलभाय।
तू ही रह उर बलभाय, तू ही दे फल बलभाय।
है तु ही हितू बलभाय, तू ही सब कछु बलभाय।
तू ही आश्रय बलभाय, तू ही संबल बलभाय।
आधार तु ही बलभाय, तू ही 'कृपालु' बलभाय॥

25

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू ही तू ही तू ही तो है मेरा नँदनंदन,
मैं भी मैं भी मैं भी तो हूँ तेरा नँदनंदन।
तू ही मेरा तू ही मेरा स्वामी नँदनंदन,
तू ही मेरा तू ही मेरा सखा नँदनंदन।
तू ही मेरा तू ही मेरा सुत नँदनंदन,

तू ही मेरा तू ही मेरा पिय नँदनंदन।
तू ही मेरी गति मति रति नँदनंदन,
तेरे सिवा मेरा कोई नहिँ नँदनंदन।
तू ही मम माता पिता भ्राता नँदनंदन,
तेरा ही कहा हुआ है यह नँदनंदन।
मेरा सब कुछ ही है तेरा नँदनंदन,
तेरा सब कुछ भी है मेरा नँदनंदन।
माना मैं हूँ अति ही पतित नँदनंदन,
तू भी तो पतित पावन नँदनंदन।
पतितन सीने से लगावे नँदनंदन,
याही ते मैं आया द्वार तेरे नँदनंदन।
माना मैं हूँ अति दीन हीन नँदनंदन,
तू भी तो है दीनानाथ मम नँदनंदन।
माना नाना योनि में मैं घूमा नँदनंदन,
तू भी मेरे साथ-साथ घूमा नँदनंदन।
कृपा बिनु कारण करे नँदनंदन,
एइ सुनि आया हूँ शरण नँदनंदन।
माना मैं सदा से हूँ विमुख नँदनंदन,
किंतु हूँ तो तेरा ही मैं अंश नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माना मैंने तुझको भुलाया नँदनंदन,
यामें तो है दोषी तेरी माया नँदनंदन।
तेरा मैं बनूँ ना बनूँ, मेरे नँदनंदन,
तू तो मेरा बन प्राणधन नँदनंदन।
माना मैंने जाना नहिं तोहिं नँदनंदन,
तेरी कृपा बिनु जाना कौन नँदनंदन।
माना मैंने माया को न जीता नँदनंदन,
तेरी कृपा बिनु कौन जीता नँदनंदन।
माना मैंने भक्ति किया नहिं नँदनंदन,
तू तो बिनु हेतु सनेही नँदनंदन।
माना मैंने किया मनमाना नँदनंदन,
मन ते तो हारे ज्ञानी ध्यानी नँदनंदन।
माना मैंने किया सदा पाप नँदनंदन,
मेरे पाछे माया क्यों लगाया नँदनंदन।
माना मोह निशा में मैं सोया नँदनंदन,
तू तो उर था न क्यों जगाया नँदनंदन।
माना मैं हूँ बुरे से भी बुरा नँदनंदन,
हूँ तो तेरा लाज जाय तेरी नँदनंदन।
माना मन ते हूँ मैं तो हारा नँदनंदन,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू है कैसा मन मोहन नँदनंदन।
माना मेरा मन है कुटिल नँदनंदन,
कुटिल था पूतना मनहुँ नँदनंदन।
तू तो बिनु सेवा के ही द्रवै नँदनंदन,
प्रणत ही पावे कृपा काहे नँदनंदन।
माना मैंने जग को ही भजा नँदनंदन,
तू भी तो है जग व्यापक नँदनंदन।
माना मैं शरण नहिँ आया नँदनंदन,
तू ही तो था उर प्रेरक नँदनंदन।
माना मैंने पिछला बिगारा नँदनंदन,
अगला तो अब तू बना दे नँदनंदन।
माना मैं ना क्षमा अधिकारी नँदनंदन,
तू ही बता क्षमा कासों माँगूं नँदनंदन।
माना मैं हूँ सब विधि दोषी नँदनंदन,
तू तो है 'कृपालु' कृपा करु नँदनंदन।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

26

(नीको लागे...)

तेरे अगनित गुन गन नँदनंदन।
तेरे अगनित नामहुँ नँदनंदन।
तेरे अगनित रूपहुँ नँदनंदन।
तेरे अगनित धामहुँ नँदनंदन।
तेरे अगनित जनहूँ नँदनंदन।
तेरी अगनित लीला नँदनंदन।
तेरे अगनित जग हैं नँदनंदन।
तू ही जग को प्रकट करे नँदनंदन।
तू ही जग पालन करे नँदनंदन।
तू ही जग का प्रलय करे नँदनंदन।
तू ही सब उर पुर बसे नँदनंदन।
तू ही जीवन जीवन नँदनंदन।
तू है जड़ जग व्यापक नँदनंदन।
तू है चेतन व्यापक नँदनंदन।
तू है नाम में बैठा नँदनंदन।
तू है धाम में बैठा नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू है जन में भी बैठा नँदनंदन।
तू तो सर्व द्रष्टा है नँदनंदन।
तू तो अंतर्यामी नँदनंदन।
तू तो सब उर प्रेरक नँदनंदन।
तू तो जग का शासक नँदनंदन।
तू तो सतघन चितघन नँदनंदन।
तू तो है आनँदघन नँदनंदन।
तू है रक्षक दीनन नँदनंदन।
तू है पतितन पावन नँदनंदन।
तू अधम उधारन नँदनंदन।
तू है भाजे सुनि क्रंदन नँदनंदन।
तू है त्रिभुवन मोहन नँदनंदन।
तू है मदनहुँ मोहन नँदनंदन।
तू है ब्रजमोहन नँदनंदन।
COPYRIGHT
तू है ज्ञानिन मोहन नँदनंदन।
RADHA GOVIND SAMITI
तू है योगिन मोहन नँदनंदन।
ब्रज गोपिन मोहन नँदनंदन।
ब्रज गोपन मोहन नँदनंदन।
ब्रज गायन मोहन नँदनंदन।

ब्रज पक्षिन मोहन नँदनंदन।
ब्रज वृक्षन मोहन नँदनंदन।
ब्रज अग जग मोहन नँदनंदन।
तेरा तन आनंदघन नँदनंदन।
तू है मेरा 'कृपालु' पिय नँदनंदन॥

27

(तू ही तू ही..)
धनि धनि प्रेम धनि धनि नँदनंदन,
करु वंदन प्रेम अरु नँदनंदन।
होड़ जब होय प्रेम अरु नँदनंदन,
जीते नित प्रेम हारे नित नँदनंदन।
श्रुति कह जग के पिता हैं नँदनंदन,
प्रेम ने बनाया वाय ब्रज नँदनंदन।
श्रुति कह भूख प्यास नहिं नँदनंदन,
प्रेम ने बनाया भूखा प्यासा नँदनंदन।
जाको नाम जपि जन काटे भव बंधन,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सोइ ऊखल बँधा माँगे मुक्ति गोपी जन।
नाचें जाकी माया वश बड़े बड़े ज्ञानी जन,
सोइ गोपी छाछ पर नाचे नँदनंदन।
श्रुति करें अस्तुति जेहि नँदनंदन,
सोइ तुतुराय बतराय गाय बछरन।
जो न जाय शंभुहूँ समाधि नँदनंदन,
सोइ गारी खाने जाय घर घर गोपी जन।
जाको कह वेद है अजित नँदनंदन,
सोइ पायो रणछोर नाम नँदनंदन।
श्रुति कह आनँदकंद नँदनंदन,
सोइ माय गोद हित रोये नँदनंदन।
श्रुति कह डर डरे डर नँदनंदन,
सोइ माय साँटी लखि डरे नँदनंदन।
श्रुति कह नेति नेति नेति नँदनंदन,
वाको गोपी कह चौर जार नँदनंदन।
श्रुति कह जग वंदन नँदनंदन,
सोइ करे नित राधारानी पद वंदन।
उमा रमा चापें पग जेहि नँदनंदन,
राधारानी पग चापें सोइ नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्रुति कह वेद वेद्य जेहि नँदनंदन,
सोइ गोपन बने घोड़ा नँदनंदन।
श्रुति कह बुधि पर जेहि नँदनंदन,
उठवावें गोबर टोकरि गोपीजन।
उर लाना चाहे जेहि योग बल योगी जन,
सोइ राधा को मनावें रो के नँदनंदन।
जो है सारे जग का ही दाता नँदनंदन,
सोइ बना राधा का भिखारी नँदनंदन।
सनकादि कृपा चह जेहि नँदनंदन,
राधा कृपा चह सो 'कृपालु' नँदनंदन।

28

(मेरे प्राणाधार हैं ...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नाथों के नाथ दीनानाथ सो जगन्नाथ।
जो हैं जगत के नाथ सो जगन्नाथ।
जिनसे हो उत्पन्न जग सो जगन्नाथ।
जिनसे हो रक्षित जग सो जगन्नाथ।

जिनसे हो जग का लय सो जगन्नाथ।
विधि हरि हर के भी नाथ हैं जगन्नाथ।
जो सब उर पुर बसें सो जगन्नाथ।
जो सब जग व्यापक सो जगन्नाथ।
जो हैं अनाथों के नाथ सो जगन्नाथ।
जो हैं पतित पावन सो जगन्नाथ।
जो बिनु हेतु कृपालु सो जगन्नाथ।
जो हैं प्रणत वत्सल सो जगन्नाथ।
जो हैं सदा भक्त वश सो जगन्नाथ।
जो हैं प्रणत अनुगत सो जगन्नाथ।
जो हैं दीनन बंधु सो जगन्नाथ।
जो दिव्य प्रेम रस सिंधु सो जगन्नाथ।
जो आत्मा की आत्मा सो जगन्नाथ।
जो हैं परात्पर तत्त्व सो जगन्नाथ।
जो हैं समस्त शक्ति युक्त सो जगन्नाथ।
जो हैं स्वयं भगवान सो जगन्नाथ।
जो अद्वय ज्ञान तत्त्व सो जगन्नाथ।
जो सर्वज्ञ सर्ववित सो जगन्नाथ।
जो जग के नियामक सो जगन्नाथ।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो निराकार साकार सो जगन्नाथ।
जो हैं निर्गुण सगुण सो जगन्नाथ।
जो निर्विशेष सविशेष सो जगन्नाथ।
जो हैं अदृष्ट अरु दृष्ट सो जगन्नाथ।
जो अज्ञेय अरु ज्ञेय सो जगन्नाथ।
जो अचिन्त्य अरु चिन्त्य सो जगन्नाथ।
जो अग्राह्य अरु ग्राह्य सो जगन्नाथ।
जो अप्राप्य अरु प्राप्य सो जगन्नाथ।
जो अनिर्वाच्य अरु वाच्य सो जगन्नाथ।
जो सर्वद्रष्टा देव सो जगन्नाथ।
जो पूर्णतम ब्रह्मरूप सो जगन्नाथ।
जो पुरुषोत्तम ब्रह्म सो जगन्नाथ।
जो है षडैश्वर्य पूर्ण सो जगन्नाथ।
जो है प्रणत जन वश्य सो जगन्नाथ।
जो पतितन पावन सो जगन्नाथ।
जो हैं 'कृपालु' के भी नाथ सो जगन्नाथ॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

29

(नीको लागे...)

प्राणधन नँदनंदन घनश्याम।
तुम ही हो मम आत्मा श्याम।
तुम ही हो मम अंशी श्याम।
तुम ही हो मम स्वामी श्याम।
तुम ही सखा हमारे श्याम।
तुम ही मेरे सुत हो श्याम।
तुम ही मेरे प्रियतम श्याम।
तुम ही मेरी गति हो श्याम।
तुम ही मेरी मति हो श्याम।
तुम ही मेरी रति हो श्याम।
तुम ही मेरी जननी श्याम।
तुम ही जनक हमारे श्याम।
तुम ही मेरे सब कुछ श्याम।
तोसों अगनित नाते श्याम।
मैं तो भूला तो कहँ श्याम।
तुम जनि भूलो मों कहँ श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मैं तो हूँ माया वश श्याम।
याते हौं अज्ञानी श्याम।
मैं भूला अचरज नहिं श्याम।
श्रुति सर्वज्ञ तुमहिं कह श्याम।
तुम तो उर पुर ही रह श्याम।
पुनि कैसे भूले मोहिँ श्याम।
कान खोलि अब सुन लो श्याम।
चाहे प्यार करो मोहिँ श्याम।
चाहे ठुकराओ मोहिँ श्याम।
चाहे मोहिँ मारो तुम श्याम।
मेरे थे हो रहिहौं श्याम।
तुम्हरो कहा हुआ यह श्याम।
निर्बल का बल हूँ मैं श्याम।
नाथ अनाथन का मैं श्याम।
हौं बिनु हेतु सनेही श्याम।
बिनु कारण करुणाकर श्याम।
पतितन को पावन मैं श्याम।
मैं हूँ दीन बन्धु घनश्याम।
नाथ अकिंचन का मैं श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अधम उधारन हूँ मैं श्याम।
बारेक जो कह मेरे श्याम।
तेहिं अपनो मानूँ मैं श्याम।
मैं हूँ परम हितैषी श्याम।
इन वचनों को सोचहुँ श्याम।
भटकत भटकत थकि गये पाम।
अब तो लखु हमरिहुँ ढिंग श्याम।
सात स्वर्ग हौं नहिं चह श्याम।
पाँच मुक्ति हौं नहिं चह श्याम।
सुख बैकुंठहुँ नहिं चह श्याम।
हौं चह तेरी सेवा श्याम।
हौं चह बस तेरा सुख श्याम।
दे दो प्रेम 'कृपालुहुँ' श्याम॥

COPYRIGHT

30

RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

बलिहारी बलिहारी वारी बनवारी।
तन मन प्राण हौं वारी बनवारी।

दिव्य नीलमणि जनु तनु बनवारी।
दिव्य तनु दिव्य सुगंध बनवारी।
दिव्य देह दुति प्यारी बनवारी।
सिर दिव्य कनक मुकुट बनवारी।
दिव्य मुकुट दिव्य मणि बनवारी।
सिर दिव्य मोर मुकुट बनवारी।
दिव्य तिलक मृग मद बनवारी।
श्रुति दिव्य कुण्डल भल बनवारी।
नैनन दिव्य प्रेम बनवारी।
दिव्य रस दृग चितवनि बनवारी।
बेसर दिव्य चमक बनवारी।
मुसुकनि दिव्य सरस बनवारी।
कंकन दिव्य कनक बनवारी।
गल पटपीत दिव्य बनवारी।
गल मणिमाल दिव्य बनवारी।
गल बनमाल दिव्य बनवारी।
गल मुक्तमाल दिव्य बनवारी।
गल गुंजमाल दिव्य बनवारी।
गल कौस्तुभ मणि दिव्य बनवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बस जलजा उर बिच बनवारी।
दिव्य काछनी कटि बनवारी।
कटि किंकिनिहुँ दिव्य बनवारी।
कटि पट पीत दिव्य बनवारी।
नूपुर चरण दिव्य बनवारी।
पद नख मणि दुति दिव्य बनवारी।
अति मतवारी गति बनवारी।
ललित त्रिभंगी तनु बनवारी।
रोम रोम चुये रस बनवारी।
लाजति छवि लखि छवि बनवारी।
निज मन मोहिनि छवि बनवारी।
मदन विमोहिनि छवि बनवारी।
विधि हरि हर मोहन बनवारी।
गोपिन मन मोहन बनवारी।
गोपन मन मोहन बनवारी।
जनक सनक मोहन बनवारी।
नारद शुक मोहन बनवारी।
बनवारी सम छवि बनवारी।
पतितन अपनावत बनवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दीनबन्धु दीनानाथ बनवारी।
शरणागत वत्सल बनवारी।
भक्तन पराधीन बनवारी।
भक्त सम नहिं कोउ प्रिय बनवारी।
भक्त सम कमला न प्रिय बनवारी।
भक्त सम शिव नहिं प्रिय बनवारी।
भक्त सम ब्रह्मा न प्रिय बनवारी।
भक्त सम आत्मा न प्रिय बनवारी।
भक्त भक्त ही भक्त कह बनवारी।
भक्त पतन न हो कह बनवारी।
भक्तन के भक्त हैं बनवारी।
भक्तों के पाछे पाछे चलें बनवारी।
भक्त पद रज आंजें बनवारी।
भक्त भक्ति बिनु भक्ति दे न बनवारी।
भक्त का ऋणी आपु माने बनवारी।
जीवों के जीवन बनवारी।
जीव अरु माया पति बनवारी।
विधि हरि हर ध्यावें बनवारी।
पूर्ण ब्रह्म पुरुषोत्तम बनवारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रह्म की प्रतिष्ठा भी हैं बनवारी।
सर्व कारण कारण बनवारी।
साकार हो के भी विभु बनवारी।
सब उर पुर नित बस बनवारी।
अग जग जग स्रष्टा बनवारी।
अग जग जग रक्षक बनवारी।
अग जग प्रलय करत बनवारी।
अग जग जग व्यापक बनवारी।
अद्वय ज्ञान तत्व बनवारी।
परतत्व अवतारी बनवारी।
वृंदारक वृंद वंद्य बनवारी।
दे दो 'कृपालु' प्रेम शुद्ध बनवारी॥

31

RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

भज मन जीवन धन नँदनंदन।
सत चित आनँदघन नँदनंदन।

इन्द्र नील मणि तनु नँदनंदन।
सिर सोहे पीत पाग नँदनंदन।
सिर सोहे कनक मुकुट नँदनंदन।
झलमल मुकुट मणिन नँदनंदन।
सिर पर मोर मुकुट नँदनंदन।
लटकारी घुँघुरारी नँदनंदन।
मृगमद तिलक भाल नँदनंदन।
कान कनक कुण्डल नँदनंदन।
सरस रसीले दृग नँदनंदन।
अति मतवारे दृग नँदनंदन।
रतनारे दोउ दृग नँदनंदन।
सरस गँसीले दृग नँदनंदन।
विष अमृत युत दृग नँदनंदन।
अति चंचल चितवनि नँदनंदन।
नासा भल बेसर नँदनंदन।
नील कपोल गोल नँदनंदन।
मुख शोभा अनुपम नँदनंदन।
मुरि मुरि मृदु मुसुकनि नँदनंदन।
मधुर मधुर बोलनि नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर कनकन कंकन नँदनंदन।
दुति अँगुरिन मुँदरिन नँदनंदन।
गर फहरत दुपटी नँदनंदन।
गल भल गुंजमाल नँदनंदन।
गल भल मुक्तमाल नँदनंदन।
गल भल मणिन माल नँदनंदन।
गर वनमाल सुघर नँदनंदन।
गल छवि कौस्तुभ मणि नँदनंदन।
भृगु पद वक्ष मध्य नँदनंदन।
कटि तट पीत वसन नँदनंदन।
कटि कमनी काछनि नँदनंदन।
कटि कनकन किंकिनि नँदनंदन।
किंकिनि धुनि रुनझुन नँदनंदन।
पग नूपुर कनकन नँदनंदन।
नूपुर धुनि झननन नँदनंदन।
चरण अरुणिमा भल नँदनंदन।
चरनन नख मणि दुति नँदनंदन।
नख शिख छवि अनुपम नँदनंदन।
लाजति छवि लखि छवि नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

निज मनहूँ मोहन नँदनंदन।
ज्ञानिहुँ मन मोहे नँदनंदन।
गोपिन मन मोहे नँदनंदन।
गोपन मन मोहे नँदनंदन।
शिव शुक मन मोहे नँदनंदन।
सनकादिक मोहे नँदनंदन।
प्रेम सुधा रस निधि नँदनंदन।
रूप सुधा रस निधि नँदनंदन।
ब्रज रस सुधा सिन्धु नँदनंदन।
रोम रोम रस चुवे नँदनंदन।
रति मति गति अति प्रिय नँदनंदन।
जीवनधन 'कृपालु' नँदनंदन॥

32

RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

भज मन राधा रमन घनश्याम।
कर अरपन तन मन धन धाम।

जग का सुख अल्प सुख परिणाम।
जग सुख नश्वर दुख परिणाम।
इन्द्रिय विषय बढ़ावत काम।
ब्रह्महूँ ते बड़ इन्द्रिन काम।
सुरपतिहूँ चह विधि पद धाम।
घृत सम भोग अग्नि सम काम।
तजि दे इन्द्रिन पाँचन काम।
ब्रह्मलोक पर्यन्त सुख सब काम।
ब्रह्मलोक पर्यन्त मायिक धाम।
सुख अनंत शाश्वत घनश्याम।
क्षण क्षण वर्धमान सुख श्याम।
तू तो है जीव अंश घनश्याम।
तेरो सब कुछ अंशी घनश्याम।
चिदघन आनन्दघन घनश्याम।
बिनु श्रम मिलहिं तोहिं घनश्याम।
ब्रह्म लोक ऊपर परव्योम धाम।
नित्य दिव्य सुख युत परव्योम धाम।
परव्योम धाम दिव्य चिन्मय धाम।
परव्योम ऊपर गोलोक धाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गोलोक मध्य शोभित ब्रजधाम।
ब्रज धाम ईश्वर हैं घनश्याम।
ब्रज धाम रस सम रस ब्रजधाम।
सर्वश्रेष्ठ माधुर्य रस ब्रज धाम।
श्याम सुख हित प्रेम प्रेम निष्काम।
निज इन्द्रिय सुख हित प्रेम काम।
निंदनीय जग का प्रेम निष्काम।
वंदनीय श्याम का प्रेम भी सकाम।
अति वंदनीय श्याम प्रेम निष्काम।
जीव का चरम लक्ष्य नहिं प्रेम श्याम।
जीव का लक्ष्य तो है सेवा श्याम।
प्रेम बिनु मिले नहिं सेवा श्याम।
गुरु की शरण गहहु वसुयाम।
गुरु द्वारा मिले प्रेम दिव्य निष्काम।
दिव्य मन को दे गुरु प्रेम निष्काम।
दिव्य मन हित करु नव भक्ति श्याम।
नव महँ प्रमुख स्मरण भक्ति श्याम।
वैधी अरु रागानुगा भक्ति श्याम।
शास्त्र विधि युक्त वैधी भक्ति घनश्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बिनु शास्त्र विधि रागानुगा भक्ति श्याम।
रागानुगा प्रेमी पावे ब्रज रस श्याम।
वैधी भक्त पावे रस द्वारवती धाम।
माधुर्य भाव सर्वश्रेष्ठ भाव श्याम।
महाभाव प्रेम प्राप्त करे ब्रजबाम।
अनुराग प्रेम पावे द्वारवती बाम।
कुब्जा का प्रेम केवल है सकाम।
रति साधारणी कुब्जा बाम।
रुक्मिणि प्रेम निष्काम सकाम।
रति तो समंजसा रुक्मिणि बाम।
ब्रजगोपी प्रेम केवल निष्काम।
रति तो समर्था है ब्रजबाम।
निज सुख ही चह कुब्जा बाम।
निज सुख पिय सुख रुक्मिणि बाम।
पिय सुख ही चह सब ब्रजबाम।
विधि आदि चह पद रज ब्रजबाम।
ब्रजबाम प्रेम सम प्रेम ब्रजबाम।
ब्रजबाम प्रेम ऋणी माने आपु श्याम।
ऊधो आदि चह तनु लता ब्रजधाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब ते बड़ा गोपी प्रेम निष्काम।
गोपी प्रेम आधीन ब्रह्म घनश्याम।
पाँचों मुक्ति हैं आधीन घनश्याम।
पाँचहुँ मुक्ति नहिं चह ब्रजबाम।
अष्टयामी सेवा चह ब्रजबाम।
ब्रजबाम प्रेम कठपुतली श्याम।
टुक छाछ दै नचावे ब्रजबाम श्याम।
हौं हूँ 'कृपालु' चह प्रेम ब्रजबाम॥

33

(हैं बाँको सुन्दर...)
भाय गयो भाय गयो बलभाय,
अब पति सुत कछु न सुहाय।
उर आनंद नाहिं समाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥
वह मुकुट लटक बलभाय,
वह चितवनि मृदु मुसकाय।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

गइ मम उर माहिं समाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥
वह नैन सैन बलभाय,
वह मृदु बोलनि मुसकाय।
मम रोम रोम रह छाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥
रस मुरली धुनि बलभाय,
तन मन सुधि दिय बिसराय।
तन सुख अब मन नहिं भाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥
कानन कुंडल हलकाय,
बेसर झलमल झलकाय।
छवि लखत बनत बलभाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥
COPYRIGHT
गल भल वनमाल सुहाय,
RADHA GOVIND SAMITI
गल गुंजमाल बलभाय।।
गल कौस्तुभ मणि छवि छाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥

कटि किंकिनि धुनि मनभाय,
कटि पीताम्बर छवि छाय।
कछनी कमनीय सुहाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥
कर मणि कंकण मनभाय,
भुज बाजूबंद सुहाय।
अँगुरिन मुँदरिन बलभाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥
अति मृदुल चरण बलभाय,
पद नख मणि दुति दमकाय।
लखि शंभु समाधि भुलाय,
हौं रंकिनि पारस पाय॥
गति मतवारी मनभाय,
लखि ज्ञानिहुँ ज्ञान भुलाय।
नख शिख चिन्मय तनु याय,
बलि बलि 'कृपालु' बलभाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

34

(मन करु सुमिरन...)

मन करु सुमिरन यशुदा को ललन।
यशुदा को ललन नंदराय सुवन।
जो है सतघन चितघन आनँदघन।
जोइ गोपी जन जीवन नँदनन्दन।
जोइ मदन विमोहन धन रसिकन।
जोइ रास किये सँग ब्रज सखियन।
जोइ किय ब्रज युवतिन चीर हरन।
जोइ किय सुरपति को गर्वहरन।
जोइ किय ब्रह्मा बुधि मद मर्दन।
जोइ नख धार्‌यो गिरि गोवर्धन।
जाको दिव्य नीलमणि नील बरन।
जाकी दामिनि दुति जनु नील दुति तन।
जाकी सुवरन मुकुट मणिन दुति घन।
जाकी मोर मुकुट लटकनि हरे मन।
जाकी लट घुँघुरारी कारी मन भावन।
जाकी भाल तिलक दृग मद दमकन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जाकी कनकन कुंडल दुति रत्लन।
जाके कजरारे रतनारे प्यारे नयन।
जाके सरस रसीले गँसीले दृगन।
जाकी जादू भरी अति चंचल चितवन।
जाकी नासा बेसर की हलकन।
जाकी दसनन दुति दमकनि आनन।
जाकी मुरि मुरि मधुर मधुर मुसकन।
जाकी कर मणि दुति दमकनि कंकन।
जाको कर कंकन बाजे खननननन।
जाकी अँगुरिन मुँदरिन दुति हीरन।
जाके उर पीताम्बर की फहरन।
जाके गर लर मोतिन की लहरन।
जाके गल भल गुंजमाल लटकन।
जाके गल बनमाल पाँच पुष्पन।
जाके वक्षस्थल भृगु विप्र चरन।
जाके कटि सोहति किंकिनि कनकन।
जाकी कटि किंकिनि बाजे झननननन।
जाकी पीताम्बर झलमल झलकन।
जाके नूपुर सोहत दोउ चरनन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जाको नूपुर बाजे छूम छननननन।
जाकी पद नखमणि दुति जनु शशिगन।
जाकी चरण अरुणिमा मनमोहन।
जाकी मत्त गयंद लजाव गवन।
जाके रोम रोम ब्रजरस की झरन।
जाको लखि भूले ज्ञानिन निज सुधि तन।
जाको लखि धार्‌यो शिव गोपी तन।
जाके क्षण क्षण वर्धमान रस तन।
जाकी नित्य नवायमान छवि तन।
जाकी छविहूँ लाजति लखि छवि तन।
जाकी छवि कन्दर्प दर्प मर्दन।
जाकी छवि उनहुँन मन की मोहन।
जाकी छवि चोरे चित्त परमहंसन।
जाको लखि बाढ़ै और प्यास दरसन।
जाको लखि वारौं कोटिन मुक्ति सुखन।
जाकी मोहे ब्रह्मादि मुरलि वादन।
जाकी तनु छवि सों 'कृपालु' लाली छवि तन॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

35

(नीको लागे...)

मन तेरो साँचो मीत गोपाल।
तेरो स्वामी सखा सुत पति गोपाल।
तू है अंश तेरा अंशी है गोपाल।
तू चह नित्य दिव्य सुख गोपाल।
तू चह सुख सुखघन गोपाल।
तू चह सुख भूमा गोपाल।
कर्म से मिलेगा नहिं सुख गोपाल।
योग से मिलेगा नहिं सुख गोपाल।
ज्ञान से मिलेगा नहिं सुख गोपाल।
कर्म का फल स्वर्ग दे गोपाल।
योग का फल सिद्धि दे गोपाल।
ज्ञान का फल मोक्ष दे गोपाल।
भक्ति का फल भक्ति दे गोपाल।
कर्म धर्म व्यर्थ बिनु भक्ति गोपाल।
योग रोग सम बिनु भक्ति गोपाल।
ज्ञान अज्ञान बिनु भक्ति गोपाल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कर्म वंदनीय भक्ति युक्त गोपाल।
योग वंदनीय भक्ति युक्त गोपाल।
ज्ञान वंदनीय भक्ति युक्त गोपाल।
कर्म नश्वर भक्ति नित्य गोपाल।
योग नश्वर भक्ति नित्य गोपाल।
ज्ञान नश्वर भक्ति नित्य गोपाल।
कर्म कठिन भक्ति सरल गोपाल।
योग कठिन भक्ति सरल गोपाल।
ज्ञान कठिन भक्ति सरल गोपाल।
माया न जाय बिनु भक्ति गोपाल।
ब्रह्म ज्ञान न हो बिनु भक्ति गोपाल।
केवल भक्ति से ही मिले गोपाल।
कर्म, योग, ज्ञान से न मिले गोपाल।
केवल भक्ति से ही द्रवै गोपाल।
COPYRIGHT
कर्म फल स्वर्ग भी दे भक्ति गोपाल।
RADHA GOVIND SAMITI
योग फल सिद्धि भी दे भक्ति गोपाल।
ज्ञान फल मोक्ष भी दे भक्ति गोपाल।
जो भी दुर्लभ भक्ति दे गोपाल।
जो भी अलभ्य भक्ति दे गोपाल।

भक्तौं की संभार करैं नित गोपाल।
भक्तौं को दे ब्रह्म ज्ञान गोपाल।
भक्तौं के पाछे पाछे चलैं गोपाल।
भक्तौं के हाथ बिकैं मदन गोपाल।
भक्तौं के पाप पुण्य नासैं गोपाल।
भक्तौं के तीनौं कर्म नासैं गोपाल।
भक्तौं के पंचक्लेश मेटे गोपाल।
भक्तौं के पंचकोश नासे गोपाल।
भक्तौं के वश महँ रह गोपाल।
भक्तौं की पद रज चह गोपाल।
भक्तौं की रुचि राखें गोपाल।
भक्तौं की भक्ति करें गोपाल।
भक्तौं को प्राण प्रिय कह गोपाल।
भक्तौं को निज रूप कह गोपाल।
भक्त जैसा चाहे, वैसा नाचे गोपाल।
हौं हूँ 'कृपालु' चह भक्ति गोपाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

36

(हैं बाँको सुन्दर...)

मम स्वामी प्राणाधार, मम सखा श्याम सरकार।
मम सुत ब्रज राज दुलार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥
जो मोर मुकुट सिर धार, जेहि लटकारी घुँघुरार।
जेहि मृग मद तिलक लिलार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥
जो कानन कुंडल धार, जेहि नैनन अति रतनार।
जेहि चितवनि जादू डार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥
जो नासा बेसर धार, जेहि मुख मुरली रिझवार।
जेहि मृदु मुसकनि बलिहार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥
जो उर पीताम्बर धार, जेहि गर मणि मुक्तन हार।
जेहि गर बनमाला निहार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥
जो दोउ कर कंकण धार, जेहि कटि किंकिणि छविदार।
जेहि काछनि कटि रिझवार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥
जो कटि पीताम्बर धार, जेहि पग नूपुर झनकार।
जेहि चरण कमल बलिहार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥
जो राधा प्राणाधार, जेहि तन सुख घन साकार।
जेहि छवि लखि छवि बलिहार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जो सखिन प्राण साकार, जेहि अंश सबै अवतार।
जेहि तनु बह ब्रज रस धार, मम पिय सोइ नंदकुमार॥
जो दीनन को रखवार, जेहि पायो नहिँ कोउ पार।
जेहि विधि हरि हर गये हार, मम सोइ 'कृपालु' सरकार॥

37

(नथवारी रंगीली...)

मेरे चितघन आनन्दघन घनश्याम।
सत चित आनन्द घन तन घनश्याम।
वारत शत काम लखत छवि श्याम।
चुये रोम रोम ब्रज रस तन घनश्याम।
वारत छवि लखि छवि तन घनश्याम।
करे नित्य रास वृन्दावन श्याम।
चलें पाछे पाछे ब्रज बनितनि घनश्याम।
बिके हाथ भक्त बिनु दाम श्याम।
दै छाछ नचावें सखिन श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नाचत ब्रजबाल ताल घनश्याम।
घोड़ा बनि भाजत सखन श्याम।
गोपन मुख जूठन खायँ श्याम।
गोपिन सिर घट उठवायँ श्याम।
गोबर टोकरि उठवायँ श्याम।
गोखुर रज मण्डित तन घनश्याम।
शोभित तनु पंक लिप्त घनश्याम।
है पूर्णकाम किये रास श्याम।
बनि गये शिवानी शिव लखि श्याम।
मुर्छित छिति गिर्‍यो काम लखि श्याम।
श्यामा को स्वामिनि मान श्याम।
श्यामा को चापत चरण श्याम।
श्यामा की निरखत भौंह श्याम।
श्यामा की डगर बुहार श्याम।
श्यामा बिनु पलक कलप जनु श्याम।
श्यामा पद अँसुवन धोय श्याम।
श्यामा मानिनिहिं मनाव श्याम।
श्यामा हित धर तनु बाम श्याम।
श्यामा श्यामा रट नित्य श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्यामा हैं आत्मा देह श्याम।
श्यामा पग मुकुट धरत घनश्याम।
श्यामा ते कृपा माँग घनश्याम।
श्यामा की अगवानी कर श्याम।
श्यामा धर पग जहँ तहँ सिर श्याम।
श्यामा की जय बोलें घनश्याम।
श्यामा भोरी नटखट घनश्याम।
श्यामा हित बन मनिहार श्याम।
श्यामा हित बन लिलिहार श्याम।
श्यामा हित मालिनि बने श्याम।
श्यामा हित योगिनि बने श्याम।
श्यामा 'कृपालु' ही बनी श्याम॥

38

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(नथवारी रंगीली...)

वारी वारी वारी बनवारी छवि प्यारी।
वारी वारी नवघन तनु छवि प्यारी।
वारी वारी नील तनु दुति छवि प्यारी।

वारी वारी सुख घन तनु छवि प्यारी।
वारी वारी घुँघुरारी लट छवि प्यारी।
वारी वारी सिर पीरी पाग छवि प्यारी।
वारी वारी कनक मुकुट छवि प्यारी।
वारी वारी मुकुट मणिन छवि प्यारी।
वारी वारी मुकुट मणिन दुति प्यारी।
वारी वारी मोर मुकुट छवि प्यारी।
वारी वारी भाल तिलक छवि प्यारी।
वारी वारी भृकुटि मटक छवि प्यारी।
वारी वारी श्रुति कुण्डल छवि प्यारी।
वारी वारी कुण्डल दुति छवि प्यारी।
वारी वारी कजरारे दृग छवि प्यारी।
वारी वारी रतनारे दृग छवि प्यारी।
वारी वारी मतवारे दृग छवि प्यारी।
वारी वारी आकर्ण दृग छवि प्यारी।
वारी वारी नैनन बान छवि प्यारी।
वारी वारी दृग चितवनि छवि प्यारी।
वारी वारी नासा बेसर छवि प्यारी।
वारी वारी अरुण अधर छवि प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वारी वारी दसनन दुति छवि प्यारी।
वारी वारी मृदु मुसुकनि छवि प्यारी।
वारी वारी कर कंकन छवि प्यारी।
वारी वारी कंकण मणि छवि प्यारी।
वारी वारी कंकण दुति छवि प्यारी।
वारी वारी मुँदरिन मणि छवि प्यारी।
वारी वारी मुँदरिन दुति छवि प्यारी।
वारी वारी भुज बाजूबन्द छवि प्यारी।
वारी वारी करतल लाल छवि प्यारी।
वारी वारी गल दुपटी छवि प्यारी।
वारी वारी कंध कामरि छवि प्यारी।
वारी वारी कंध लकुटी छवि प्यारी।
वारी वारी गल गुंजमाल छवि प्यारी।
वारी वारी गल बनमाल छवि प्यारी।
COPYRIGHT
वारी वारी गल मणिमाल छवि प्यारी।
RADHA GOVIND SAMITI
वारी वारी मोतिन माल छवि प्यारी।
वारी वारी हीरन हार छवि प्यारी।
वारी वारी उर भृगु पद छवि प्यारी।
वारी वारी कटि किंकिनि छवि प्यारी।

वारी वारी किंकिनि दुति छवि प्यारी।
वारी वारी कटि काछनि छवि प्यारी।
वारी वारी पीताम्बर छवि प्यारी।
वारी वारी पग पायल छवि प्यारी।
वारी वारी पायल दुति छवि प्यारी।
वारी वारी अरुण चरण छवि प्यारी।
वारी वारी पद नख मणि छवि प्यारी।
वारी वारी नँदबाबा लखि छवि प्यारी।
वारी वारी यशुमति लखि छवि प्यारी।
वारी वारी मत्त गज गति छवि प्यारी।
वारी वारी मुख मुरली छवि प्यारी।
वारी वारी मैया आगे रोये छवि प्यारी।
वारी वारी माटी खाय छुपि छवि प्यारी।
वारी वारी गूँ गूँ करे छवि प्यारी।
वारी वारी लोटे भूमि पै छवि प्यारी।
वारी वारी गोद हित लरे छवि प्यारी।
वारी वारी माँगे चंद्र माय छवि प्यारी।
वारी वारी गैया चरावे छवि प्यारी।
वारी वारी गिरिराज धारे छवि प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वारी वारी सखन जितावे छवि प्यारी।
वारी वारी सखिन रिझावे छवि प्यारी।
वारी वारी धूरि भरे छवि प्यारी।
वारी वारी साँटी लखि रोती छवि प्यारी।
वारी वारी ऊखल बँधी छवि प्यारी।
वारी वारी पंक लपेटी छवि प्यारी।
वारी वारी नव नव लीला छवि प्यारी।
वारी वारी मुख कर दधि छवि प्यारी।
वारी वारी जब माँगे छाछ छवि प्यारी।
वारी वारी माँगे दधि दान छवि प्यारी।
वारी वारी गारी सुनि हँसे छवि प्यारी।
वारी वारी ब्रजवासी लखि छवि प्यारी।
वारी वारी जाय छवि लखि छवि प्यारी।
वारी वारी नित नव रस छवि प्यारी।
COPYRIGHT
वारी वारी उमा रमा लखि छवि प्यारी।
RADHA GOVIND SAMITI
वारी वारी ब्रज नारी लखि छवि प्यारी।
वारी वारी शंभु शुक लखि छवि प्यारी।
वारी वारी सनकादि लखि छवि प्यारी।
वारी वारी वेद ऋचन छवि प्यारी।

वारी वारी ललित त्रिभंग छवि प्यारी।
वारी वारी जो भी निहारी छवि प्यारी।
वारी वारी प्यारी जू भी लखि छवि प्यारी।
वारी वारी सखन मध्य छवि प्यारी।
वारी वारी सखिन मध्य छवि प्यारी।
वारी वारी मनिहारी छवि प्यारी।
वारी वारी लिलिहारी छवि प्यारी।
वारी वारी मालिनि तनु छवि प्यारी।
वारी वारी योगिनि तनु छवि प्यारी।
वारी वारी रास लीला लखि छवि प्यारी।
वारी वारी काली फण नृत्य छवि प्यारी।
वारी वारी गोपी पाछे चले छवि प्यारी।
वारी वारी प्यारी पग चापे छवि प्यारी।
वारी वारी प्यारी डर काँपे छवि प्यारी।
वारी वारी प्यारी को मनावें छवि प्यारी।
वारी वारी मुक्त चितचोरे छवि प्यारी।
वारी वारी रति पति लखि छवि प्यारी।
वारी वारी जो भी वारी लखि छवि प्यारी।
वारी वारी हौं 'कृपालु' अस छवि प्यारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

39

(नीको लागे...)

सत चित आनँदघन नँदनंदन।
नँदनंदन ही नँदनंदन तन।
देही भी देह भी नँदनंदन।
भगवान स्वयं हैं नँदनंदन।
एक अवतारी हैं नँदनंदन।
सोरह कला युक्त नँदनंदन।
षट् ऐश्वर्य युक्त नँदनंदन।
सुंदरता मूरति नँदनंदन।
रूप मधुरिमा सोइ नँदनंदन।
नटवर नागर सोइ नँदनंदन।
हैं पतितन पावन सोइ नँदनंदन।
हैं पुरुषोत्तम सोइ नँदनंदन।
हैं विश्वरूप सोइ नँदनंदन।
हैं विश्व व्याप्त सोइ नँदनंदन।
हैं विश्वेश्वर सोइ नँदनंदन।
हैं विश्व परे सोइ नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हैं नित्य सगुण सोइ नँदनंदन।
हैं नित निर्गुण सोइ नँदनंदन।
हैं निराकार सोइ नँदनंदन।
हैं नराकार सोइ नँदनंदन।
हैं ब्रह्म प्रतिष्ठा नँदनंदन।
हैं प्रेम सुधा निधि नँदनंदन।
हैं रूप सुधा निधि नँदनंदन।
हैं ब्रजरस अंबुधि नँदनंदन।
हैं मायापति सोइ नँदनंदन।
हैं सर्वेश्वर सोइ नँदनंदन।
हैं जीवन जीवन नँदनंदन।
हैं रसिक शिरोमणि नँदनंदन।
हैं रस स्वरूप सोइ नँदनंदन।
हैं निज जन मोहन नँदनंदन।
हैं निज मन मोहन नँदनंदन।
हैं विश्व विमोहन नँदनंदन।
हैं मदन विमोहन नँदनंदन।
हैं राधा मोहन नँदनंदन।
हैं गुणातीत सोइ नँदनंदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हैं अगणित गुण युत नँदनंदन।
हैं वेद वेद्य सोइ नँदनंदन।
हैं वेदन पर सोइ नँदनंदन।
हैं जग स्रष्टा सोइ नँदनंदन।
हैं जग पालक सोइ नँदनंदन।
हैं जग संहर्ता नँदनंदन।
हैं ब्रज रसिकन धन नँदनंदन।
हैं ब्रज बनितन धन नँदनंदन।
हैं ब्रज गोपन धन नँदनंदन।
हैं प्रणत जनन धन नँदनंदन।
हैं निर्धन को धन नँदनंदन।
हैं मम 'कृपालु' धन नँदनंदन॥

40

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(मम प्रियतम सुन्दर...)

हैं बाँको सुंदर श्याम, हैं बाँको वाको नाम।
हैं बाँको वाको धाम, हैं बाँको वाको काम॥

हैं बाँकी ग्रीव ललाम, हैं बाँकी कटि घनश्याम।
हैं बाँको वाको पाम, हैं बाँको वाको काम॥
हैं बाँको तिलक ललाम, हैं बाँकी चितवनि श्याम।
हैं बाँको दृग अभिराम, हैं बाँको वाको काम॥
हैं बाँकी मुरलि ललाम, हैं बाँकी मुसुकनि श्याम।
हैं बाँको मुख अभिराम, हैं बाँको वाको काम॥
हैं बाँकी लट अभिराम, हैं बाँकी भृकुटिहुँ श्याम।
हैं बाँको मुकुट ललाम, हैं बाँको वाको काम॥
हैं बाँकी किंकिणि श्याम, हैं बाँकी पायल पाम।
हैं बाँको भाल ललाम, हैं बाँको वाको काम॥
हैं बाँकी गति घनश्याम, हैं बाँकी मति अभिराम।
हैं बाँको प्रेम ललाम, हैं बाँको वाको काम॥
हैं बाँकी लीला श्याम, हैं बाँकी सब ब्रज बाम।
हैं बाँको गोपन ग्राम, हैं बाँको वाको काम॥
हैं बाँको गायन श्याम, हैं बाँको वादन बाम।
हैं बाँको नृत्य ललाम, बाँको 'कृपालु' मन काम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

41

(हैं बाँको सुन्दर...)

अलबेली मम सरकार, जो महाभाव साकार।
जेहि सेवत नंदकुमार, जेहि महिमा अपरंपार॥
तनु दिव्य गौर सरकार, बह रोम रोम रस धार।
रस पियत सबै ब्रजनार, जेहि छवि लखि छवि बलिहार॥
जो ब्रह्म रूप साकार, जो प्रेम सुधा रस सार।
धरि कोटिन तनु रिझवार, नहिं पायो जाको पार॥
बरसाने लिए अवतार, सँग कोटि कोटि ब्रजनार।
बनि मनिहारिनि लिलिहार, रिझवत नित नंदकुमार॥
वृंदावन कुंज मझार, बिहरति सँग नंदकुमार।
लखि लखि रस युगल बिहार, सखि कह पुनि पुनि बलिहार॥
जो दीन जनन रखवार, पतितन की सुनत पुकार।
जो मादन रस उर धार, तेहि वश रह नंदकुमार॥
जेहि अस्तुति कर श्रुति चार, विधि हरि हर कर जयकार।
स्वागत कर नंदकुमार, आरति कर सब ब्रजनार॥
मानिनि डर डर रिझवार, काँपत तनु नंदकुमार।
नैनन बह अँसुवन धार, सिर पग धरि कर मनुहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चह महल टहल रिझवार, नहिं पावत नंदकुमार।
तब साँवरि सखि तनु धार, सेवा कर महल मझार॥
सब जग भज नंदकुमार, सोइ भज स्वामिनि सुकुमार।
पग चापत जेहि रिझवार, सोइ मम 'कृपालु' सरकार॥

42

(नीको लागे...)

ऐसी अलबेली सरकार।
जैसी नहिं कहुँ विश्व मझार।
देही दास देह उर धार।
देही आत्मा वेद पुकार।
लख चौरासी देह प्रकार।
आत्मा हूँ श्रुति देह उचार।
जाकी आत्मा नंदकुमार।
श्यामहुँ जाकी देह उचार।
सो आत्मा वृषभानुदुलार।
भजत चराचर नंदकुमार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सोउ भज श्री वृषभानुदुलार।
सेव्या स्वामिनि भानुदुलार।
सेवक तो हैं नंदकुमार।
ह्लादिनि शक्ति सारहूँ सार।
मादन रस स्वरूप सुकुमार।
सत चित सुख घन तनु सुकुमार।
राधा प्रेम रूप रस सार।
राधा कृपा शक्ति साकार।
रोम रोम बह ब्रजरस धार।
पियत अनवरत नंदकुमार।
राधा छवि पर छवि बलिहार।
राधा पर राधा बलिहार।
सिंहासन बैठीं सुकुमार।
चापत चरनन नंदकुमार।
जब चल सखिन सँग सुकुमार।
पाछे चल हरि करि जयकार।
लखि स्वामिनि सोरह शृंगार।
पुनि पुनि कहत श्याम बलिहार।
जहँ कोउ राधा नाम उचार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तहँ आवत भजि नंदकुमार।
गोपिन करत रहत मनुहार।
महल टहल याचत रिझवार।
कबहुँ कबहुँ दे दें ब्रजनार।
राधा राधा जप रिझवार।
राधा ध्यान करत रिझवार।
राधा सुख चह नंदकुमार।
राधा जन सों कर अति प्यार।
राधा गुन गावत बलिहार।
राधा भृकुटि तकत रिझवार।
राधा मान डरत रिझवार।
मोहिं 'कृपालु' करु सखि सुकुमार॥

43

RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

जयति जयति जय भानुदुलार।
जाकर चाकर नंदकुमार।

चिन्मय गौर वरन तन धार।
दामिनि दुति जनु तनु सुकुमार।
लंबी वेणी सुमन संवार।
चूनरि झलमल जरिन किनार।
मोतिन माँग भरी सुकुमार।
शीश फूल भल शीश निहार।
सेंदुर छवि लखु सखि छविदार।
सिर पर स्वर्ण मुकुट रिझवार।
तापर चंद्रकला बलिहार।
मुकुट चन्द्रिका चमक निहार।
झलमलात मणि दुति बलिहार।
मणि मंडित कुंडल श्रुति धार।
नैन रसीले अति रतनार।
कजरारे दृग काजर डार।
नैन गँसीले भानुदुलार।
गरल सुधा मधु दृगन निहार।
अति मतवारे दृग सरकार।
चितवनि लखि मुर्छित रिझवार।
दशनन दुति दामिनि अनुहार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लजवत अधर बिंब सुकुमार।
मधुर मधुर मुसकनि सरकार।
मृदु बोलनि सुनि पिय बलिहार।
कर मणि कंकण छवि छविदार।
कर करपत्र चुरी सुकुमार।
रतन खचित पहुँची रिझवार।
दमकनि बाजूबंद निहार।
अँगुरिन हीरन मुँदरिन धार।
करतल मेंहदी सुघर संवार।
गर दुलरी तिलरी छविदार।
गर मणि मुक्तन हीरन हार।
उर कंचुकि बहुरंगी धार।
कटि तट मणिमय किंकिनि धार।
पग अंगुरिन बिछुवनि छविदार।
पग तल जावक अरुण निहार।
नख शिख किय सोरह शृंगार।
लखि शृंगार लजत शृंगार।
लाजति छवि लखि छवि सरकार।
छवि पर अगणित रति बलिहार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गति मति रति अति सरस निहार।
रोम रोम बह ब्रजरस धार।
लखि पिय पुनि पुनि कह बलिहार।
सखियन पुनि पुनि करि जयकार।
भाल 'कृपालु' दिठौना डार॥

44

(मतवारी प्यारी...)

जय जय राधारानी राधारानी राधारानी।
जय जय अवढर दानी राधारानी।
जय जय ब्रज रस खानी राधारानी।
जय जय प्रेम सुख दानी राधारानी।
जय जय ठाकुर ठकुरानी राधारानी।
जय जय वृंदावन रानी राधारानी।
जय जय चिन्मय ब्रजरानी राधारानी।
जय जय चितघन सुखघन राधारानी।
जय जय आनँदघन तन राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जय जय ब्रह्म रूप घन राधारानी।
जय जय दुति दामिनि तन राधारानी।
जय जय ब्रज बनितनि धन राधारानी।
जय जय चुवे ब्रजरस तन राधारानी।
जय जय विहरति वृंदावन राधारानी।
जय जय प्राण प्राण धन श्री राधारानी।
जय जय जीवन जीवन राधारानी।
जय जय निर्धन को धन राधारानी।
जय जय दीन जनन धन राधारानी।
जय जय पतित जनन धन राधारानी।
जय जय गति गज गामिनि राधारानी।
जय जय छवि अभिरामिनि राधारानी।
जय जय मादन स्वामिनि राधारानी।
जय जय सँग ब्रज भामिनि राधारानी।
COPYRIGHT
जय जय श्यामहु स्वामिनि राधारानी।
RADHA GOVIND SAMITI
जय जय प्रेमहुँ स्वामिनि राधारानी।
जय जय रूपहुँ स्वामिनि राधारानी।
जय जय अग जग जननी राधारानी।
जय जय अग जग पालिनि राधारानी।

जय जय त्रिभुवन मोहिनि राधारानी।
जय जय छवि छवि मोहिनि राधारानी।
जय जय रति मन मोहिनि राधारानी।
जय जय निज जन मोहिनि राधारानी।
जय जय मोहन मोहिनि राधारानी।
जय जय निज मन मोहिनि राधारानी।
जय जय मम 'कृपालु' सोइ राधा रानी॥

45

(हैं बाँको सुन्दर...)

जोइ अलबेली सरकार, सोइ प्रेम सुधा रस सार।
जोइ जीवन प्राणाधार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
जेहि सेवत नँदकुमार, जेहि छवि पर छवि बलिहार।
जेहि लखि मुर्छित रिझवार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
सिर कनक मुकुट छविदार, भल चारु चंद्रिका धार।
सिर शीश फूल बलिहार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
वेणी कारी घुँघरार, सिर चूनरि जरिन किनार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

श्रुति कर्ण फूल बलिहार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
रस भरे नैन रतनार, नैनन बिच काजर डार।
चितवनि लखि पिय बलिहार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
नासा भल बेसर धार, नथ मोतिन लर छविदार।
मृदु मुसकनि छवि बलिहार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
कर मणिमय कंकण धार, करपत्र चुरी छविदार।
पहुँची छवि चारु निहार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
भुज बाजूबंद निहार, अँगुरिन मणि मुँदरिन धार।
मेंहदी करतल बलिहार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
गर मणि मुक्तन को हार, दुलरी तिलरी छविदार।
लखि कंचुकि पिय बलिहार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
कटि मणि किंकिणि रिझवार, किंकिणि रुनझुन झनकार।
नीलाम्बर छवि छविदार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
पग मणिमय नूपुर धार, जावक छवि अरुण निहार।
अँगुरिन बिछुवनि छविदार, सोइ मम स्वामिनि सुकुमार॥
बह रोम रोम रस धार, जेहि पियत रहत रिझवार।
जोइ दीनन की रखवार, सोइ मम 'कृपालु' सरकार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

46

(तू ही तू ही...)

ठकुरानी राधा रानी प्रेम सुख दानी,
करें अगवानी जाकी सारँग पानी।
वृन्दावन महरानी अवढर दानी,
पूर्ण ब्रह्म श्यामहूँ ने स्वामिनि मानी।
दिव्य प्रेम दिव्य रूप दिव्य रस खानी,
गुरु की कृपा ते राधा तत्व हम जानी।
जाकी नौकरानी कोटि बानी भवानी,
जाकी महिमा चारों श्रुतिहूँ न जानी।
जाको पार पायो नहिं ब्रह्म चक्रपानी,
जाकी दिव्य वृन्दावन रजधानी।
जाको नेति नेति कहि गावे वेद वानी,
करें मनुहार ब्रह्म श्याम जोरि पानी।
धोवें पग जाको दृग जल चक्र पानी,
जाको माँगे प्रेम श्याम त्रिभुवन दानी।
जग दाता श्याम श्याम दाता ठकुरानी,
मेरी सरकार हैं 'कृपालु' महरानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

47

(नथवारी रंगीली...)

तेरी कृपा का भरोसा भारी राधारानी।
तू तो कृपा की है मूरति राधारानी।
तू तो कृपा ही कृपा करे राधारानी।
तेरी कृपा का न ओर छोर राधारानी।
तेरी अगनित शक्ति हैं राधारानी।
सर्वश्रेष्ठ कृपा शक्ति तेरी राधारानी।
कृपा ते ही जग रचा तूने राधारानी।
कृपा ते ही जग पाले भी तू राधारानी।
कृपा ते ही तू प्रलय करे राधारानी।
कृपा ते ही प्रकटाये वेद राधारानी।
कृपा ते ही दिया नर तनु राधारानी।
कृपा ते ही दिया माँ का दूध राधारानी।
कृपा ते ही दिया अन्न आदि राधारानी।
कृपा ते ही बसी उर पुर राधारानी।
कृपा ते ही देंय कर्म फल राधारानी।
कृपा ते ही लिखे जीव कर्म राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कृपा ते ही देंय पाप दंड राधारानी।
कृपा ते ही जियें जीव सब राधारानी।
कृपा ते ही पावें जीव रस राधारानी।
कृपा ते ही लेंय अवतार राधारानी।
कृपा ते ही भेजें निज जन राधारानी।
कृपा ते ही बने ब्रह्म कृष्ण राधारानी।
तेरी कृपा पावे ब्रह्म तनु राधारानी।
तेरी कृपा पावे ब्रह्म नाम राधारानी।
तेरी कृपा पावे ब्रह्म गुण राधारानी।
तेरी कृपा करे ब्रह्म लीला राधारानी।
तेरी कृपा बने ब्रह्म धाम राधारानी।
कृपा ते ही पायो रास कृष्ण राधारानी।
तू तो अद्भुत कृपा करे राधारानी।
तू तो पतितहुँ कृपा करे राधारानी।
हरि जाको मारे वाको तारे राधारानी।
हरि कृपा करे पाके कृपा राधारानी।
कृपा ही तो तोरा दाना पानी राधारानी।
रहि सक न कृपा बिना तू राधारानी।
तेरी कृपा के भिखारी साराँगपानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरी कृपा कृपा कृपा भई राधारानी।
तेरी कृपा की न समता राधारानी।
तेरी कृपा ते ही विधि विधि राधारानी।
तेरी कृपा ते ही हरि हरि राधारानी।
तेरी कृपा ते ही शिव शिव राधारानी।
तेरी कृपा पाये ज्ञानी गति राधारानी।
तेरी कृपा पाये योगी गति राधारानी।
तेरी कृपा पाये भक्त गति राधारानी।
तेरी कृपा जीव जीवित राधारानी।
तेरी कृपा ते ही वायु चले राधारानी।
तेरी कृपा ते ही आग जले राधारानी।
तू तो कृपा करे मनमानी राधारानी।
तू तो कृपा ते अघाय नहीं राधारानी।
तेरी कृपा चह ब्रह्माणी राधारानी।
तेरी कृपा चह रुद्राणी राधारानी।
तेरी कृपा चह कमलाहुँ राधारानी।
तेरी कृपा चह सनकादि राधारानी।
तेरी कृपा चह जनकादि राधारानी।
तेरी कृपा चह परिकर राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरी कृपा चह गोपीजन राधारानी।
तेरी कृपा चह ब्रजवासी राधारानी।
तेरी कृपा चह नित्य सिद्ध राधारानी।
तेरी कृपा चह मुक्त जन राधारानी।
तेरी कृपा चह ज्ञानी ध्यानी राधारानी।
तेरी कृपा चह चराचर राधारानी।
तेरी कृपा चह ऋषि मुनि राधारानी।
तेरी कृपा चह योगी जन राधारानी।
तेरी कृपा चह जपी तपी राधारानी।
तेरी कृपा चह सिद्ध जन राधारानी।
तेरी कृपा ते ही माया भागे राधारानी।
तेरी कृपा चह साधक राधारानी।
सारा जग है भिखारी दाता राधारानी।
तेरी कृपा चह हौं 'कृपालु' राधारानी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

48

(नथवारी रंगीली...)

तू तो मेरी थी है रहेगी भी राधारानी।
मैं भी तेरी थी हूँ रहूँगी भी राधारानी।
मेरी भूल थी जो भूला तोहिं राधारानी।
यह भूल थी अनादि मेरी राधारानी।
याते माया ने भुलाया मोहिं राधारानी।
मैंने आत्मा को माना तनु राधारानी।
याते तनु नाते माने नाते राधारानी।
तनु नाते क्षणभंगुर राधारानी।
जग वारे तो भिखारी सब राधारानी।
हम तो चह तव सुख राधारानी।
वह सुख देंगे तेरे जन राधारानी।
तेरी कृपा मिले तेरे जन राधारानी।
कृपा बिनु नहिं बने मेरी राधारानी।
तेरी कृपा हो प्रपन्न पर राधारानी।
ऐसी कृपा करु अब मेरी राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हठी मन हो प्रपन्न तेरे राधारानी।
बुधि जाने तू है दीन प्रिय राधारानी।
किन्तु बुधि नहिं तजे मद राधारानी।
चौरासी लाख द्वार गये राधारानी।
सब द्वार माँगा सुख भीख राधारानी।
मिला भीख में दुखहि दुख राधारानी।
इमि बीते जन्म अगनित राधारानी।
अब जाना सुखघन तू है राधारानी।
ब्रह्मलोक तक सुख नहिं राधारानी।
मुक्तिहुँ सुख सुख नहिं राधारानी।
तेरी सेवा का ही सुख सुख राधारानी।
तेरे प्रेम ते ही मिले सेवा राधारानी।
तेरा प्रेम भी दे तेरा जन राधारानी।
निज जन ते दिला दे प्रेम राधारानी।
माना मन मेरा मायिक राधारानी।
तेरा जन ही करेगा दिव्य राधारानी।
साधन ते मिले न प्रेम राधारानी।
हौं तो शिशु अबोध तव राधारानी।
तू तो मन बुधि से भी पर राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि तोहिं कैसे जानें हम राधारानी।
पुनि बिनु जाने कैसे मानें राधारानी।
बिनु माने कैसे प्रेम होय राधारानी।
बिनु प्रेम नहिं होय कृपा राधारानी।
तेरी कृपा हो तो जानें तोहि, राधारानी।
याते कृपा करु तू 'कृपालु' राधारानी।

49

(तू ही तू ही...)

तू ही तू ही तू ही तो है मेरी एक राधारानी,
मैं भी मैं भी मैं भी तो हूँ इक तेरी राधारानी।
तू ही मेरी तू ही मेरी स्वामिनि राधारानी,
तू ही मेरी तू ही मेरी जीवनि राधारानी।
तू तो है कृपा की मूरति मेरी राधारानी,
लाजे लखि रति सूरति तेरी राधारानी।
तेरी कृपा ते ही कोउ जाने तोहिं राधारानी,
तेरी कृपा ते ही कोउ माने तोहिं राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरी कृपा ते ही कोउ तोहिं पावे राधारानी,
तेरी कृपा ते ही ब्रजरस पावे राधारानी।
तेरी कृपा ते ही विधि रचे जग राधारानी,
तेरी कृपा ते ही हरि पाले जग राधारानी।
तेरी कृपा ते ही शिव करें लय राधारानी,
तेरी कृपा ते ही श्याम पावें रास राधारानी।
तेरी कृपा ते ही जियें जीव सब राधारानी,
तेरी कृपा ते ही हो प्रपन्न कोउ राधारानी।
तेरी कृपा ते ही पायो ब्रह्म तनु राधारानी,
तेरी कृपा ते ही ब्रह्म लीला धारी राधारानी।
तेरी कृपा ते ही कोउ भजे तोहिं राधारानी,
तेरी कृपा ते ही मन तजे जग राधारानी।
तेरी कृपा ते ही कोउ बोले मेरी राधारानी,
तेरी कृपा ते ही कोउ बने तेरी राधारानी।
मैं तो हूँ पतित अति सुत तेरा राधारानी,
तू तो माँ पतितपावनि मेरी राधारानी।
मेरा मन विषयों का मधुकर राधारानी,
तू बना ले निज पद मधुकर राधा रानी।
तू तो सत्यसंकल्प माँ है मेरी राधारानी,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरे सोचने से ही मैं बनूँ तेरी राधारानी।
माया तो है तेरी शक्ति तेरी दासी राधारानी,
सुत को बचा ले माया को भगा दे राधारानी।
तेरी माया ने सताया अतिशय राधारानी,
निज सुत को छुपा ले आँचल राधारानी।
तूने तो तजा न मोहिँ इक पल राधारानी,
मैंने ही भुलाया माया वश तोहिँ राधारानी।
स्वांग बना के लख चौरासी राधारानी,
चाहा मैं रिझाना तोहिँ रीझी नहिँ राधारानी।
अब तो लगा ले उर मोहिं मेरी राधारानी,
बड़ी आशा लै के आई तेरे ब्रज राधारानी।
मोहूँ को बना ले निज दासी दासी राधारानी,
भटकत भटकत थकि गये राधारानी।
तू तो बिनु हेतु सनेहिनि राधारानी,
बिनु साधन अपना ले मोहिं राधारानी।
जीना नहिं चाहूँ अब तेरे बिनु राधारानी,
तेरे बिनु जीना कोई जीना नहिं राधारानी।
चाहे अपनाये चाहे ठुकराये राधारानी,
अब तो 'कृपालु' पाछा छोड़े नहिं राधारानी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

50

(नथवारी रंगीली...)

प्यारी प्यारी प्यारी प्यारी प्यारी छवि वारी।
मैं तो वारी प्यारी प्यारी छवि पर वारी।
प्यारी प्यारी सिर प्यारी चूनरि वारी।
प्यारी प्यारी छवि शीश फूल वारी।
प्यारी प्यारी छवि कनक मुकुट वारी।
प्यारी प्यारी छवि वर वेणी वारी।
प्यारी प्यारी छवि सिर चन्द्रिका वारी।
प्यारी प्यारी छवि श्रुति कुंडल वारी।
प्यारी प्यारी छवि दृग चितवनि वारी।
प्यारी प्यारी छवि दृग ब्रजरस वारी।
प्यारी प्यारी छवि मृदु मुसुकनि वारी।
प्यारी प्यारी छवि दुति दामिनि वारी।
प्यारी प्यारी छवि गर दुलरी वारी।
प्यारी प्यारी छवि गर तिलरी वारी।
प्यारी प्यारी छवि मोतिन लर वारी।
प्यारी प्यारी छवि मणि माला वारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी प्यारी छवि उर कंचुकि वारी।
प्यारी प्यारी छवि कर कंकन वारी।
प्यारी प्यारी छवि कर पहुँची वारी।
प्यारी प्यारी छवि कर चूरिन वारी।
प्यारी प्यारी छवि मणि मुँदरिन वारी।
प्यारी प्यारी छवि कर मेंहदी वारी।
प्यारी प्यारी छवि कटि किंकिनि वारी।
प्यारी प्यारी छवि तनु सारी वारी।
प्यारी प्यारी छवि पग पायल वारी।
प्यारी प्यारी छवि भल बिछुवनि वारी।
प्यारी प्यारी छवि पग जावक वारी।
प्यारी प्यारी छवि हंस गवनि वारी।
प्यारी प्यारी छवि भोरेपन वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर छविहूँ वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर प्यारिहुँ वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर उमा रमा वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर विधिहूँ वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर शिवहूँ वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर हरिहूँ वारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी प्यारी छवि पर श्यामहुँ वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर नित्य सिद्ध वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर अवतारी वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर ब्रजनारी वारी।
प्यारी प्यारी छवि पर को जो नहिं वारी।
प्यारी प्यारी छवि लखि 'कृपालु' वारी॥

51

(नथवारी रंगीली...)

प्यारी राधा रानी ब्रज रस की खानी।
त्रिभुवन दानी की भी दानी।
जेहि ब्रह्म श्याम स्वामिनि मानी।
जग प्रकटावति राधा रानी।
जग का पालन कर महरानी।
जग संहारिणि राधा रानी।
अग जग व्यापक राधा रानी।
सब उर पुर बस राधा रानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अन्तर्यामिनि मम महरानी।
जग का नियमन कर ठकुरानी।
चेतन की चेतन महरानी।
जो दिव्य प्रेम रस की खानी।
सुख को दे सुख राधारानी।
निज छवि लखि मोहित महरानी।
ब्रजरस बाँटति ब्रज महरानी।
गहवर वन विहरति महरानी।
महरानी सम छवि महरानी।
विहरति वृन्दावन ठकुरानी।
रस बोरी भोरी महरानी।
दीनन रस दानी ठकुरानी।
पतितन अपनावति महरानी।
सुनि क्रन्दन भाजति महरानी।
करुणा वरुणालय ठकुरानी।
बिनु हेतु सनेहिनि महरानी।
हैं अधम उधारनि महरानी।
हैं महाभाव राधा रानी।
मादन रस युत राधा रानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अवतारी श्री राधारानी।
ह्लादिनी शक्ति राधा रानी।
कोटिन कमलादि नौकरानी।
चह पद रज ब्रह्माणी बानी।
जाकर चाकर सारँग पानी।
हरिहूँ मन हर राधा रानी।
हरिहूँ अवराधे ठकुरानी।
गोलोक स्वामिनी ठकुरानी।
वेदहुँ महिमा नहिं सक जानी।
महिमा ललितादिक सखि जानी।
सखि कृपा जान कोउ महरानी।
हैं ब्रह्म प्रतिष्ठा ठकुरानी।
जगदीश्वर हूँ कर अगवानी।
मनुहार करत सारँग पानी।
पग चापे ब्रह्म चक्रपानी।
जाके डर डरे चक्रपानी।
पग धरें मुकुट सारँग पानी।
गावें हरि नित गुन महरानी।
ध्यावें हरि नित छवि ठकुरानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चूमें हरि चरनन महरानी।
आरती करें साराँग पानी।
कर जय जयकार चक्रपानी।
हरि लख अपलक छवि महरानी।
जय जय 'कृपालु' राधारानी॥

52

(हैं बाँको सुन्दर...)

प्यारी प्यारी सुकुमार, भोरी भारी सरकार।
हैं कृपा रूप साकार, सोइ मम वृषभानु दुलार॥
जेहि कहति ब्रह्म श्रुति चार, सोइ अलबेली सरकार।
जो प्रेम रूप रस सार, सोइ मम वृषभानु दुलार॥
जेहि चाकर नंदकुमार, जेहि रिझवत नित रिझवार।
बनि मालिनि योगिनि नार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
पग चापत नंदकुमार, पुनि पुनि कर जय जयकार।
लखि लालिहिं कह बलिहार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
हैं दीनबन्धु सरकार, पतितन अपनावनि हार।
जेहि डर डर नंदकुमार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सत चित सुख घन तन धार, तनु दामिनि दुति अनुहार।
जो किय सोरह श्रृंगार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
सँग रह लख लख ब्रज नार, कर नित नव नव श्रृंगार।
देखत नित युगल विहार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
आज्ञा लै भानुदुलार, धरि मुकुट चरण सरकार।
कर सरस रास रिझवार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
धरि अगनित तनु रिझवार, नहिं पायो प्यारिहिं पार।
याचत पद रज सुकुमार, सोइ मम वृषभानुदुलार॥
राधा 'रा' सुनि रिझवार, भाजत तहँ नंदकुमार।
राधा पर सर्वस वार, सोइ मम 'कृपालु' सरकार॥

53

(नथवारी रंगीली...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बरसाने वारी प्यारी जू पै वारी वारी।
जापै वारी ब्रह्म बनवारी जायँ वारी।
प्यारी सत चित आनँद घन वारी।
प्यारी तन चित घन सुख घन वारी।

प्यारी तनु दुति पर दामिनि वारी।
प्यारी छवि पर अगनित विधि वारी।
प्यारी छवि पर अगनित हरि वारी।
प्यारी छवि पर अगनित हर वारी।
प्यारी जू पै अगनित वानी वारी।
प्यारी छवि पर कोटि रमा वारी।
प्यारी छवि पर कोटि उमा वारी।
प्यारी छवि पर अरुंधती वारी।
प्यारी छवि पर अनसूया वारी।
प्यारी छवि पर कोटि काम वारी।
प्यारी छवि पर अगनित रति वारी।
प्यारी छवि पर सनकादिक वारी।
प्यारी जू पै अगनित ब्रजनारी वारी।
प्यारी छवि लखि साक्षात् छवि वारी।
COPYRIGHT
प्यारी छवि लखि जायँ प्यारिहुँ वारी।
RADHA GOVIND SAMITI
प्यारी जू हैं मूरति ब्रज रस वारी।
प्यारी जू हैं मादन रति रस वारी।
प्यारी जू हैं सोरह सिंगार वारी।
प्यारी जू के दृग पर मृग दृग वारी।

प्यारी जू की नासा पर शुक वारी।
प्यारी जू के मुख पर शशि गन वारी।
प्यारी दशनन पर दाड़िम वारी।
प्यारी अधरन पर बिंबहिं वारी।
प्यारी ग्रीवा पर कपोत वारी।
प्यारी कटि पर केहरि कटि वारी।
प्यारी चरनन पर प्रवाल वारी।
प्यारी पद नख पर दस शशि वारी।
प्यारी रोम रोम पर रस वारी।
प्यारी मतवारी गति पर गज वारी।
प्यारी मृदु बोलनि पर पिक वारी।
प्यारी छवि पर ब्रज परिकर वारी।
प्यारी छवि पर नित्य सिद्ध वारी।
प्यारी छवि पर शुक शौनक वारी।
प्यारी छवि पर वेद ऋचन वारी।
प्यारी छवि पर शुद्ध बुद्ध वारी।
प्यारी छवि पर ज्ञानीजन वारी।
प्यारी छवि पर योगीजन वारी।
प्यारी छवि पर ब्रह्मलीन वारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

प्यारी छवि पर परमहंस वारी।
प्यारी छवि पर हौं 'कृपालु' वारी॥

54

(नीको लागे...)

बलि बलि अलबेली सरकार।
सिंहासन बैठी सुकुमार।
चापत चरनन नंदकुमार।
विधि हरि हर कर जय जय कार।
आनँद घन तन भानुदुलार।
चंपक वरन गौर सरकार।
श्यामा ब्रह्म सगुण साकार।
श्यामा स्वामिनि नंदकुमार।
ब्रजरस नित बाँटति सुकुमार।
पियत सखिन सँग पिय रिझवार।
सखि किय तनु सोरह शृंगार।
सखि कह बार बार बलिहार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्यामा प्रेम रूप रस सार।
अनुपम शोभा सिंधु अपार।
सब सुवासि वासित जल धार।
तासों मज्जन किय सुकुमार।
लेप अरगजा तनु बलिहार।
गोरे तनु नीलाम्बर धार।
उर कंचुकि कुसुंभि रंग धार।
सिर पर चूनरि जरिन किनार।
तेल फुलेलन केश सँवार।
माँग भरी सिंदूर निहार।
बिन्दी इंदु भाल अरुणार।
कजरारे दृग काजर डार।
सुरमा सुघर दृगन लिय डार।
अधर कपोल राग अरुणार।
बीरी पान दशन अरुणार।
चिबुक एक तिल भल बलिहार।
गल मणि मुक्तन हीरन हार।
अंग अंग आभूषण धार।
दोउ कर मेंहदी अरुण सँवार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

चरण मिहावरि अरुण निहार।
लाजति छवि लखि छवि सुकुमार।
लखि शृंगार लजत शृंगार।
इकटक लगी टकटकि रिझवार।
सखि सँग आरति कर रिझवार।
धन्य धन्य वृषभानुदुलार।
धन्य धन्य ब्रजराजकुमार।
धन्य धन्य सिगरी ब्रजनार।
धन्य 'कृपालुहुँ' करु सुकुमार॥

55

(हैं बाँको सुन्दर...)

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

भज मन राधा राधा, रस प्रेम सुधा राधा।
ब्रजरस वारिधि राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
भज सुर नर मुनि राधा, भज विधि हरि हर राधा।
भज ब्रह्म श्याम राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
हैं महाभाव राधा, ह्लादिनी शक्ति राधा।

हैं ब्रह्म रूप राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
हैं रसिकन धन राधा, हैं जीवन धन राधा।
हैं मोहन धन राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
हैं कृपामयी राधा, हैं प्रेममयी राधा।
हैं श्याममयी राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
गति गजगामिनि राधा, छवि अभिरामिनि राधा।
तनु दुति दामिनि राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
गाइय गुन गन राधा, ध्याइय नित छवि राधा।
सुमिरिय लीला राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
पिय चापत पग राधा, पिय रिझवत नित राधा।
पिय रोम रोम राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
चितघन सुखघन राधा, आनँदघन तन राधा।
चंपक वरनी राधा, सोइ मम स्वामिनि राधा॥
जो भज राधा राधा, तेहि अपनावति राधा।
दें प्रेम सुधा राधा, सोइ मम 'कृपालु' राधा॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

56

(हैं बाँको सुन्दर...)

मन करु सुमिरन राधा, हैं जीवन धन राधा।
श्यामहुँ स्वामिनि राधा, जय जयति जयति राधा॥
गहु चरण शरण राधा, भव बाधा हर राधा।
चह हरिहुँ कृपा राधा, जय जयति जयति राधा॥
तेरी गति हैं राधा, तेरी मति हैं राधा।
तेरी रति हैं राधा, जय जयति जयति राधा॥
रटु नित्य नाम राधा, नित गाउ गुनन राधा।
नित ध्यावहु छवि राधा, जय जयति जयति राधा॥
मन ते सुमिरहु राधा, रसना ते रटु राधा।
सब में लखु श्री राधा, जय जयति जयति राधा॥
जो सुमिरत नित राधा, वाको रक्षति राधा।
वा पाछे चल राधा, जय जयति जयति राधा॥
देखहु तो छवि राधा, सुनु तो बैनन राधा।
परसहु तो पद राधा, जय जयति जयति राधा॥
सूँघहु तो पद राधा, लो रस पद रज राधा।
सोचहु तो नित राधा, जय जयति जयति राधा॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हरि नैनन बस राधा, हरि उर बिच बस राधा।
हरि रोम रोम राधा, जय जयति जयति राधा॥
हरि आगे लख राधा, हरि पाछे लख राधा।
हरि जित लख तित राधा, जय जयति जयति राधा॥
हरि गाव मुरलि राधा, हरि आधा बिनु राधा।
हरि देह प्राण राधा, जय जयति जयति राधा॥
बाहर गोरी राधा, भीतर श्यामल राधा।
दोऊ एक श्याम राधा, जय जयति जयति राधा॥
आगे चल मम राधा, हरि पाछे चल राधा।
हरि पाछे सखि राधा, जय जयति जयति राधा॥
विधि हरि हर भज राधा, भज उमा रमा राधा।
भज ब्रज बनितन राधा, जय जयति जयति राधा॥
बरसाने में राधा, वृंदावन में राधा।
मनगढ़ में भी राधा, जय जयति जयति राधा॥
सब जग में भी राधा, जीवों में भी राधा।
भक्तों में भी राधा, जय जयति जयति राधा॥
नास्तिक में भी राधा, आस्तिक में भी राधा।
जड़ जंगम में राधा, जय जयति जयति राधा॥
भज ज्ञानी जन राधा, भज योगी जन राधा।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

भज कर्मी जन राधा, जय जयति जयति राधा॥
जग सृष्टि करें राधा, जग पालन कर राधा।
जग प्रलय करें राधा, जय जयति जयति राधा॥
करुणावतार राधा, रस प्रेम सार राधा।
राधा समान राधा, जय जयति जयति राधा॥
अवढर दानी राधा, ब्रजरस खानी राधा।
ब्रज ठकुरानी राधा, जय जय 'कृपालु' राधा॥

❀❀❀

(हैं बाँको सुन्दर...)

जय हो जय हो जय हो राधा,
जय हो जय हो जय हो राधा।
जय हो जय हो जय हो राधा,
जय हो जय हो जय हो राधा॥
पूरब पश्चिम राधा, उत्तर दक्षिण राधा।
ऊपर नीचे राधा, जहँ देखो तहँ राधा॥
सोवहु सुमिरहु राधा, जागहु सुमिरहु राधा।
गावहु सुमिरहु राधा, नित ही सुमिरहु राधा॥

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

57

(नीको लागे...)

मन भाये राधारानी छवि अभिराम।
मन भाये राधारानी नाम सुख धाम।
मन भाये राधारानी दिव्य गुण ग्राम।
मन भाये राधारानी लीला ललाम।
मन भाये राधारानी बरसानो धाम।
मन भाये राधारानी सखि ब्रजबाम।
मन भाये कनक मुकुट अभिराम।
मन भाये मुकुट मणिन छविधाम।
मन भाये चन्द्रिका चमक अभिराम।
मन भाये शीशफूल शीश ललाम।
मन भाये सिर सेन्दुर छविधाम।
मन भाये सिर चुनरी अभिराम।
मन भाये घुँघुरारी वेणी ललाम।
मन भाये भाल बिंदी अभिराम।
मन भाये रतनारे दृग रस धाम।
मन भाये मतवारे दृग अभिराम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन भाये दृग चितवनि अभिराम।
मन भाये कर्ण कर्णफूल छवि धाम।
मन भाये नासा नथ अभिराम।
मन भाये बेसर छवि छविधाम।
मन भाये अरुण अधर रस धाम।
मन भाये मृदु मुसुकनि अभिराम।
मन भाये कंकन कनक ललाम।
मन भाये पहुँची छवि अभिराम।
मन भाये बाजूबंद ललाम।
मन भाये अँगुरिन मुँदरी ललाम।
मन भाये कर लाली मेहँदी ललाम।
मन भाये गर लर दुलरी ललाम।
मन भाये गर लर तिलरी ललाम।
मन भाये मणिन हार उर धाम।
मन भाये उर कंचुकि अभिराम।
मन भाये नील वसन छविधाम।
मन भाये कटि किंकिनि अभिराम।
मन भाये किंकिनि धुनि अभिराम।
मन भाये नूपुर कनक ललाम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मन भाये नूपुर धुनि अभिराम।
मन भाये बिछुवनि छवि छविधाम।
मन भाये पग नख दुति अभिराम।
मन भाये जावक अरुण ललाम।
मन भाये गति मति रति अभिराम।
मन भाये मो 'कृपालु' स्वामिनि श्याम॥

58

(हैं बाँको सुन्दर...)

मम स्वामिनि श्यामा भाम, जाकर चाकर घनश्याम।
प्रकटीं बरसानो धाम, जो दिव्य धाम अभिराम॥
श्यामा जू छवि रस धाम, लाजति लखि छवि छविधाम।
वृन्दावन लीला धाम, कर नित्य रास सँग श्याम॥
सोरह शृंगार ललाम, लखि तनु सुधि भूलें श्याम।
तनु चिदानंद सुखधाम, सँग कोटि कोटि ब्रजबाम॥
वारौं कोटिन रति काम, बरसावति रस ब्रजधाम।
ललितादिक लख लख बाम, सेवत नित आठों याम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नहिँ भुक्ति मुक्ति मन काम, नहिँ चह बैकुण्ठहुँ धाम।
चह स्वामिनि बनि ब्रजबाम, सेवहुँ तोहिँ आठों याम॥
तव शरणागत ह्वै श्याम, रिझवत तोहिँ आठों याम।
कभु बनि मनिहारिनि श्याम, कभु बनि लिलिहारिनि बाम॥
मानिनिहिं मनावत श्याम, रोवत सिर धरि तव पाम।
तव लखत भौंह अविराम, डरपत तव डर घनश्याम॥
चापत नित तव युग पाम, निज भाग मानि बड़ श्याम।
तव डगर बुहारत श्याम, बोलत जय जय लै नाम॥
राधा राधा वसु याम, मुरली महँ गावत श्याम।
दसहूँ दिसि देखत श्याम, राधा छवि आठों याम॥
सोइ देहु प्रेम निष्काम, जेहि दिये सबहिं ब्रजबाम।
तजि सब 'कृपालु' जग काम, ध्यावूँ तोहिँ गावूँ नाम॥

59

RADHA GOVIND SAMITI

(नथवारी रंगीली...)

मेरी प्यारी प्यारी प्यारी बरसाने वारी।
मेरी प्यारी ब्रजरस बरसाने वारी।

मेरी प्यारी हरिहूँ को तरसाने वारी।
मेरी प्यारी ब्रजनारी हरषाने वारी।
मेरी प्यारी नटवर को नचाने वारी।
मेरी प्यारी नटवर को डराने वारी।
मेरी प्यारी सुखघन को रुलाने वारी।
मेरी प्यारी आनँदघन तन वारी।
मेरी प्यारी तनु दुति दामिनि वारी।
मेरी प्यारी छवि अभिरामिनि वारी।
मेरी प्यारी छवि रति को लजाने वारी।
मेरी प्यारी छवि छवि को लजाने वारी।
मेरी प्यारी सिर कनक मुकुट वारी।
मेरी प्यारी घुँघुरारी वेणी वारी।
मेरी प्यारी सिर शीशफूल वारी।
मेरी प्यारी सिर चन्द्रकला वारी।
मेरी प्यारी भाल लाल बिन्दी वारी।
मेरी प्यारी कानन कुंडल वारी।
मेरी प्यारी कजरारी अँखियन वारी।
मेरी प्यारी मतवारी अँखियन वारी।
मेरी प्यारी रतनारी अँखियन वारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी प्यारी नासा बेसर वारी।
मेरी प्यारी नथ लर मोतिन वारी।
मेरी प्यारी अति अरुण अधर वारी।
मेरी प्यारी प्यारी दशनन दुति वारी।
मेरी प्यारी प्यारी मृदु मुसकनि वारी।
मेरी प्यारी प्यारी मृदु बोलनि वारी।
मेरी प्यारी कनकन कंकन वारी।
मेरी प्यारी दोउ कर चूरिन वारी।
मेरी प्यारी दोउ कर पहुँची वारी।
मेरी प्यारी दोउ कर मेहँदी वारी।
मेरी प्यारी अँगुरिन मुँदरिन वारी।
मेरी प्यारी गर मणिमाला वारी।
मेरी प्यारी मोतिन माला वारी।
मेरी प्यारी अरुणारी कंचुकि वारी।
मेरी प्यारी तनु नीलांबर वारी।
मेरी प्यारी कर मणि कंकण वारी।
मेरी प्यारी दोउ पग पायल वारी।
मेरी प्यारी अँगुरिन बिछुवनि वारी।
मेरी प्यारी दोउ पग जावक वारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी प्यारी पद नख मणि दुति वारी।
मेरी प्यारी छवि पर पिय छवि वारी।
मेरी प्यारी छवि पर वारी प्यारी वारी।
मेरी प्यारी छवि पर हौं 'कृपालु' वारी॥

60

(जोइ नंदनंदन सोइ वृन्दावन)
मेरी प्यारी राधे बरसाने वारी राधे।
भानुदुलारी सुकुमारी प्यारी राधे।
सुधि लो हमारी नथवारी प्यारी राधे।
तुम हो 'कृपालु' मम प्राण प्यारी राधे॥

61

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी राधारानी, हैं ब्रज रस की खानी,
ठाकुर की ठकुरानी, वृन्दावन रजधानी।
त्रिभुवन दानिहुँ दानी, श्यामहुँ स्वामिनि मानी,
हौं रसिक कृपा जानी, राधा अवढर दानी।

62

(तू ही तू ही..)

मेरी राधे मेरी राधे मेरी प्यारी राधे,
तोहिं तजि जाउँ कित तू ही बता दे।
तेरी माया ने भुलाया मोहि प्यारी राधे,
तूने क्यों भुलाया मोहिँ नेकु बता दे।
पूत तो कुपूत हौंय जग में भी राधे,
माता क्या कुमाता भई कोई बता दे।
मायावश भूलूँ भी जो मैं तोहिं राधे,
तू तो जनि भूलेहु मोहिं भुला दे।
मैं हूँ मायाधीन तू है मायाधीश राधे,
माया को भगा दे मायातीत बना दे।
तेरी टेढ़ी भौंह लखि काँपे ब्रह्म राधे,
मेरी माया को भी सोई भौंह दिखा दे।
जाको तू जना दे सोई जाने तोहिं राधे,
बिनु तेरी कृपा कोई जाना हो बता दे।
बिनु तोहिं जाने कैसे माने तोहिं राधे,
बिनु माने होय कैसे प्यार बता दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जग शिशु मुख माँ चुवा दे पय राधे,
तू भी ब्रजरस इक बूँद पिला दे।
तू तो है पतित पावनि प्यारी राधे,
मोसो है पतित कौन तू ही बता दे।
जानि के पतित पावनि तोहिं राधे,
किये मनमाने पाप मोहिं दोष का दे।
तू तो बिनु हेतु सनेहिनि राधे,
साधन बिनु ही साध्य दिला दे।
कृपा करु कृपा करु कृपामयी राधे,
और कछु ना दे राधे प्रेम सुधा दे।
गोपी प्रेम देहि गोपी प्रेम देहि राधे,
भुक्ति मुक्ति बैकुण्ठ सुख आदि ना दे।
तेरा सुख मेरा सुख बनि जाय राधे,
निज सुख काम मेरे मन ते मिटा दे।
गुरु ने जनाया जाना माना नहिं राधे,
भोरी भारी प्यारी प्यारी छवि दिखला दे।
ध्यावे नित युगल विहार मन राधे,
छनहुँ न भूले मन ऐसा बना दे।
इत तो तू कह आजा शरण में राधे,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उत मेरे पाछे निज माया को लगा दे।
अब लौं रहा मन छत्तिस राधे,
अब याय तिरसठ अंक बना दे।
सदा ते ही माना मैंने मेरी भी तू राधे,
अब 'ही' लगा दे राधे, 'भी' को हटा दे।
माया वश भी हो करे पाप भी न राधे,
ऐसा कोई हुआ हो तो नाम बता दे।
माया ते तो हारे विधि हरि हर राधे,
मेरी है बिसात कहा तू ही बता दे।
माँगा भीख लख चौरासी द्वार राधे,
सब थे भिखारी पुनि मोहिं भीख का दे।
तू ही मेरी थी है तू ही रहेगी भी राधे,
चाहे मोहिं अपनाये चाहे ठुकरा दे।
प्यारी बरसाने वारी भोरी भारी राधे,
निज दासी दासी दासी दासी बना दे।
सारा जग जाने मोहिं तेरी दासी राधे,
जग को मिटा दे भ्रम दासी बना दे।
मैं भी तेरा मेरा सब कुछ तेरा राधे,
जब सब कुछ तेरा तब तोहिं का दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू तो देना देना जाने दयामयी राधे,
ले के जो दे जग व्यापार बता दे।
तू चाहे आवे चाहे नहिं आवे राधे,
रो रो के बुलाया करूँ ऐसी बना दे।
स्वर्ग सुख ना दे अपवर्ग सुख ना दे,
गोपीजन ते गोपी प्रेम दिला दे।
राधे राधे गावूँ नित ध्यावूँ नित राधे,
पुनि चाहे नरकहुँ वास दिला दे।
बिगरी बनाने वारी मेरी प्यारी राधे,
नर तनु बीता जाय बिगरी बना दे।
ब्रजरस बरसाने वारी प्यारी राधे,
ब्रजरस की इक बूँद पिला दे।
तू तो कृपा करे दीन जन पर राधे,
ऐसी कृपा करु मोहिं दीन बना दे।
तेरे सब सुत तो हैं खरे खरे राधे,
मुझ खोटे को भी खरे संग चला दे।
दीनबन्धु नाम ते तो आशा बँधे राधे,
भक्तवत्सल नाम मोहिं डरा दे।
जग का खिलौना दे के गई कित राधे,

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बीते युग युग अब पय तो पिला दे।
तेरी सी कठोर माँ तो जग में न राधे,
रससिंधु हो के रस बिंदु मोहिं ना दे।
काऊ सों बताऊँ न मैं साँची कहूँ राधे,
चुपके ते इक रस बूँद पिला दे।
तेरा सुत माँगे भीख द्वार द्वार राधे,
तेरी लाज जाय याते प्रेम सुधा दे।
तेरी दासी मारे तेरे सुत कहँ राधे,
उर बैठी देखे कैसी माँ है तू बता दे।
माना तू कहेगी प्रेम मैं न दउँ राधे,
काऊ गोपी ते कहि प्रेम दिला दे।
अच्छा हूँ बुरा हूँ जो हूँ तेरा ही हूँ राधे,
यदि मैं बुरा हूँ मोहिं अच्छा बना दे।
बुरे यदि होते नहिं जग महँ राधे,
अच्छों को भी अच्छा कौन कहता बता दे।
तेरे द्वार गये बड़े बड़े रंक राधे,
कोई खाली हाथ लौटा हो तो बता दे।
तू मोहिं प्यार करे या न करे राधे,
मैं तोहिं प्यार करूँ ऐसी बना दे।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

एक दिन अवशि मिलोगी मोहिं राधे,
मम उर अस विश्वास दिला दे।
तुम बिनु जीना नहिं जीना कछु राधे,
ऐसे जीने ते तो मोहिं मौत दिला दे।
जग में बने बने के साथी सब राधे,
बिगरे का तुम बिनु कौन बता दे।
तेरी महिमा को श्रुतिहुँ ना जाने राधे,
माँगे वर काउ गोपी दासी बना दे।
अपनी ओर टुक हेरो प्यारी राधे,
हमरी 'कृपालु' सब बिगरी बना दे।

63

(नथवारी रंगीली...)

मेरी राधा रानी रस की खानी।
मेरी राधा रानी अवढर दानी।
वृंदावन की हैं महरानी।
ठाकुर हूँ की हैं ठकुरानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

हैं प्रेम सुधा रस की खानी।
त्रिभुवन दानिहुँ की हैं दानी।
राधा तत्व वेद नहिं जानी।
नेति नेति कह श्रुति अनजानी।
श्यामहुँ ने निज स्वामिनि मानी।
श्यामहुँ कर जाकर अगवानी।
सिंहासन बैठीं ठकुरानी।
आरति कर तिन सारँग पानी।
तिन सुख चाहत सारँग पानी।
तिन पद रज चह सारँग पानी।
चरण पलोटत सारँग पानी।
भृकुटि तकत नित सारँग पानी।
जयति जयति कह सारँग पानी।
आरति करत भवानी वानी।
कोटिन कमला हैं नौकरानी।
ब्रह्मा अस्तुति कर महरानी।
शिव आये बनि रास शिवानी।
लाजति छवि लखि छवि ठकुरानी।
दीनबन्धु हैं राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पतित पावनी राधारानी।
अधमन अपनावति महरानी।
निर्बल की बल राधारानी।
अशरण शरण हैं राधारानी।
शरणागत रक्षक ठकुरानी।
जगत प्रकट कर राधारानी।
जग पालन कर राधारानी।
जगत प्रलय कर राधारानी।
वृन्दावन विहरति ठकुरानी।
गहवर वन विहरति महरानी।
वृन्दावन उनकी रजधानी।
दिव्य रास कर नित ठकुरानी।
ब्रजरस मिले कृपा महरानी।
येहि 'कृपालु' रस तरसत ज्ञानी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

64

(नथवारी रंगीली...)

मेरी राधा रानी हैं अवढर दानी।
जाकी श्री वृन्दावन रजधानी।
जो दिव्य प्रेम रस की खानी।
जो वृन्दावन की ठकुरानी।
जो चिन्मय रूप राशि खानी।
छवि लाजत लखि छवि महरानी।
जो बिनु कारण ब्रजरस दानी।
जो ठाकुर हूँ की ठकुरानी।
जेहि महिमा श्रुति हूँ नहिं जानी।
जाकी ब्रह्म श्याम करें अगवानी।
जेहि पद रज चह कमला वानी।
जेहि कृपा चहत सारँग पानी।
जेहि ब्रह्म श्याम स्वामिनि मानी।
जेहि शरणागत सारँग पानी।
जेहि पग धर सिर सारँग पानी।
जाके चापें पग नित सारँग पानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि पुनि बन मानिनि महरानी।
पग पकरि मनाव चक्रपानी।
जेहि डर डरपत साँरग पानी।
जेहि कर जयकार चक्रपानी।
जेहि लखि मुर्छित साँरग पानी।
जो पतित पावनी महरानी।
जो दीनन रक्षक ठकुरानी।
जो प्रणत प्रेम रस की दानी।
अति कृपामयी राधारानी।
भोरी भारी राधारानी।
सरलातिसरल राधारानी।
मोहन मोहिनि राधारानी।
झर रोम रोम रस महरानी।
विधि हरि हर निज स्वामिनि मानी।
करुणा मूरति राधा रानी।
कारुण्यामृत तनु राधा रानी।
तारुण्यामृत तनु राधा रानी।
लावण्यामृत तनु राधा रानी।
प्रेमाधिष्ठात्री महरानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कोमल ते कोमल महरानी।
नहिं लख जन अवगुन महरानी।
वनचरिन सखिन किय ठकुरानी।
रस को दे रस अस महरानी।
जग जननी हैं राधारानी।
जग व्यापक हैं राधारानी।
जग ते अतीत राधारानी।
जग की रक्षक राधारानी।
दासी 'कृपालु' कर ठकुरानी॥

65

(नथवारी रंगीली...)

मेरी राधारानी राधारानी राधारानी।
मेरी महरानी ठकुरानी ब्रजरानी।
प्रकटीं बरसाने महरानी।
किय कौन सुकृत कीरति रानी।
जो भईं मैया राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

किय भानु कौन तप नहिं जानी।
जो भये बाबा राधारानी।
ललितादि सुकृत को सक जानी।
जो बनी सखी राधारानी।
जो सेवति नित राधारानी।
जेहि महिमा श्रुतिहूँ नहिं जानी।
कह नेति नेति श्रुति निज वानी।
तेहि पय पिवाय कीरति रानी।
नित उर लगाव कीरति रानी।
दुलरावति नित कीरति रानी।
जेहि डर डरपत सारँग पानी।
तेहि डरपावति कीरति रानी।
जेहि कृपा चहत सारँग पानी।
तेहि बाँधति कर कीरति रानी।
जो हैं जग जननी महरानी।
तेहि कुँवरि कहति कीरति रानी।
नहिं जाय समाधिहुँ ठकुरानी।
सोइ गोद चहति कीरति रानी।
जो सब जग पालति महरानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सोइ माँग नवनि कीरति रानी।
जेहि अस्तुति कर नित श्रुति वानी।
तेहि डाँटति नित कीरति रानी।
हैं शक्ति ह्लादिनी महरानी।
हैं कृपा शक्ति राधारानी।
हैं प्रेम सुधा निधि महरानी।
हैं ब्रजरस अंबुधि ठकुरानी।
जाकर चाकर साराँग पानी।
जेहि ब्रह्म श्याम स्वामिनि मानी।
जब चलति सवारी ठकुरानी।
तब ब्रह्म श्याम कर अगवानी।
जब चलति सखिन सँग महरानी।
हरि कह जय जय जय ठकुरानी।
सोरह सिंगार लखि महरानी।
मुर्छित छिति गिर साराँगपानी।
जेहि भृकुटि तकत साराँगपानी।
जेहि रिझवत नित साराँगपानी।
जेहि पद रज चह साराँगपानी।
तेहि हौं 'कृपालु' स्वामिनि मानी।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

66

(तू ही तू ही..)

मेरी राधा रानी प्रेम रूप रस खानी,
मेरी राधा रानी वृंदावन ठकुरानी।
सत चित आनँद घन राधारानी,
जैसी राधारानी वैसी तनु राधारानी।
तप्त सुबरन सम तनु राधारानी,
रोम रोम ब्रजरस चुये राधारानी।
ध्यावें नित ब्रह्म श्याम छवि राधारानी,
गावें मुरलि में गुनगन राधारानी।
आधा माने आपु श्याम बिनु राधारानी,
प्राण पाछे मानें आगे मानें राधारानी।
राधा राधा राधा राधा रटें चक्रपानी,
आधा पलहूँ न कल बिनु राधारानी।
श्याम माने निज स्वामिनि राधारानी,
श्याम रोम रोम बोले नाम राधारानी।
जहँ कहुँ कोउ बोले मेरी राधारानी,
भाजे भाजे जायँ तहँ सारँग पानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जहँ जहँ पग धरें मेरी राधारानी,
तहँ तहँ सिर धरें सारँग पानी।
जब निकले सवारी ब्रज राधारानी,
सारँग पानी करें अगवानी।
जब बैठें सिंहासन राधारानी,
नीचे बैठि चापें पग सारँग पानी।
चलें जब रास हित सारँग पानी,
धरें मुकुट उतारि पग राधारानी।
श्याम राखें सोइ रुचि जोइ राधारानी,
नित तकत रहत भौंह चक्र पानी।
जाके डर डरे डर सो हैं चक्रपानी,
सोऊ जाके डर डरे सो हैं राधारानी।
श्याम लखि सोरहों सिँगार राधारानी,
पुनि पुनि कहैं बलिहार राधारानी।
सखि सँग जब चलें मेरी राधारानी,
जय हो जय हो जय हो कहें सारँग पानी।
लाजे छवि हूँ लखि छवि राधारानी,
मोहे आपु निज छवि लखि राधारानी।
राधा रानी पटतर हैं राधारानी,
तुमहूँ 'कृपालु' बनु सखि राधारानी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

67

(नीको लागे...)

मेरो धन राधा जू को नाम।
मेरो धन राधा को गुण ग्राम।
मेरो धन राधा छवि अभिराम।
मेरो धन राधा लीला ललाम।
मेरो धन राधा को दिव्य धाम।
मेरो धन राधा जन रज पाम।
जग भज ब्रह्म श्याम सुख धाम।
राधा राधा भज नित श्याम।
रोम रोम कह राधा नाम।
विधि हरि हर जप राधा नाम।
उमा रमा जप राधा नाम।
सबै स्वांश जप राधा नाम।
विभिन्नांश जप राधा नाम।
राधा नाम जपत नित श्याम।
राधा गुन गावत नित श्याम।
राधा लीला सुन नित श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधा धाम जात नित श्याम।
राधा जन को जन नित श्याम।
राधा को स्वामिनि कह श्याम।
राधा को आत्मा कह श्याम।
राधा नाम सुनत भज श्याम।
राधा जीवन मानत श्याम।
राधा मान मनावत श्याम।
राधा लाड़ लड़ावत श्याम।
राधा बिनु आधा रस श्याम।
राधा कृपा चहत नित श्याम।
राधा अगवानी कर श्याम।
राधा की जय बोलत श्याम।
राधा डगर बुहारत श्याम।
राधा पग जहँ तहँ सिर श्याम।
राधा महल टहल चह श्याम।
राधा को रिझवत नित श्याम।
राधा पग चापत नित श्याम।
राधा पद रज सिर धर श्याम।
राधा भृकुटि तकत नित श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधामय देखत जग श्याम।
राधा लखि मुर्छित हों श्याम।
राधा की कर आरति श्याम।
राधा 'रा' सुनि भाजत श्याम।
राधा शक्ति ह्लादिनी श्याम।
राधा शक्तिहिँ जग रच श्याम।
राधा शक्तिहिँ पालत श्याम।
राधा को ऋणियाँ कह श्याम।
राधा तजि जो पूजत श्याम।
सो 'कृपालु' अपराधी श्याम।

68

(हैं बाको सुन्दर...)
COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI
मोरी वृषभानु दुलार, भोरी भारी सुकुमार।
जेहि चाकर नंदकुमार, मम अलबेली सरकार॥
सत चित सुख घन तनु धार, गौरिहुँ गोरी सुकुमार।
जेहि परिकर सब ब्रजनार, मम सोइ स्वामिनि सरकार॥

छवि कनक मुकुट छविदार, सिर शीशफूल बलिहार।
भल चारु चंद्रिका धार, वेणिहुँ लिये सुमन सँवार॥
भल मोतिन माँग सँवार, बिंदी अरुणार लिलार।
काजर नैनन कजरार, चितवनि बह ब्रजरस धार॥
श्रुति कर्ण फूल रतनार, नासा नथ बेसर धार।
मृदु मुसकनि मधुर निहार, लखि को न जाय बलिहार॥
गर मणिन मोतियन हार, कर मणिमय कंकण धार।
पहुँची चूरी छविदार, भुज बाजूबंद निहार॥
सिर चूनरि जरिन किनार, उर कंचुकि छवि छविदार।
नीलांबर पर बलिहार, कटि मणिमय किंकिणि धार॥
मणिमय पायल पग धार, बिछुवनि छवि अति छविदार।
दोउ पग जावक अरुणार, नख सिख सोरह शृंगार॥
वधि हरि हर कर जयकार, स्वागत कर नंदकुमार।
आरति कर सब ब्रजनार, हौं कह 'कृपालु' बलिहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

69

(नथवारी रंगीली...)

वारी भोरी भारी बरसाने वारी प्यारी।
वारी ब्रजरस बरसाने वारी प्यारी।
वारी सत चित आनँद घन प्यारी।
वारी आनँद घन तन वारी प्यारी।
वारी सिर कनक मुकुट वारी प्यारी।
वारी सिर चंद्रकला वारी प्यारी।
वारी सिर चूनरि छवि वारी प्यारी।
वारी कारी कारी घुँघुरारी लट प्यारी।
वारी कानन कुंडल वारी प्यारी।
वारी भाल लाल बिंदी छवि वारी प्यारी।
वारी कजरारी अँखियन वारी प्यारी।
वारी मतवारी अँखियन वारी प्यारी।
वारी बड़ी बड़ी अँखियन वारी प्यारी।
वारी प्यारी प्यारी चितवनि वारी प्यारी।
वारी नासा बेसर वारी प्यारी।
वारी नथ मोतिन लर वारी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वारी मुख दशनन दुति वारी प्यारी।
वारी मुरि मृदु मुसकनि वारी प्यारी।
वारी कर मणि कंकण वारी प्यारी।
वारी करपत्र चुरी वारी प्यारी।
वारी दोउ कर पहुँची वारी प्यारी।
वारी भुज बाजूबंद वारी प्यारी।
वारी दोउ कर मेहँदी वारी प्यारी।
वारी अँगुरिन मुँदरिन वारी प्यारी।
वारी गर मोतिन लर वारी प्यारी।
वारी दुलरी तिलरी वारी प्यारी।
वारी उर कंचुकि छवि वारी प्यारी।
वारी तनु नीलांबर वारी प्यारी।
वारी कटि मणि किंकिणि वारी प्यारी।
वारी पग मणि नूपुर वारी प्यारी।
वारी पग बिछुवनि छवि वारी प्यारी।
वारी पग जावक छवि वारी प्यारी।
वारी पद नख मणि दुति वारी प्यारी।
वारी सोरह सिँगार वारी प्यारी।
वारी अगनित रति छवि वारी प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वारी वारी छवि को लजाने वारी प्यारी।
वारी बनवारी छवि लखि वारी प्यारी।
वारी छवि लखि बरसाने वारी प्यारी।
वारी वारी ब्रज नारी लखि वारी प्यारी।
वारी हौं 'कृपालु' पुनि पुनि वारी प्यारी॥

70

(हैं बाको सुन्दर...)

वो बरसाने वारी, मनमोहन मन हारी।
तू दीनन हितकारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥
वो मादन रस वारी, हरि कर तव मनुहारी।
आरति कर ब्रजनारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥
वो सुखघन तन वारी, प्यारी भोरी भारी।
सुकुमारहुँ सुकुमारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥
वो गौर बरनि वारी, तव छवि पर छवि वारी।
तोहिं जान न श्रुति चारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥
वो चंद्रकला वारी, वारी लखि बनवारी।
कह पुनि पुनि बलिहारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वो शीशफूल वारी, तोहि ध्यावत बनवारी।
सेवत नित ब्रजनारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥
वो सिर चूनरि वारी, तोपर हरि हर वारी।
सँग लख लख ब्रजनारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥
वो नथ बेसर वारी, तव चाकर बनवारी।
स्वागत कर गिरिधारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥
वो नीलांबर वारी, तू स्वामिनि बनवारी।
निज मन मोहन वारी, प्यारी प्यारी प्यारी॥
वो मृदु मुसकनि वारी, दृग चितवनि बलिहारी।
गति पर गज गति वारी, प्यारी 'कृपालु' प्यारी॥

71

(हैं बाको सुन्दर...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वो बरसाने वारी, वो सुख घन तन वारी।
वो गौर वरन वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥
वो कनक मुकुट वारी, वो चंद्रकला वारी।
वो शीशफूल वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥

वो श्रुति कुंडल वारी, वो दीर्घ दृगन वारी।
वो दृग काजर वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥
वो नासा नथवारी, वो भल बेसर वारी।
वो अरुण अधर वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥
वो दशनन दुति वारी, वो मृदु मुसुकनि वारी।
वो मृदु बोलनि वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥
वो कर कंकन वारी, वो कर चूरिन वारी।
वो कर पहुँची वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥
वो कर मेहँदी वारी, वो मणि मुँदरिन वारी।
वो वरद हस्त वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥
वो मणि माला वारी, वो मुक्त माला वारी।
वो उर कंचुकि वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥
वो नीलांबर वारी, वो मणि किंकिणि वारी।
वो पग पायल वारी, दो प्रेम सुधा प्यारी॥
वो बिछुवनि छवि वारी, वो पग जावक वारी।
वो हंस गवनि वारी, सो मम 'कृपालु' प्यारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

72

(नीको लागे...)

श्री वृन्दावन कुंज मझार।
बैठीं श्री वृषभानु दुलार।
आये तहँ झूमत रिझवार।
कह कर जोरि सुनहु सुकुमार।
एक विनय है आजु हमार।
यदि आज्ञा दे दें सरकार।
निज कर चह कर तव शृंगार।
पिय इच्छा लखि भानुदुलार।
मुसकाईं लखि नंदकुमार।
मुसकनि सों जनु कह स्वीकार।
रोम रोम हर्षित रिझवार।
तेल सुगंधित सिर पर डार।
अभिमर्दन करि केश सँवार।
गुंफन करि पुनि सुमन सँवार।
लखि रिझवार जायँ बलिहार।
वेणी अति कारी घुँघरार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जनु अलिगन मुख कमल निहार।
दिव्य सुगंध देह सुकुमार।
शीशफूल छवि शीश निहार।
मणिमय बिंदी इन्दु लिलार।
भृकुटि मटक लखि पिय बलिहार।
श्रुति ताटंक चपल छविदार।
लटक कपोल अलक बलिहार।
टकटकि लाग दृगन रिझवार।
नागपाश जनु पिय हित धार।
नैन नुकीले अति रतनार।
दृगन रसीले अरु अरुणार।
नैन गँसीले अरु कजरार।
कजरारे दृग काजर डार।
नासा झलमल बेसर धार।
प्यारी अधर बिंबफल वार।
दशनन दुति दामिनि दउँ वार।
चिबुक श्याम तिल श्याम निहार।
अरुणिम कंचुकि छवि छविदार।
नीलांबर झलमल बलिहार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कुंदन दुलरी तिलरी धार।
रंग बिरंगे मणि गर हार।
प्यारी गर मोतिन लर धार।
गर महँ चंद्रहार रिझवार।
कर मणिमय कंकण छविदार।
पहुँची रतन जटित बलिहार।
दोउ भुज बाजूबंद निहार।
अँगुरिन मुँदरिन दुति रिझवार।
करतल मेहँदी सुघर सँवार।
कटि मणि किंकिणि धुनि झनकार।
नूपुर धुनि सुनि नंदकुमार।
दिय पिय कोटि मुरलि धुनि वार।
युगल चरण जावक अरुणार।
प्रियतम इकटक चरण निहार।
नख शिख किय सोरह शृंगार।
लखि पिय कह पुनि पुनि बलिहार।
भाल 'कृपालु' दिठौना डार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

73

(हमारी राधेरानी रस...)

हमारे मन भाय गईं राधारानी।
हमारी राधारानी अवढर दानी।
जगत जननी जो राधारानी।
बनायो सोइ माय कीरति महरानी।
बनायो पितु भानुहिं राधारानी।
बसें बरसानो राधारानी।
बिहर वृंदावन राजधानी।
श्री राधारानी सम हैं राधारानी।
न जानी महिमा चक्रपानी।
कृपा की मूरति राधारानी।
सरल अति प्यारी राधारानी।
प्रेम रस खानी राधारानी।
सुभायन भोरी राधारानी।
रूप रस खानी राधारानी।
श्रीराधा छवि लखि छविहूँ दिवानी।
लुटावति ब्रजरस राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बने ब्रजरस हित शिव शिवानी।
सकल जग दानी हूँ की दानी।
स्वामिनी अपनी श्याम मानी।
करें अगवानी चक्रपानी।
करति जय जयकार चक्रपानी।
रहत नित रिझवत चक्रपानी।
तकति नित भृकुटिन चक्रपानी।
डरत जाके डर चक्रपानी।
चरण रज याचत चक्रपानी।
चरण चापें नित चक्रपानी।
धरत हरि सिर पग राधारानी।
लली लखि मुर्छित चक्रपानी।
टहल चह हरि महलन महरानी।
कोटि कमला याय नौकरानी।
उतारति आरति कमला वानी।
करें अस्तुति नित कोटि वानी।
बनी वनचरि सखि राधारानी।
सरल चित प्रिय नित राधारानी।
प्रणत जन प्रिय नित राधारानी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दीन जन प्रिय नित राधारानी।
पतित जन प्रिय नित राधारानी।
करुण क्रंदन प्रिय राधारानी।
'कृपालु' नहिं जैसी राधारानी।

74

(मेरे प्राणाधार हैं...)

दोउ प्राणवल्लभ प्राणनाथ श्यामा श्याम।
दोउ सत चित आनंद घन श्यामा श्याम।
दोउ दिव्य आनंद घन तन श्यामा श्याम।
दोउ नित्य रास करें वृंदावन श्यामा श्याम।
दोउ सेवक दोउ सेव्य दोउ श्यामा श्याम।
दोउ एक तत्व नाम रूप भिन्न श्यामा श्याम।
दोउ आत्मा है एक तनु भिन्न श्यामा श्याम।
दोउ ज्ञान भी है एक तनु भिन्न श्यामा श्याम।
दोउ बुद्धि भी एक तनु भिन्न श्यामा श्याम।
दोउ मन भी है एक तनु भिन्न श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दोउ है स्वभाव भिन्न अचरज श्यामा श्याम।
दोउ झगरत नित अचरज श्यामा श्याम।
दोउ परतत्व पूर्णब्रह्मरूप श्यामा श्याम।
दोउ अवतारी स्वयं भगवान श्यामा श्याम।
दोउ आवें जग एक कल्प महँ श्यामा श्याम।
दोउ सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान श्यामा श्याम।
दोउ सृष्टि के निमित्त कारण श्यामा श्याम।
दोउ सृष्टि उपादान कारण श्यामा श्याम।
दोउ सृष्टि पालक रक्षक श्यामा श्याम।
दोउ सृष्टि के प्रलय कारक श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं अधम उधारन श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं पतितन पतवार श्यामा श्याम।
दोउ पतितन हित कसें फेंट श्यामा श्याम।
दोउ हैं अकिंचन सर्वस्व श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं निर्बल के बल श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं निराधार आधार श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं दीनबंधु दीनानाथ श्यामा श्याम।
दोउ करुणा वरुणालय श्यामा श्याम।
दोउ भाजें जन क्रंदन सुनि श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दोउ ही हैं सहज सनेही श्यामा श्याम।
दोउ हैं प्रपन्नजन रक्षक श्यामा श्याम।
दोउ भक्तवत्सल भक्तवश्य श्यामा श्याम।
दोउ चलें भक्तों के पाछे पाछे श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं निज भक्त के भक्त श्यामा श्याम।
दोउ भक्त हाथ बिके बिनु दाम श्यामा श्याम।
दोउ रह नित्य प्रेम परवश श्यामा श्याम।
दोउ वाके वश जाके सरवस श्यामा श्याम।
दोउ चह शुद्ध प्रेम अश्रुधार श्यामा श्याम।
दोउ अति प्रिय प्रेम निष्काम श्यामा श्याम।
दोउ परखत हो प्रपन्न जीव श्यामा श्याम।
दोउ चह केवल मन बुधि श्यामा श्याम।
दोउ कह अति प्रिय भक्त भक्त श्यामा श्याम।
दोउ प्राण भक्त भक्त प्राण दोउ श्यामा श्याम।
दोउ कह मेरा भक्त मेरा रूप श्यामा श्याम।
दोउ कह मेरा भक्त मेरा गुरु श्यामा श्याम।
दोउ कह रमा से भी प्रिय भक्त श्यामा श्याम।
दोउ कह ब्रह्मा से भी प्रिय भक्त श्यामा श्याम।
दोउ कह शंभु से भी प्रिय भक्त श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दोउ कह दाऊ से भी प्रिय भक्त श्यामा श्याम।
दोउ कह प्राण से भी प्रिय भक्त श्यामा श्याम।
दोउ मूर्तिमान दिव्य ब्रजरस श्यामा श्याम।
दोउ आनंदकंद ब्रज चंद श्यामा श्याम।
दोउ स्वामी सखा सुत प्रियतम श्यामा श्याम।
दोउ करें होड़ कृपा में नित श्यामा श्याम।
दोउ नासें प्रणत के पाप पुण्य श्यामा श्याम।
दोउ सब जीव उर कर्म लिखें श्यामा श्याम।
दोउ सब जीव उर साक्षी श्यामा श्याम।
दोउ पाप पुण्य कर्मफल देयँ श्यामा श्याम।
दोउ रह नित्य नाम आधीन श्यामा श्याम।
दोउ करें नित्य बिहार ब्रज श्यामा श्याम।
दोउ हैं जगत के ईश्वर श्यामा श्याम।
दोउ हैं चराचर माता पिता श्यामा श्याम।
दोउ प्रेम रूप रस सुखधाम श्यामा श्याम।
दोउ नयनाभिराम पूर्णकाम श्यामा श्याम।
दोउ अनुपम दोउ सम दोउ श्यामा श्याम।
दोउ श्यामा श्याम रस सम रस श्यामा श्याम।
दोउ श्यामा श्याम छवि सम छवि श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दोउ श्यामा श्याम प्रेम सम प्रेम श्यामा श्याम।
दोउ एकमात्र अद्वितीय ब्रह्म श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं सुख के भी सुख रूप श्यामा श्याम।
दोउ हैं रसिक दोउ रसनिधि श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं रसिक मुकुटमणि श्यामा श्याम।
दोउ हैं चकोर दोउ मुखचन्द्र श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं रसिकन रिझवार श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं रसिकन जीवन श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं गोपीजन वल्लभ श्यामा श्याम।
दोउ ब्रज युवतिन अंजन श्यामा श्याम।
दोउ ब्रज रस चुवे रोम रोम श्यामा श्याम।
दोउ ब्रह्मलीनजन मोहे मन श्यामा श्याम।
दोउ रूप निज निज मन मोहे श्यामा श्याम।
दोउ रूप माधुर्य नव नव श्यामा श्याम।
COPYRIGHT
दोउ रस क्षण क्षण वर्धमान श्यामा श्याम।
RADHA GOVIND SAMITI
दोउ कोटि कोटि काम कमनीय श्यामा श्याम।
दोउ चह दोउ सेवा आठों याम श्यामा श्याम।
दोउ राखें दोउ रुचि महँ रुचि श्यामा श्याम।
दोउ चह दोउ सुख आठों याम श्यामा श्याम।

दोउ चेतन अरु नित्य सुख श्यामा श्याम।
दोउ हैं अनंत गुणगण धाम श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं गोलोक अधिपति श्यामा श्याम।
दोउ सर्वकारण कारण श्यामा श्याम।
दोउ सर्वभूत आश्रयतत्व श्यामा श्याम।
दोउ सत्यसंकल्प सत्यकाम श्यामा श्याम।
दोउ नासें विद्या अविद्या भी श्यामा श्याम।
दोउ भक्त के त्रिताप हरें आपु श्यामा श्याम।
दोउ भक्त पंचकोश भस्म करें श्यामा श्याम।
दोउ भक्त पंचक्लेश मुक्त करें श्यामा श्याम।
दोउ भक्त को त्रिकर्म मुक्त करें श्यामा श्याम।
दोउ भक्त को द्वन्द्वातीत करें श्यामा श्याम।
दोउ भक्त को दें निज ज्ञानानंद श्यामा श्याम।
दोउ भक्त योगक्षेम वहन करें श्यामा श्याम।
दोउ भक्त को दें बिनु माँगे मुक्ति श्यामा श्याम।
दोउ भक्त पद रज धारें तनु श्यामा श्याम।
दोउ कह भक्त का पतन नहिं श्यामा श्याम।
दोउ चह एक अनन्य प्रेम श्यामा श्याम।
दोउ चह सर्वभाव भजु नित श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दोउ कह सर्वधर्म तजु भजु श्यामा श्याम।
दोउ चह कपट रहित उर श्यामा श्याम।
दोउ वृंदारकवृंदवंद्य श्यामा श्याम।
दोउ वेद वेदांत वेद्य ब्रह्म श्यामा श्याम।
दोउ श्रुति स्मृति प्रतिपाद्य ब्रह्म श्यामा श्याम।
दोउ वेदशास्त्र मृग्यमान ब्रह्म श्यामा श्याम।
दोउ श्रुति ऋचन अगोचर श्यामा श्याम।
दोउ वेद कृत वेदतत्त्ववित् श्यामा श्याम।
दोउ इन्द्रिय मन बुधि पर श्यामा श्याम।
दोउ महँ देही देह भेद नहिं श्यामा श्याम।
दोउ सब आत्मा की आत्मा हैं श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं स्वांश के भी अंशी श्यामा श्याम।
दोउ हैं विभिन्नांश अंशी श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं अद्वयज्ञानतत्व श्यामा श्याम।
दोउ रोम रोम कोटि ब्रह्माण्ड श्यामा श्याम।
दोउ सम नहिं कोउ अधिक न श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं जीव माया शासक श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं ब्रह्म की प्रतिष्ठा भी श्यामा श्याम।
दोउ ही हैं ब्रह्म निराकार योनि श्यामा श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दोउ दो विरोधी धर्म अधिष्ठान श्यामा श्याम।
दोउ मायाधीश योगमायाधीश श्यामा श्याम।
दोउ विश्वरूप विश्वपर भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ निर्विशेष दोउ सविशेष श्यामा श्याम।
दोउ बहुरूप एक रूप भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ हैं सगुण दोउ निर्गुण श्यामा श्याम।
दोउ जग में भी गोलोक में भी श्यामा श्याम।
दोउ अति लिप्त निर्लिप्त भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ सविकल्प निर्विकल्प भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ महायोगी महाभोगी हैं श्यामा श्याम।
दोउ भक्त हित अतिकोमल श्यामा श्याम।
दोउ हैं विमुख हित बज्र जनु श्यामा श्याम।
दोउ सर्वकर्ता अकर्ता भी श्यामा श्याम।
दोउ परिच्छिन्न भी हैं विभु भी हैं श्यामा श्याम।
COPYRIGHT
दोउ सापेक्ष निरपेक्ष भी हैं श्यामा श्याम।
RADHA GOVIND SAMITI
दोउ हैं सकाम निष्काम भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ हैं स्वतंत्र परतंत्र भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ हैं विभक्त अविभक्त भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ दृष्टि दृश्य भी अदृश्य भी हैं श्यामा श्याम।

दोउ हैं अजन्मा जन्मा भी श्यामा श्याम।
दोउ अति भोरे अति चतुर भी श्यामा श्याम।
दोउ अति दीन भी अदीन भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ प्राप्य दोउ अप्राप्य भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ हैं अचिन्त्य दोउ चिन्त्य भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ अज्ञेय दोउ ज्ञेय भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ निराकार दोउ साकार श्यामा श्याम।
दोउ अणु ते हैं अणु विभु भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ हैं अकाय दिव्यकाय युक्त श्यामा श्याम।
दोउ अति वीर अति भीरु भी हैं श्यामा श्याम।
दोउ नरवपु में भी व्यापक श्यामा श्याम।
दोउ नररूप लीलाधारी श्यामा श्याम।
दोउ हैं 'कृपालु' अति कृपासिंधु श्यामा श्याम॥

COPYRIGHT

75

RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

भोला भाला कह श्यामा सम श्याम।
श्यामा जू तो हैं स्वामिनि घनश्याम।

श्यामा जू को हैं सेवक घनश्याम।
श्यामा जू हैं महरानी ग्वार घनश्याम।
श्यामा जू हैं दयामयी निष्ठुर श्याम।
श्यामा जू हैं भोरी भारी नटखट श्याम।
श्यामा जू हैं दाता भिखारी घनश्याम।
श्यामा जू हैं गोरी गोरी कारो श्याम।
श्यामा जू हैं अति प्यारी प्यारो श्याम।
श्यामा जू हैं लज्जामयी निर्लज्ज श्याम।
श्यामा जू हैं सौम्य अति चंचल श्याम।
श्यामा जू हैं डोरी सोँ पतंग सोँ हैं श्याम।
श्यामा जू हैं चातकी मधुकर श्याम।
श्यामा जू हैं स्वर्ण कसौटी श्याम।
श्यामा जू हैं मोहिनि मोहित श्याम।
श्यामा जू हैं आत्मा देह सम श्याम।
श्यामा जू हैं भानुलली द्वै बाप श्याम।
श्यामा जू हैं कीर्ति लली द्वै मात श्याम।
श्यामा जू की हा हा खायँ पुनि पुनि श्याम।
श्यामा जू के चरनन चापें नित श्याम।
श्यामा जू को स्वागत करें नित श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्यामा जू के पाछे पाछे चलें नित श्याम।
श्यामा जू को मानें निज साहूकार श्याम।
श्यामा जू को ऋणियाँ मानें आपु श्याम।
श्यामा जू की आज्ञा लै करें रास श्याम।
श्यामा को बुलावो भाजे आवें आपु श्याम।
श्यामा जू के आगे भूले सिट्टी पिट्टी श्याम।
श्यामा जू के भय भयभीत होयँ श्याम।
श्यामा जू की आरती उतारें घनश्याम।
श्यामा जू की जय बोलें बार बार श्याम।
श्यामा जू की डगर बुहारें नित श्याम।
श्यामा रह महलन बन बन श्याम।
श्यामा धरें पग जहँ तहँ सिर श्याम।
श्यामा नाम पूर्व पाछे सब बोलें श्याम।
श्यामा छवि लखि मुर्छित गिरें श्याम।
श्यामा शक्ति पाके शक्तिमान बने श्याम।
श्यामा शक्ति पाके बने सुखघन श्याम।
श्यामा शक्ति पाके करें सृष्टि कर्म श्याम।
श्यामा शक्ति पाके करें पालन श्याम।
श्यामा शक्ति पाके करें प्रलयहुँ श्याम।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

श्यामा प्रेम मादन वश रह श्याम।
श्यामा की 'कृपालु' बलैयाँ लेयँ श्याम॥

76

(हैं बाको सुन्दर...)

मम ठाकुर श्यामा श्याम, दोउ पूर्णकाम अभिराम।
चिन्मय वृन्दावन धाम, लीला कर दिव्य ललाम॥
दोउ तन सुखघन अभिराम, दोउ प्रेम रूप रस धाम।
दोउ भज दोउ आठों याम, दोउ धनी प्रेम निष्काम॥
श्यामा बरसानो धाम, है श्याम धाम नँदगाम।
इक भोरी श्यामा नाम, इक नटखट हैं घनश्याम॥
नहिं चह सुख मायिक धाम, नहिँ चह सुख मुक्ति ललाम।
सेवा चह श्यामा श्याम, बस इक यह रह मन काम॥
रसना रट श्यामा श्याम, मन चिन्तन कर वसुयाम।
उर रहे प्रेम निष्काम, सिर रह 'कृपालु' गुरु पाम॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

77

(हैं बाको सुन्दर...)

मेरे दोउ श्यामा श्याम, हैं कोटि काम अभिराम।
वृन्दावन धाम ललाम, विहरत नित आठों याम॥
काहुहिं बल प्रेम अकाम, काहुहिं बल श्यामा श्याम।
जेहि परवश श्यामा श्याम, मम बल है उनकोइ नाम॥
कोउ चह स्वर्गादिक धाम, कोउ चह बैकुण्ठ ललाम।
हम तो चह श्यामा श्याम, तव सेवा आठों याम॥
कबहूँ रह मथुरा धाम, कबहूँ रह गोकुल ग्राम।
कबहूँ रह हौं नंद ग्राम, कबहूँ वृन्दावन धाम॥

78

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(परिक्रमा...)

आ जा आ जा पुनि ब्रज आ जा नँदनंदन,
ब्रज रस सरस पिला जा नँदनंदन।
आ जा आ जा पुनि ब्रज आ जा नँदनंदन,
मुरली मधुर सुना जा नँदनंदन।

आ जा आ जा पुनि ब्रज आ जा नँदनंदन,
मोहिनि छवि दिखला जा नँदनंदन।
आ जा आ जा पुनि ब्रज आ जा नँदनंदन,
सखि संग रास रचा जा नँदनंदन।
आ जा आ जा पुनि ब्रज आ जा नँदनंदन,
मतवारी चाल दिखा जा नँदनंदन।
आ जा आ जा पुनि ब्रज आ जा नँदनंदन,
चित्त 'कृपालु' चुरा जा नँदनंदन॥

79

(नीको लागे...)

जायो यशुमति सुत बलिहार।
सुत सत, चित आनँद बलिहार।
सुत तनु आनँदघन बलिहार।
सुत तनु नील वरन बलिहार।
सुत सिर कनक मुकुट बलिहार।
सुत सिर मुकुट मणिन बलिहार।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

सुत सिर मोर मुकुट बलिहार।
सुत सिर पीत पाग बलिहार।
सुत माथे तिलकहुँ बलिहार।
सुत कानन कुण्डल बलिहार।
सुत दृग रतनारे बलिहार।
सुत दृग मतवारे बलिहार।
सुत दृग अवलोकनि बलिहार।
सुत नासा बेसर बलिहार।
सुत भल मुक्ताहल बलिहार।
सुत मुख मृदु मुसकनि बलिहार।
सुत धर अधर मुरलि बलिहार।
सुत दोउ कर कंकन बलिहार।
सुत अँगुरिन मुँदरिन बलिहार।
सुत गल पीताम्बर बलिहार।
सुत गल गुंज माल बलिहार।
सुत गल कौस्तुभ मणि बलिहार।
सुत वनमाला गल बलिहार।
सुत उर श्री निवास बलिहार।
सुत कटि तट किंकिनि बलिहार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सुत कटि पीताम्बर बलिहार।
सुत चरनन नूपुर बलिहार।
सुत पद नख मणि छवि बलिहार।
सुत लखि विधि हरि हर बलिहार।
सुत लखि उमा रमा बलिहार।
सुत लखि सनकादिक बलिहार।
सुत लखि योगेश्वर बलिहार।
सुत लखि ज्ञानेश्वर बलिहार।
सुत लखि परमहंस बलिहार।
सुत लखि जनकादिक बलिहार।
सुत लखि शुक आदिक बलिहार।
सुत लखि उद्धवादि बलिहार।
सुत लखि ब्रह्मलीन बलिहार।
सुत लखि जपी तपी बलिहार।
सुत लखि नित्यसिद्ध बलिहार।
सुत लखि हरि परिकर बलिहार।
सुत लखि मायिक नहिं बलिहार।
सुत लखि ब्रज गोपिन बलिहार।
सुत लखि ब्रज गोपन बलिहार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सुत लखि ब्रज वासिन बलिहार।
सुत लखि कामदेव बलिहार।
सुत लखि साक्षात् छवि बलिहार।
सुत लखि यशुमति सुत बलिहार।
सुत लखि भानुलली बलिहार।
सुत लखि को जो नहिं बलिहार।
सुत लखि हौं 'कृपालु' बलिहार॥

80

(नीको लागे...)
नंद घर ब्रह्म बन्यो नँदनंद।
जेहि आनँद कहत श्रुति छंद।
सोइ आनंद कंद नँदनंद।
जो था रस अस कह श्रुति छंद।
सो बनि गयो रसिक नँदनंद।
जाको कह निर्गुण श्रुति छंद।
सो अगणित गुण युत नँदनंद।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

जेहि कह निराकार श्रुति छंद।
प्रकटा नराकार नँदनंद।
जाको व्यापक कह श्रुति छंद।
सोई ब्रह्म बना नँदनंद।
जगत पिता कह जेहि श्रुति छंद।
सोइ बनि आया ब्रज नँदनंद।
जो स्वतंत्र है कह श्रुति छंद।
सोइ अधीन गोपिन नँदनंद।
जाते डर डर कह श्रुति छंद।
सोइ डर साँटिहिं ब्रज नँदनंद।
जो नचाव जग कह श्रुति छंद।
सोइ नाचत तारिन नँदनंद।
जेहि अग्राह्य कहत श्रुति छंद।
ऊखल बँध्यो सोइ नँदनंद।
जाको कह अदृष्ट श्रुति छंद।
सोइ ब्रज बन्यो दृष्ट नँदनंद।
जेहि जग पालक कह श्रुति छंद।
सोइ भूखा रोवत नँदनंद।
जाको अजित कहत श्रुति छंद।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सोइ रणछोर भयो नँदनंद।
जेहि सर्वज्ञ कहत श्रुति छंद।
सोइ पढ़ स्वर व्यंजन नँदनंद।
जो बिनु पग चल कह श्रुति छंद।
सोइ चलनो सीखत नँदनंद।
अंतर्यामी कह श्रुति छंद।
खोजत कुंज ललिहिं नँदनंद।
जेहि कह गुणातीत श्रुति छंद।
सोइ सिरमौर चौर नँदनंद।
आत्माराम कहत श्रुति छंद।
सोइ सिरमोर जार नँदनंद।
जेहि कह भूख रहित श्रुति छंद।
जूठन खाय सखन नँदनंद।
जाको सुखघन कह श्रुति छंद।
रोवत ब्रज 'कृपालु' नँदनंद॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

81

(नीको लागे...)

नंद महल महँ बजत बधाई।
मानहुँ नंद परीनिधि पाई।
जा कहँ श्रुति अनादि अज गाई।
सो बनाय ब्रज यशुमति माई।
जेहि आनँद घन तन श्रुति गाई।
सोइ चिन्मय तनु आपु बनाई।
जानति सुत तनु प्राकृत माई।
पितु वसुदेव देवकी माई।
प्रकटे उनके सन्मुख जाई।
रूप चतुर्भुज उनहिं दिखाई।
दोउ किय अस्तुति श्रुति जस गाई।
COPYRIGHT
पुनि उन ते कह देवकी माई।
RADHA GOVIND SAMITI
अब बनु मम सुत कुँवर कन्हाई।
तब बनि गये नवजात कन्हाई।
पुनि वाने माया फैलाई।
बंदीगृह तजि गोकुल जाई।

तहाँ सुता यशुमति थी जाई।
माया करि यशुमतिहुँ सुलाई।
सुता लिये वसुदेव उठाई।
तहँ सुलाय दिय कुँवर कन्हाई।
खुली आँख जब जागी माई।
देखा रोवत कुँवर कन्हाई।
वाने जानी मैंने जाई।
इमि बनि गई यशोमति माई।
सब ब्रज जानि गयो शिशु जाई।
बाजन लागी महल बधाई।
नाचत गावत लोग लुगाई।
वाद्य बजावत बहु विधि लाई।
जय जयकार करत सब आई।
बड़ी भीर यशुमति घर आई।
कोउ कह जय जय कुँवर कन्हाई।
कोउ कह जय जय यशुमति माई।
सब मिलि एतिक शोर मचाई।
परत न कहुँ कछु शब्द सुनाई।
विधि हरि हर जयकार कराई।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नारद शारद गुन गन गाई।
देही सब विदेह पद पाई।
नाचत गोप सँग नंद राई।
गोप खेल दधि काँदौ आई।
मोतिन मणिन लुटावति माई।
कोउ न लूटन महँ रुचि लाई।
सब चह देखन कुँवर कन्हाई।
आये लखन शंभु ढिंग माई।
धनि 'कृपालु' नँद सुत धनि माई॥

82

(नीको लागे...)
मेरे नँदनंदन मेरे यशुदा सुवन।
मेरे यदु नंदन मेरे जीवन धन।
मेरे सत चित घन मेरे आनँद घन।
मेरे सुखघन तन मेरे मन मोहन।
मेरे ब्रज मोहन मेरे मधुसूदन।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरे जग वंदन मेरे प्रानन धन।
जीवन जीवन ब्रज गोपिन धन।
ब्रज गोपन धन ब्रज गायन धन।
ब्रज पक्षिन धन ब्रज वृक्षन धन।
ब्रजवासिन धन ब्रज रसिकन धन।
मदन विमोहन त्रिभुवन मोहन।
हरि हर मोहन उमा रमा मोहन।
विश्व विमोहन मोहिनि मोहन।
जन मन मोहन विधि बुधि मोहन।
राजिव लोचन निज मन मोहन।
श्री राधा रमन श्री कमला रमन।
नील जलद तन अधम उधारन।
पतितन पावन जन मन रंजन।
भव भय भंजन कलि मल भंजन।
मेरो 'कृपालु' इक तू ही शरन॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

83

(नीको लागे...)

आजु कान्ह को नींद न आय।
याते कान्ह बुलायो माय।
मो ढिंग बैठो कह बलभाय।
कोउ कहानी माय सुनाय।
कहौं कहानी सुनु कह माय।
हुंकारी भरियो बलभाय।
अवधपुरी में थे इक राय।
दशरथ नाम पुरानन गाय।
दसहूँ दिशि उनको रथ जाय।
उनकी नारी तीन बताय।
इक कौशल्या नाम बताय।
इक कैकेयी नाम बताय।
इक सुमित्रा नाम बताय।
बड़ी नारि कौशल्या आय।
दशरथ पुत्र चार बतलाय।
ज्येष्ठ पुत्र तो राम कहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उनको श्रुति भगवान बताय।
एक पुत्र लक्ष्मण कहलाय।
एक पुत्र को भरत बताय।
एक शत्रुहन नाम बताय।
राम नारि सीता कहलाय।
सोऊ ब्रह्म रूप बतलाय।
कैकेयी सौतेली माय।
रामहिं दिय तिन विपिन पठाय।
चौदह बरस बसे वन जाय।
सीता राम लखन वन जाय।
बन महँ असुर दशानन आय।
सीता को लै गयो उड़ाय।
मग महँ मिल्यो जटायू आय।
वाको रावण मारि गिराय।
सीता कह हा राम बचाय।
यह सुनि उठि बैठे बलभाय।
कह लक्ष्मण लक्ष्मण धनु लाय।
मानहु क्रोध रूप धरि आय।
दृश्य देखि यह डरि गई माय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गूढ़ मरम नहिं समुझी माय।
जाने साधारण सुत माय।
पकरी माय धाय बलभाय।
लै गोदिहिं पुनि पुनि दुलराय।
लिय छुपाय आँचल बलभाय।
नाम जपति नारायण माय।
जान न नारायण बलभाय।
नींद आय बलभाय सुलाय।
राम 'कृपालु' माय बलभाय॥

84

(नीको लागे...)

इक दिन आपुहिं यशुमति माय।
दधि लागी मथने निज कर माय।
दासिहिं औरहिं सेवा बताय।
मन लाल बाल लीला में लगाय।
रसना सों लाल बाल लीलायें गाय।
कटि तट लहँगा रेशमी सुहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सुत स्नेहयुत स्तन दूध चुवाय।
नेती खींचत थकि गई माय।
झूलत कर्णफूल भल माय।
कर कंकन कनकन मनभाय।
मुख पर स्वेद बिन्दु झलकाय।
वेणी फूलहुँ गिरत लखाय।
इतने में आये बलभाय।
पकर्यो मथत मथानी माय।
बरबस चढ़ि गयो गोदिहिं माय।
पीने लगे पयोधर माय।
पुनि पुनि लखत लाल मुख माय।
पुनि पुनि चूमत मुख बलि जाय।
देखा दूध अंगीठी माय।
उबलि उबलि गिरे भू पर आय।
लालहिं द्रुत दिये भूमि बिठाय।
दौड़ीं दूध उतारन माय।
आयो क्रोध तबै बलभाय।
फरकन लगे होठ बलभाय।
दशनन ते लिये होठ दबाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लोढ़ा पड़ा लखा बलभाय।
वाको लाला लिये उठाय।
दधि मटका फोरेउ बलभाय।
पय उतारि लौटीं जब माय।
देखा फूटा मटका माय।
जान कान्ह करतूतहिं माय।
मन ही मन मुसकाईं माय।
खरे लखा ऊखल बलभाय।
छींके का माखन बलभाय।
दोउ कर कपिन रहे लुटवाय।
पाछे ते मैया गइ धाय।
देखा कर साँटी बलभाय।
ऊखल कूदि भजे बलभाय।
जो योगिन समाधि नहिं आय।
वाको पकरन धाईं माय।
भाजत भाजत थकि गईं माय।
भाजत गति भई धीमी माय।
मुख पर स्वेद बिंदु झलकाय।
वेणी फूल गिरे भू आय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

आई दया तबहिं बलभाय।
कान्ह दिये निज कहँ पकराय।
पुनि मैया साँटिहिं डरपाय।
दोउ कर नैन मलें बलभाय।
थर थर काँपे तनु बलभाय।
सिसक सिसक रोयें बलभाय।
गालन पर काजल बलभाय।
माय विकल देखा बलभाय।
आई दया तबहिं उर माय।
साँटी फेंकि दई तब माय।
सोचा ऊखल बाँधो याय।
ऊखल बाँधन लागीं माय।
द्वै अंगुल रस्सी घटि जाय।
पुनि पुनि रस्सी जोरति जाय।
पुनि द्वै अंगुल लघु है जाय।
बाँधत बाँधत थकि गइ माय।
आई दया हृदय बलभाय।
दिय आपुहिँ आपुहिँ बँधवाय।
पद 'कृपालु' दामोदर पाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

85

(नीको लागे...)

पालने झूलत यशुमति लाल।
चंदन को पलनो गोपाल।
रतन जटित पलनो गोपाल।
सत चित आनँद घन गोपाल।
दिव्य नीलमणि तनु गोपाल।
दिव्य दिव्य दुति तनु गोपाल।
दिव्य गंध युत तनु गोपाल।
ब्रजरस बह नित तनु गोपाल।
लाजति छवि लखि छवि गोपाल।
लजत काम लखि छवि गोपाल।
जगत पिता बनि गयो नँदलाल।
झबला पीत वरन गोपाल।
शिशु भूषन भूषित नँदलाल।
मोर पंख सिर सोहत लाल।
यशुमति नैनन काजर डाल।
गल सोहत मणि कठुला लाल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पग मणिमय नूपुर गोपाल।
भाल दिठौना दिये गोपाल।
मातु झुलावति होति निहाल।
लोरी गावति दै कर ताल।
कर पग पटकत किलकत लाल।
कर सों पग अँगुठा मुख डाल।
फरकावत अधरन गोपाल।
गूँ गूँ कर मुख शब्द रसाल।
पहिचानत नहिं काहुहिं लाल।
इत उत चितवत चहुँ गोपाल।
कबहुँ हँसत बिनु कारण लाल।
कबहुँ अकारण रोवत लाल।
मैया कह ना ना रो लाल।
मैया पुनि पुनि दे कर ताल।
देखत नाहिं खिलौने लाल।
पुनि पुनि कर पग पटकत लाल।
दृगन मूँदि रोवत गोपाल।
सखि बहु भाँति मनावति लाल।
नहिं कुछ सुनत न देखत लाल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कोउ सखि मुख चूमति गोपाल।
कोउ सखि झुलवति पलनो लाल।
कह 'कृपालु' चह गोदिहिं लाल॥

86

(नीको लागे...)
बैठी सखि सँग यशुमति माय।
करति रहीं चर्चा बलभाय।
पूर्ण चंद्र नभ महँ रह भाय।
आँगन खेलत रह बलभाय।
औचक लख्यो चंद्र बलभाय।
पग पटकत आयो ढिंग माय।
वेणी पकरि कह्यो बलभाय।
ऊँ ऊँ ला दे ला दे माय।
मैया कह का चहिय बताय।
पुनि कह ला दे ला दे माय।
पुनि पूछ्यो सखिहूँ बलभाय।
का चह नेकु मोहिं बतलाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दूध चहिय का कजरी गाय।
तूत नाहिं चह कह तुतुराय।
पुनि का तू चह दधि बतलाय।
ना ना ना ना कह बलभाय।
सखि कह का खुरचन दउँ लाय।
ना ना ना ना कह बलभाय।
का दउँ तोहिं मलाई लाय।
ना ना ना ना कह बलभाय।
पुनि का माखन चहिय बताय।
ना ना ना ना कह बलभाय।
सखि कह पुनि का चहिय बताय।
शशि अँगुरिन कह यह दे लाय।
सखि कह यह कैसे दउँ लाय।
यह तो राजहंस कहलाय।
तैरत नित नभ सरहिं सदाय।
अब मचले औरहुँ बलभाय।
पग पटकें लोटें बलभाय।
अपर सखी कह सुनु बलभाय।
यह न हंस यह चंद्र कहाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लाला कह जो हो दे लाय।
तब बोली पुनि यशुमति माय।
यह न हंस नहिं चन्द्रहुँ आय।
यह तो साँचुहिं माखन आय।
किन्तु मिला विष यामें आय।
लखु यामें कालिमा दिखाय।
विष इसमें कैसे मिला माय।
लाला सुनहु कथा मन लाय।
एक क्षीर सागर कहलाय।
लाला कह यह गप्प जनाय।
इतनो दूध कहाँ ते आय।
जाको बनि गयो सागर माय।
लाला सुनु तो पुनि कह माय।
जाने यह संसार बनाय।
वाने दूध समुद्र बनाय।
लाला कह वह को है माय।
लाला वह भगवान कहाय।
वह भगवान कहाँ रह माय।
लाला वह जग व्यापक आय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यह भी गप्प लगे मोहिं माय।
यह सब कथा पुरानन गाय।
पाप लगे जो गप्प बताय।
अच्छा अब आगे कहु माय।
मंदर गिरि को रई बनाय।
वासुकि नाग रज्जु बनवाय।
सुर असुरन सों हरि मथवाय।
निकस्यो कालकूट विष वाय।
दूध मथे माखन सब पाय।
यह भी मो कहँ गप्प जनाय।
अच्छा अब कहु आगे माय।
वा विष पियो शंभु ने आय।
पुनि निकस्यो माखन कह माय।
याते विष मिश्रित यह आय।
याको कोऊ कबहुँ न खाय।
यह सुनि सोय गये बलभाय।
लम्बी साँस लई अब माय।
जान बची जनु लाखों पाय।
धनि 'कृपालु' लाला धनि माय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

87

(नीको लागे...)

मोहिं मारे जनि मैं न माटी खायो मैया।
जेहि डर डर डर डर डर मैया।
तनु काँपे थर थर लखि साँटी मैया।
तनु निकसे पसीना लखि साँटी मैया।
दृग अँसुवन जल लखि साँटी मैया।
मैंने माटी को तो छुवा भी न मेरी मैया।
तू तो जाने मैं न बोलूँ कभू झूठ मैया।
ग्वाल बाल सब मेरे बैर परे मैया।
चाहे जिसकी खिला ले तू कसम मैया।
कान्ह कभू देखें साँटी कभू मुख मैया।
दाऊ भी तो कह माटी खायो कह मैया।
दाऊ भैया भी मिले हैं ग्वाल सँग मैया।
तू ने कहा था न देखो परदोष मैया।
तू कहे तो दोष सब का बता दूँ मैया।
अच्छा बेगि बता दे दोष कह मैया।
गैया बिच जनि जइयो तूने कहा मैया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू तो खेल्यो करियो तूने कहा मैया।
काउ गैया मारे लात तूने कहा मैया।
आज कही भैया गैया घेरि लावो मैया।
मैंने मानी नहिं भैया तब कही मैया।
चलु घर तोहिं पिटवावूँ कहि मैया।
आजु पुनि पुनि हारे ग्वाल खेल मैया।
याते ग्वाल बाल भी थे खिसियाये मैया।
सब मिलि झूठी बात बनाई मैया।
तू न मान तो ले लखु मोरा मुख मैया।
कान्हा सोचे अब नहिं मोहिं मारे मैया।
अब करि लेगी मेरा विश्वास मैया।
किंतु खोल मुख देखूँ ऐसा कह मैया।
कान्हा सोचे मुख खोलूँ जो तो मारे मैया।
नहिं खोलूँ यदि मुख तो भी मारे मैया।
अब तो न बचूँगो आजु मारे मैया।
डरि देखे पुनि पुनि साँटी कर मैया।
इतने में मुख खुल गया डर मैया।
तब आई योगमाया सन्मुख मैया।
वाने मुख में दिखाया जग दृग मैया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अगणित ब्रह्माण्ड लखे मैया।
अगणित रवि शशि देखे मैया।
सब लखि डरि थर थर काँपे मैया।
गिरी साँटी कर निज दृग मूँदे मैया।
यह कान्ह है कोई देव सोचे मैया।
तब आई माया मोहिनि ढिंग मैया।
वाने मैया ने जो देखा सो भुलाया मैया।
पुनि उर ते कन्हैया को लगाया मैया।
बार बार चिपटाया मुख चूमा मैया।
भाजे ग्वाल सँग दाऊ भैया डर मैया।
राई नोन लै 'कृपालु' उतारे मैया।।

88

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(नीको लागे...)

लाल कह मैया अस ब्रज बाल।
जस नहिं कतहूँ तीनिहुँ काल।
ये अति मति कपटिन ब्रजबाल।

मैं तो तेरा भोला लाल।
इनके उर विष वचन रसाल।
हौं न जानि सक इनकी चाल।
मोको इकलो लखि ब्रजबाल।
टेरि बुलावति सुनियो लाल।
पुनि कह इक विनती नंदलाल।
आजु चलहु हमरेहुँ घर लाल।
खाय नवनि मोहिं करहु निहाल।
साँचो मानि जाउँ हौं हाल।
पुनि लें घेरि मोहिं ब्रजबाल।
सब मारें गुलचन मम गाल।
पुनि सब चूमें मुख ब्रजबाल।
कोउ चूमें कर कोउ मम गाल।
पुनि कह नाच दिखावहु लाल।
नाचत थकि गयो तेरो लाल।
कोउ छोरति मम मुरलि रसाल।
कोउ छोरति मम गल वनमाल।
कोउ छोरति पीतांबर बाल।
कोउ छोरति कठुला ब्रजबाल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कोउ कह मोर मुकुट दो लाल।
कोउ पुनि पुनि चिपटावति बाल।
तोरी शपथ खवावति हाल।
कहति कहहु ऐहौं पुनि काल।
तबहुँ न दे माखन ब्रजबाल।
दैहौं दैहौं कह ब्रजबाल।
पुनि लगाव माखन मुख गाल।
पुनि दै ताल हँसति ब्रजबाल।
कह पुनि बारेक नाचहु लाल।
अबकी मोर नृत्य करु लाल।
मो सँग नाचें सब ब्रजबाल।
पुनि दें कछु माखन ब्रजबाल।
कछु माखन लगाव कर गाल।
पुनि कर पकरि सबै ब्रजबाल।
तव ढिंग लै आवहिं ब्रजबाल।
तो सों कह चोरी कर लाल।
तू ऊखल बाँधति तत्काल।
तू भोरी न जान इन चाल।
ये बिनु एक सात करें बाल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ये धींगरि कोटिन ब्रजबाल।
हौं 'कृपालु' इकलो पुनि बाल॥

89

(नीको लागे...)
सुनि सुनि उरहन खीझी माय।
अति रिस भरी यशोमति माय।
लै साँटी कर परखत माय।
कब आवे नटखट बलभाय।
इतने में नटखट झट आय।
भाज्यो लखि कर साँटी माय।
पाछे पाछे भाजीं माय।
पुनि पुनि लख पाछे बलभाय।
आजु न छोड़ूँ तोहिं कह माय।
दोउ भाजत तनु सुधि बिसराय।
है अग्राह्य ब्रह्म श्रुति गाय।
जीव शक्ति ते पकरि न पाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

याते मैया पकरि न पाय।
लथपथ भईं पसीना माय।
अब औरहुँ रिस भइ तनु माय।
आई कृपा शक्ति लखि माय।
याते गिर्‌यो आपु बलभाय।
गिर्‌यो कान्ह पकर्‌यो कर माय।
बाँध्यो ऊखल कसि कसि माय।
पुनि कर साँटी लै कह माय।
घर घर माखन लँगर चुराय।
तोरे घर का कमी बताय।
तोरे घर नव लख हैं गाय।
जब मारन हित साँटी उठाय।
सखियन पकरीं तुरतहिं माय।
आजु न छोडौं इमि कह माय।
तनु थर थर काँपे बलभाय।
दोउ दृग अँसुवन धार बहाय।
सिसक सिसक रोये बलभाय।
छीनि लई सखि साँटी माय।
सखियन कही बात सुनु माय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

याने चोरी नहिं की माय।
हमने करी मसखरी माय।
तू तो साँचुहिं गइ पतियाय।
सखियन ऊखल बन्ध छुड़ाय।
ब्रह्म जीव बंधनहिं छुड़ाय।
ब्रह्म बन्ध इत जीव छुड़ाय।
रोवत कान्ह माय उर लाय।
डाँटि भगायहु सखियन माय।
पुनि कह सिसकि सिसकि बलभाय।
तोसों बात करौं नहिं माय।
औरहिं कोउ बनैहौं माय।
तेरी गोद न ऐहौं माय।
मैया बहु विधि कान्ह मनाय।
तब मानेहु मन मन मुसकाय।
कह 'कृपालु' बलि छल बलभाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

90

(नीको लागे...)

होड़ परी राम श्याम दोउ भाय।
दोउ परस्पर रह बतराय।
कहत परस्पर दोउ तुतुराय।
हम लोइ पापा हैं नंदराय।
यशुमति तो हैं हमलोइ माय।
हम लोइ हमलोइ कह दोउ भाय।
आये दोउ ढिंग बाबा माय।
इक सँग राम श्याम दोउ भाय।
कबहुँक बाबा गोदिहिं जाय।
कबहुँ धाय जायँ गोदिहिं माय।
इमि भइ बेर लरत दोउ भाय।
असमंजस महँ बाबा माय।
इक दूजे कहँ लख मुसकाय।
तब कह दोउन बाबा माय।
दोउन के हम बाबा माय।
नहिं माने कैसेहुँ दोउ भाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि पुनि चढ़े गोद दोउ भाय।
पुनि बोले दोउ बाबा माय।
सुनो सुनो मेरी दोउ भाय।
हम हैं वाके बाबा माय।
दृगन मूँदि जो नाचे गाय।
नाचन लगे सँग दोउ भाय।
गायें आँय वाँय दोउ भाय।
बलि बलि जाय लखि बाबा माय।
पुनि गये छुपि बाबा अरु माय।
नाचि नाचि थकि गये दोउ भाय।
तब दृग खोलि लख्यो दोउ भाय।
भये प्रकट उत बाबा माय।
कह सुनु राम श्याम दोउ भाय।
जो कर सेवा बाबा माय।
वाही को है बाबा माय।
हौं हौं हौं हौं कह दोउ भाय।
आगे सुनु कह बाबा माय।
सेवा लेहु बाँटि दोउ भाय।
पुनि सँग लरन लगे दोउ भाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

यह हौं यह हौं कह दोउ भाय।
सेवा बाँटि न सके दोउ भाय।
सुनु निर्णय कह बाबा माय।
इक दिन राम करे सेवकाय।
इक दिन सेवा कर बलभाय।
प्रथम राम सेवा को आय।
पुनि 'कृपालु' आवें बलभाय॥

91

(नथवारी रंगीली...)

ओरी मोरी सखि लूट्यो मोहिं भल बलभाय।
कालि आधी रात आयो मेरे द्वार बलभाय।
आके मेरे द्वार बार बार कुंडी खटकाय।
मैंने पूछी आधी रात कौन कुंडी खटकाय।
वाने कही मैं हूँ मैं हूँ मैं हूँ मैं हूँ बलभाय।
मैंने कही कहा रैन हूँ न नींद तोय आय।
अच्छा अच्छा बता वेगि अब काहे इत आय।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

तेरे मायके का आया कोई बोला बलभाय।
वाने तेरी कुंडी खटकाई बार बार जाय।
तेरी नींद ते तो कुंभकर्ण नींदहूँ लजाय।
तू न जागी तब हारि वह मेरे द्वार आय।
आके मेरे द्वार पुनि पुनि कुंडी खटकाय।
मैंने खोलि के किवार पूछा कौन तू बताय।
तब वाने निज परिचय दिया बतलाय।
मैंने कहा आओ बैठो यह तेरो घर आय।
अभी अभी जाके लावूँ वो तो मेरी भाभी आय।
सखि चलु मेरे सँग दउँ भाय मिलवाय।
मैंने सोची साँची आयो होगो मेरो बड़ भाय।
मैं भी चली द्रुत वाके सँग मिले मेरो भाय।
वाने प्रथमहिं दिये कुंज सखन बिठाय।
मैं तो जा रही थी निधरक सँग बलभाय।
इतने में बोले नासिका से सखा समुदाय।
तुम दोनों को ही खावूँ अभी अभी उत आय।
मैं तो डरि गई गइ उर लगि बलभाय।
मैंने कही भूत भूत ले बचाय बलभाय।
वाने कही जनि डरु लिये उर ते लगाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि मेरी प्यारी कहि बार बार चिपटाय।
पुनि कही भूतों टुक मेरे सामने तो आय।
एक एक भूत को दूँ यमलोक पठाय।
पुनि पुनि वाने पुनि मोय उर ते लगाय।
वह सुख सखि मुख ते न कहि सक जाय।
मेरो मन कह तू भी वाय उर ते लगाय।
मेरे रोम रोम बसि गयो सोइ बलभाय।
तन मन प्रान सब लियो लूटि बलभाय।
तनु काँपे दृग आनँद जल बरसाय।
जैसे तैसे पहुँचे हम घर बलभाय।
तब द्रुत घर घुसि गयो सो बलभाय।
पुनि कह जा जा घर इत कोउ नहिं आय।
मैंने कही इकली कैसे जावूँ बलभाय।
कर जोरि कहूँ चलु सँग घर पहुँचाय।
न तु मिले सोइ भूत खाय मोहिँ बलभाय।
पुनि आयो दियो गल बहिँयन बलभाय।
मग में जो पायो रस तोहिं कैसे बतलाय।
जानी जानी मैं 'कृपालु' भयो पिय बलभाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

92

(नथवारी रंगीली...)

ओरे नटखट मोते न लिपट परे हट।
तोहिँ जाने ब्रजवासी तू बड़ोइ लंपट।
चल चल चंचल तज अँचल पट।
मैं न ऐरी गैरी नारी ओ अनारी नटखट।
मैं हूँ जाकी नारी सो है लठधारी नटखट।
अभी हेला दउँ आवे पति ले के लठ झट।
लेइ ठकुराई तोरि निकारि पति झट।
काउ गर लर तोरे काउ फोरे जल घट।
काउ मारे नैनन की कटारी नटखट।
काउ कहे मेरी प्यारी मोहिं पिय कहु झट।
काउ माँगे दधि दान जो न दे तो फोरे घट।
जित चले नटखट उत करे खटपट।
कर छींके नहिं पहुँचे तो बड़ो होय झट।
काउ घर चोरे माखन काउ चोरे पट।
तू ने पी लइ घोरि लोक लाज नटखट।
तू तो है जादूगर सरदार नटखट।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जादू करि प्रकट्यो कारागार नटखट।
जादू करि प्रहरिन को सुलाया नटखट।
जादू करि ताला खुलवाया नटखट।
जादू करि यमुना को सुखाया नटखट।
जादू करि यशुदा को सुलाया नटखट।
जादू करि यशुदा को माँ बनाया नटखट।
जादू करि माँ को मुख में दिखाया जग झट।
जादू करि विधि बुधि भरमाया नटखट।
जादू करि शिव को बनाया गोपी नटखट।
जादू करि सुरपति को रुलाया नटखट।
जादू करि गिरिराज को उठाया नटखट।
जादू करि कामहुँ को हराया नटखट।
जादू करि चोरी चोरी किया रास नटखट।
जादू करि धरे अगनित तनु नटखट।
जादू करि मोहे ब्रज गोपिन नटखट।
जादू करि मोहे ब्रज गोपन नटखट।
जादू करि मोहे भानु कुँवरि नटखट।
जादू करि किये असुरन वध नटखट।
जादू करि मार्यो कौरव नटखट।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जादू करि सशरीर गयो नटखट।
जादू करि मोहे मोहूँ 'कृपालु' नटखट॥

93

(नथवारी रंगीली...)
ओरे जादूगर श्याम तू बड़ोई जादूगर।
तेरा रोम रोम जादू की पिटारी नटवर।
तूने लूटे जादू करि बड़ों बड़ों के भी घर।
तूने लूटे परिकर विधि हरि हर घर।
तूने लूटे उमा रमा सरस्वती के भी घर।
तूने लूटे सनकादिक ज्ञानिन घर।
तूने लूटे शुद्ध बुद्ध माया मुक्त जन घर।
तूने लूटे जनकादि विदेहहुँ घर।
तूने लूटे परिकर ब्रज नारिन घर।
तूने लूटे निज जन ब्रज वासिन घर।
तूने लूटे बड़े बड़े सिद्ध योगी जन घर।
तूने लूटे गर्भमुक्त शुकदेव मुनि घर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तूने लूटे बड़े बड़े नित्यसिद्ध जन घर।
तूने लूटे सिद्ध जीवन्मुक्त जन घर।
तूने लूटे बड़े बड़े ब्रज रसिकन घर।
तूने लूटे जग मोहन मदनहुँ घर।
तूने लूटे बड़े बड़े जगद्गुरुओं के घर।
तूने लूटे निष्काम प्रेम युक्त जन घर।
तूने लूटे दास्य आदि चार भाव वारे घर।
तूने लूटे जो बने हैं तेरे उनहिँन घर।
तूने लूटे बड़े बड़े राक्षस जन घर।
तूने लूटे बड़े बड़े वैष्णवजन घर।
तूने लूटे गणिकादिक पतितन घर।
तूने लूटे सब विधि दीन हीन जन घर।
तूने लूटे जो अकिंचन जन तिन घर।
तूने लूटे काम युक्त प्रेम युक्त जन घर।
तूने लूटे विधि हरि हर पद कामी घर।
तूने लूटे इन्द्र आदि पद कामी भक्त घर।
तूने लूटे अणिमादि सिद्धि कामी भक्त घर।
तूने लूटे पाप पुण्य घुसि जन उर घर।
तूने लूटे तीनों तनु घुसि जन उर घर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तूने लूटे तीनों कर्म घुसि जन उर घर।
तूने लूटे तीनों गुण घुसि जन उर घर।
तूने लूटे पंचक्लेश घुसि जन उर घर।
तूने लूटे पंचकोश घुसि जन उर घर।
तूने लूटे इन्द्रिय विषयन उर घर।
तूने लूटे तीनों ताप घुसि जन उर घर।
तूने लूटे दोनों राग द्वेष घुसि उर घर।
तूने लूटे जिन उन ने भी लूटा तेरा घर।
तूने लूटे सब घर राधा लूटीं तेरा घर।
तूने लूटे क्यों कर न 'कृपालु' उर घर॥

94

(नीको लागे...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कामरि वारे पै का मरि जाय।
कारो रंग अति निंदनीय बलभाय।
कारो नर सालिगराम कहाय।
देवकी यशोदा याय द्वै द्वै माय।

वसुदेव नंद द्वै द्वै बाप बताय।
कोउ क्षत्रिय कोउ वैश्य बताय।
अनपढ़ अँगुठा छाप बलभाय।
सँगहुँ नित ग्वार गमारन पाय।
जग अगनित प्यारी वाय आय।
गति मति रति चंचल बलभाय।
परम स्वतंत्र करे मनभाय।
प्रेम रस मदिरा मत्त सदाय।
चौर सिर मौर सब रसिक बताय।
माखन चोर सखिन बतलाय।
शरणागत चित चोर कहाय।
गोपिन वसन चोर कहलाय।
चित चोरे छलिया नैन मिलाय।
प्रणत सुकृत दुष्कृतहुँ चुराय।
अति कपटी सुभाय बलभाय।
जार शिखामणि संत बताय।
छोटो सो नैनन बान चलाय।
दधि दान माँगे मग सखिन सताय।
सखि दधि ना दे तो ले सखन लुटाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब सौं ही कह मेरी प्यारी बलभाय।
काउ सखि चुनरिहिँ फारे मग आय।
काउ सखि गागरि फोरे बलभाय।
काउ मोतिन लर तोरे बलभाय।
सब सौं ही झूठी मूठी बात बनाय।
मैया सौं भी झूठ बोले बलभाय।
छीके पहुँचे न तो बड़ो ह्वै जाय।
सखि पकरे तो वाय पति बनि जाय।
ब्रज घर घर कर लँगरई जाय।
जो बरजे वाय जीभ दिखाय।
जितनोइ छोटो खोटो तितनोइ आय।
मथुरा में जनमेउ कारागार आय।
छल करि प्रहरिन दीन सुलाय।
माया ते यमुना को दीनो सुखाय।
छल करि आधी रात गोकुल जाय।
तहँ यशुमति छलि माय बनाय।
मैया को मुख महँ विश्व दिखाय।
जहँ बस न चले योगमाया बुलाय।
कारी करतूति सारी कौन गनाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तीन पग भूमि माँगि छल्यो बलि जाय।
छल बाँधि बलि पाताल पठाय।
तरु ओट छुपि मार्‌यो बाली बलभाय।
छल सों ही मार्‌यो कौरव बलभाय।
छल सों ही मार्‌यो ब्रज असुरन आय।
कह लौं 'कृपालु' वाय अवगुन गाय॥

95

(नथवारी रंगीली...)

काहे लिया चितचोर मोर चोर सिरमोर।
लोग जग आवें सीखें बने चोर सिरमोर।
तू तो चोर बनि के ही आयो जग चितचोर।
घुसा चोरी चोरी माता पिता चित चतचोर।
चोरी चोरी ही फुलाया माँ का पेट चितचोर।
आपु गया नहिं देवकी के पेट चितचोर।
निज तनु भी बनाया नहिं पेट चितचोर।
तूने नौ महीना माँ को दिया धोखा चितचोर।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

वसुदेव देवकी थे कारागार चितचोर।
कैसे घुसा कारागार भीतर चितचोर।
तूने न तो कारागार ताला तोरा चितचोर।
न तो कारागार दीवार फोरा चितचोर।
कारागार चारों ओर पहरा था चितचोर।
शंख चक्र गदा पद्म ले के घुसा चितचोर।
कारागार बनि आया तू किशोर चितचोर।
ऐसी चोरी काऊ देखी न सुनी चितचोर।
पुनि कैसे बना नवजात शिशु चितचोर।
भागा पितु सँग कारागार ते भी चितचोर।
कैसे सोये सब पहरेदार चितचोर।
कैसे खुला ताला कारागार द्वार चितचोर।
कैसे यमुना ने दिया तोहिं जाने चितचोर।
भादों में तो होता यमुना में पूर चितचोर।
कैसे घुसा नंद घर आधी रात चितचोर।
यशुदा ने जाया सुता योगमाया चितचोर।
यह जाना नहिं यशुदा ने कैसे चितचोर।
सुता भी तो रोई होगी पैदा होके चितचोर।
कैसे रोना नहिं सुना दासी दास चितचोर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू भी रोया नहिं घुसा चुपचाप चितचोर।
सुता चुप चाप ले के कैसे गये चितचोर।
गये कारागार कैसे वसुदेव चितचोर।
कैसे भयो ताला बंद बंदीगृह चितचोर।
जब जागी यशुमति देखा तोहिं चितचोर।
जानी जना नहिं सुता जना सुत चितचोर।
फिर क्या था तू तो बना नंद सुत चितचोर।
जिसने भी देखा तोहि ब्रज महँ चितचोर।
सब नर नारी चित चोरे तूने चितचोर।
विधि हरि हर चित चोरे तूने चितचोर।
उमा रमा सरस्वती चित चोरे चितचोर।
सनकादिकहूँ चित चोरे चितचोर।
नारद शारद चित चोरे चितचोर।
जग आँख बचा के चोरी करे चितचोर।
तू तो आँख मिला के चोरी करे चितचोर।
जग सोये लोग लखि चोरी करे चितचोर।
तू तो मुरली बजा के चोरी करे चितचोर।
तेरे जैसा चोर पहले हुआ न चितचोर।
तेरे जैसा चोर आगे भी न होगा चितचोर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

शिशु काल में ही जब यह हाल चितचोर।
बड़ा हो के जाने क्या करेगा तू चितचोर।
मेरा चित भी चुरा ले तू 'कृपालु' चितचोर॥

96

(नथवारी रंगीली...)

किया कैसा जादू पिया जादूगर सरदार।
मैं तो मरि गइ बिनुहिं मौत लखि यार।
गइ वंशीवट तट तहँ रह रिझवार।
वाने कही सुन सुन सुन ओ ब्रजनार।
मोरी तोरी भल जोरी मोरी ओर निहार।
मैं कछु नहिं बोली लिय मौनहिं धार।
तब मो ढिंग आयो निलज जार।
औचक दिय घूँघट पट उघार।
हौं बोली हट लंपट गमार।
सो कह हौं ही हौं तेरो यार।
दे गारी या करु मोय प्यार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पाछा नहिं छोड़ूँ अब तिहार।
तजु लोक लाज भजु साँचो यार।
हौं बोली हौं पतिव्रता नार।
सूधे जा चला आपुने द्वार।
मेरा पति मोटी लट्ठ धार।
तेरी ठकुराई ले निकार।
तोहिं जाने सब प्रख्यात जार।
तू अरु तेरे ग्वारहुँ गमार।
तू का जाने रस प्यार वार।
तू तो है लबरन को सरदार।
लै दर्पण टुक निज मुख निहार।
तो कारे सों को करे प्यार।
सो कह ओ छवि गर्वीली नार।
तोहिं निज छवि को बड़ अहंकार।
पुनि कत डरपति नहिं मोहिं निहार।
यह सुनि हौं उर अति रोष धार।
हौं कह ले हौं इकटक निहार।
पुनि वाने नैनन सैन मार।
लखि नैन सैन हौं सुधि बिसार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

दिय तुरतहिं तन मन प्राण हार।
सो कह सखि कैसा लगा वार।
अब तो लागी उर आग प्यार।
यह यारी अब नहिं छुटै यार।
यह यारी सखि परकीया प्यार।
चोरी चोरी किये बढ़े प्यार।
पुनि हौं तेहिं सो मोहिं निहार।
इमि हेरत दोउन भइ अबार।
तब इक सखि कह तनु सुधि सँभार।
तब हौं लीन्यो घूँघट पट डार।
मन कह पुनि घूंघट पट उघार।
बुधि कह नहिं धरे नाम संसार।
टेर्यो तब मनसुख नंदकुमार।
उत गयो मनसुख ढिंग पिय रिझवार।
इत रोम रोम रमी छवि रिझवार।
पल पल तलफत पुनि लखन यार।
नहिं भावे अब जग नातेदार।
लग खारो खारो सब संसार।
मन समुझावत हौं गई हार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मानत नहिं मन चह सोइ यार।
तू ही सखि करु अब कछु उपचार।
तू धनि 'कृपालु' धनि तेरो प्यार॥

97

(नथवारी रंगीली...)

चलु चलु चलु तजु अंचल चंचल।
लखु लखु लखु उत लख सखि चंचल।
लखि सखि गिरे तोरे मुख राल चंचल।
तू तो लखि सखि बने जनु रंक चंचल।
तेरे जैसा लंपट जग नहिं चंचल।
तोहिं डर नहिं लोकहुँ कहँ चंचल।
तोहिँ डर नहिं परलोकहुँ चंचल।
तोहिं डर नहिं भगवानहुँ चंचल।
तोहिं डर नहिं नारी गारी को भी चंचल।
तू अरु तेरा प्रेम चंचल चंचल।
छल कपट का तू है सरदार चंचल।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

झूठ का तो है तू रूप साकार चंचल।
स्वारथ का तो है अवतार चंचल।
आयो द्वापर ही घोर कलि चंचल।
तू न देखे अनब्याही ब्याही कछु चंचल।
तोहिं नारी कारी कुबरिहुँ भाये चंचल।
जितनोइ छोटो खोटो तितनोइ चंचल।
तू तो जाने जादू टोना चेटक चंचल।
तेरी आँखों में न जाने कैसा जादू चंचल।
जो भी देखे गिरे भू पे कहे हाय चंचल।
तू ने ब्रज महँ अति करि दीनी चंचल।
अति अति बुरी होती तू न जाने चंचल।
काउ दिन या को पावे फल भल चंचल।
तो सों हारी सबरी ब्रजनारी चंचल।
एक हैं राधा बरसाने वारी चंचल।
तोहिं सीधा कर देंगी पल महँ चंचल।
नहिं माने तो चला जा अभी हाल चंचल।
तोहिं निज छवि को है बड़ो मद चंचल।
जब देखेगा तू राधा रानी छवि चंचल।
तेरा सारा मद चूर चूर होगा चंचल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू ने बहुत सताया सब कहँ चंचल।
अब हम सब लेंगी दाँव तो सों चंचल।
लाली आगे न चले तेरा छल चंचल।
सेर को मिलेगा तब सवा सेर चंचल।
जब तलफेगा हा राधे कहि चंचल।
तब हम सब सखि लखि हँसें चंचल।
तू भी रोयेगा सखिन ढिंग तब चंचल।
हा हा खायेगा परेगा पैयाँ सखि चंचल।
तू कहेगा आली लाली सों मिला दे चंचल।
तब सखिहुँ चखायेंगी मजा चंचल।
यह तबहुँ न सुधरे 'कृपालु' चंचल॥

98

COPYRIGHT

(नथवारी रंगीली...)

RADHA GOVIND SAMITI

छल किया पिया छलि लिया मन छलिया।
जा जा जान लिया भल तोरा छल छलिया।
नहिं छोड़ूँ कभू तूने कहा था छलिया।
जिवूँ नहिं तेरे बिनु ये कहा था छलिया।

तू है प्राण प्यारी यह भी कहा था छलिया।
सब भूल गया अपना वचन छलिया।
जाने कैसा जादू किया कुबरी ने छलिया।
नहिं आया नहिं मोहिं बुलाया छलिया।
कब आवूँगा न यह भी बताया छलिया।
मैंने माना मैंने बहुत सताया छलिया।
बार बार किया तोरा अपमान छलिया।
दई बार बार गारी ब्रज नारी छलिया।
बार बार था नचाया छाछ दे के छलिया।
दिया मैया सों उरहनो तोरा छलिया।
तो सों भरा घट उठवाया छलिया।
गोबर टोकरि उठवाया छलिया।
तो को भला बुरा बहुत कहा छलिया।
यह सब बेसुधी में किया छलिया।
तेरे प्रेम ने किया बेसुध छलिया।
तू तो जाने प्रेम में ऐसो होय छलिया।
पुनि काहे हम सब कहँ तज्यो छलिया।
हमरिहुँ सुधि तोहिं आयेगी छलिया।
वह सुधि तोहिं तड़पायेगी छलिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू तो मेरी नस नस बस गया छलिया।
जित देखूँ तित तू ही तू ही दीखे छलिया।
कान 'प्यारी' आदि शब्द तेरे सुने छलिया।
रसना भी अधर रस पिये छलिया।
नासिका तनु दिव्य गंध सूँघे छलिया।
रोम रोम तेरा परस दिलाये छलिया।
मन तेरे बिनु कछु नहिं सोचे छलिया।
मेरी आत्मा में तू है समाया छलिया।
तेरे जाने से न भयो कछु टोटो छलिया।
मोहिं तेरे अपयश का है डर छलिया।
तोहिं निठुर कहेंगे जग वारे छलिया।
मोहिं विरह न यह कोउ माने छलिया।
मधुपुरी ही न तू जा गोलोक छलिया।
मैं तो तेरी थी हूँ रहूँगी सदा छलिया।
तेरे विरह में मिलन को रस छलिया।
क्षण क्षण बाढ़े प्रेम मेरा और छलिया।
हम सब न बुलावें अब कभू छलिया।
तेरी गरज परे तो आ जइयो छलिया।
हम निष्काम हैं 'कृपालु' बाम छलिया।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

99

(नथवारी रंगीली...)

छू मंतर करि गयो मेरो यार।
सब लूटि लै गयो मेरो यार।
हौं तो गई रहि घट भरन यार।
तहँ आयो नंदकुमार यार।
वाने टेरी धुनि मुरलि यार।
सुनतहिं धुनि गई उर आर पार।
हौं तेहिं निहार सो मोहिं निहार।
इमि ह्वै गये औचक दृगन चार।
पुनि वाने नैनन सैन मार।
मैं भई हाल बेहाल यार।
मन कह आलिंगन चहहुँ यार।
बुधि कह लखु लख सखियन हजार।
पुनि स्नान करन गइ जल मझार।
कटि लौं जल जहँ रह यमुन धार।
बूड़ी बचाउ कोउ कह पुकार।
सोइ कूदि पर्यो सुनि मम पुकार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जल भीतर वाने कियो प्यार।
पुनि पुनि आलिंगन दियो यार।
पुनि दीनो यमुना ते निकार।
बाहर ते पतिहूँ रह निहार।
पति कह हौं तेरा ऋणी यार।
तूने बचाय लइ मेरी नार।
जो कह तो कहँ दउँ पुरस्कार।
सो कह तू तो बड़ भ्रात यार।
मेरी भाभी है तेरी नार।
यह तो था मम कर्तव्य यार।
पति ने चिपटाया वाय यार।
पुनि गयो सखन सँग मेरो यार।
इत पतिहुँ गयो निज लट्ठ धार।
हौं भई विभोर तनु सुधि बिसार।
यह रोम रोम सोइ परस यार।
रोमांच कम्प तनु बार बार।
दृग बह आनँद जल बार बार।
घट भरन भयो मोहिं भार यार।
कैसेहुँ घट भर तनु सुधि सँभार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

घट भरि चलि घर मग मिल्यो यार।
कह अब कब कहँ मिलि करे प्यार।
हौं कह मेरो पति लट्ठ धार।
वह जाने तो तोहिं लट्ठ मार।
जब कबहूँ अवसर पाऊँ यार।
तब आप करुँ पुनि तोहिं प्यार।
कहु री 'कृपालु' करु अबहिं प्यार॥

100

(नथवारी रंगीली...)
जा जा जा जा जा जा
जार जा जा कुब्जा यार।
तेरी झूठी मूठी यारी तेरा झूठा मूठा प्यार।
तू तो निकला लबरन को सरदार।
अब जानी तोहिं सबरी ब्रज की नार।
तेरी वाणी है मधुर मोर वाणी अनुहार।
उर कपट मोर जनु अहिन अहार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरी बनि जाय चाहे और कुब्जा हजार।
तेरी थीं तेरी हो के रहेंगी ब्रजनार।
ब्रजनार नहिं चह कुब्जा जनु प्यार।
हम तो हैं अकाम सब ब्रज की नार।
मम रोम रोम रम रह मम यार।
है हम सब का निष्काम प्यार।
मेरे नैनन में बस मेरा यार।
हम जानति प्रेम अधीन यार।
मेरे मन में नित बस मेरा यार।
दसहूँ दिशि दीखे मेरा यार।
हम चह न मुक्ति पाँचहुँ प्रकार।
हम नहिं चह बैकुण्ठहुँ ब्रजनार।
हम तो चह सेवा निज रिझवार।
पिय इच्छा ही इच्छा ब्रजनार।
COPYRIGHT
पिय ठुकराये अथवा करे प्यार।
RADHA GOVIND SAMITI
क्षण क्षण है वर्धमान मम प्यार।
पिय है पतंग डोरी मम प्यार।
हम देत चुनौती तोहिं रिझवार।
तू उलटा भी कर ले व्यवहार।

पिय सुख मम सुख मम व्रत उर धार।
मोते हारा नित मेरा यार।
हम जानति पिय क्यों लिय अवतार।
हम उनकी लीला पर बलिहार।
सुवरन तपि अगिनि चमक अति धार।
ऐसेहिं विरहिन गोपिन बढ़ प्यार।
हम पिय निष्ठुरता पर बलिहार।
ब्रज तजि नहिं जा सक मेरा यार।
उन में मैं मुझ में मेरा यार।
वे ही मेरे 'कृपालु' भरतार॥

101

(नीको लागे...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तुम ही रहु ब्रज महँ इकली माय।
हम सब कहुँ और जायँगी माय।
या ब्रज ते भल भरि पाई माय।
जितनोइ छोटो बलभाय माय।

तितनोइ खोटो यह मानु माय।
कर लँगर डगर महँ रार माय।
कभु सिर ते चुनरि उतार माय।
कभु गर लर मोतिन तोर माय।
कभु काँकरि गागरि फोर माय।
कभु सखन सँग मग रोके माय।
कभु कह हौं हौं ब्रजराज माय।
कभु माँगे दधि को दान माय।
ना दो तो छोरे मटुकि माय।
दधि खाय सखन सँग छकि के माय।
पुनि मटुकिहुँ फोरे निलज माय।
जो बरजहु तो औरहि इतराय।
कबहूँ अँगुठा दिखलाय माय।
कबहूँ निज जीभ दिखाय माय।
कबहूँ निज मुख मटकाय माय।
कबहूँ दृग बान चलाय माय।
कबहूँ लखि मृदु मुसकाय माय।
कबहूँ मुख मुरलि बजाय माय।
सूनो घर लखि घुसि जाय माय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

छींके लौं जो नहिं पहुँचि पाय।
लै सीढ़ी सखन बनाय माय।
जब इकलो ही यह आय माय।
तब हाल बड़ो ह्वै जाय माय।
सब सों कह हौं तव पिया माय।
तू भोरी कबहुँ न मान माय।
पकरन चह पकरि न पाय माय।
हरि छू मंतर ह्वै जाय माय।
जो कबहुँ पकरिहूँ पाय माय।
द्रुत मेरो पति बनि जाय माय।
जो कहूँ कंस पै जाउँ माय।
तो कह का कंस खसम तव आय।
अब लौं तो हम सब सही माय।
अब अति ह्वै गई हम जायँ माय।
ऊखल 'कृपालु' याय बाँधु माय।।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे।।

102

(नथवारी रंगीली...)

तूने अब लौं छला मोहिं वो छलिया।
अब आवूँ न छलाई में तेरी छलिया।
तेरे जन ने बताया तेरा छल छलिया।
तूने लगा दिया मेरे पाछे माया छलिया।
माया तो है तेरी दासी तेरी शक्ति छलिया।
माया ते तो हारे विधि हरि हर छलिया।
माया ने भुलाया मेरा तू मैं तेरा छलिया।
माया ने भुलाया ज्ञानिहुँ ज्ञान छलिया।
मैं तो अति तुच्छ जीव तेरा शिशु छलिया।
यामें कहा दोष मेरा तू बता दे छलिया।
जग शिशु भी न जाने माता पिता छलिया।
कहा शिशु कोई फेंके कूड़ेदान छलिया।
जग माता पिता पाले वाय शिशु छलिया।
पुनि माता पिता ही जनावे नाता छलिया।
छले जग माँ भी ज्यों निज शिशु छलिया।
दै खिलौना चट्टू घुनघुना आदि छलिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ऐसे तूने भी छला है दै खिलौना छलिया।
सारा अग जग है खिलौना तेरा छलिया।
देखने का है खिलौना अगनित छलिया।
सुनने का है खिलौना अगनित छलिया।
सूँघने का है खिलौना अगनित छलिया।
रस लेने का खिलौना अगनित छलिया।
स्पर्शहूँ का खिलौना अगनित छलिया।
अगनित ब्रह्माण्ड खिलौना छलिया।
जग माँ को तो था और घर काम छलिया।
याते कछु काल को ही दे खिलौना छलिया।
जग माँ तो करि घर काम आवे छलिया।
छीनि के खिलौना दूध पिलावे छलिया।
तू तो सदा रहे मेरे पास उर छलिया।
तू तो सदा रहे सर्वव्यापक छलिया।
पुनि तू तो सत्य-संकल्प भी है छलिया।
पुनि क्यों नहिं छीना ये खिलौना छलिया।
क्यों प्रेम सुधा न पिलाया छलिया।
क्यों निज उर ते न लगाया छलिया।
चौरासी लख द्वार घुमाया छलिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बीते अगनित जनम भ्रमत छलिया।
तोहिं दया नहिं आई कैसी माता छलिया।
तेरा कितना कठोर है हृदय छलिया।
तू है साँचो कुलिशहुँ ते कठोर छलिया।
तेरे सुत को सताये तेरी दासी छलिया।
उर बैठे बैठे देखे नहिं रोके छलिया।
अब जाना पहिचाना तेरा छल छलिया।
अब जग का खिलौना नहिं भाये छलिया।
तू तो है बिनु हेतु सनेही छलिया।
तू तो बिनु सेवा द्रवे दीन पर छलिया।
मोहिं सीने से लगा ले वो 'कृपालु' छलिया।।

103

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(नथवारी रंगीली...)

तोहिं कहा भयो सखि मोहिं काहे न बताय।
मैं तो तोरी साँची सखी मोते काहे छुपाय।
मोय कछू न भयो तोय कहा दूँ बताय।

काहे मौन बिसूरति रहति बताय।
सखि पति परदेसिहिं सुरति सताय।
काहे तेरा तनु काँपे बार बार बताय।
सपने में लखि सखि भूत गई डरपाय।
काहे निकसे पसीना तेरे तनु ते बताय।
डर ते ही निकसे पसीना भूत सुधि आय।
काहे लंबी लंबी सांस लेय यह तो बताय।
सखि सीखूँ प्राणायाम इक योगी ने सिखाय।
काहे पुनि पुनि आवे आँसू दृगन बताय।
पति विरह सतावे याते दृग आँसू आय।
काहे तेरी वाणी गदगद होय बताय।
पति सुख सोचूँ तब सखि ऐसो ह्वै जाय।
काहे गिरि छिति मुरछित कहे श्याम हाय।
पति को ही कहूँ प्यार ते मैं श्याम सदाय।
जा जा जा जा झूठी काहे मोते बात बनाय।
मैंने जानी तेरे मन भाय गयो बलभाय।
तूने लिया होगा वाते निज नैन लड़ाय।
मारा होगा नैन बान तान वाय बलभाय।
तेरे तनु आठ सात्विक भाव प्रकटाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोय भी वाने दियो सोइ रोग लगाय।
यह जार प्रेम रोग सखि कासों बताय।
पुनि कहाँ लौं कब लौं याय छुपाय।
उठे हूक पुनि पुनि जब जब सुधि आय।
रोकत हूँ मुख ते निकसे हाय।
अब घर आँगन मोहिं कछु न सुहाय।
अब घर वारे मोहिं सब अरि सों लखाय।
दिन जैसे तैसे बीते रैन कैसे बिताय।
करवट बदलत बदलत रैन जाय।
सासु पूछे तोरा मन कहाँ जाय बताय।
वाते बोलूँ झूठ माता पिता सुरति सताय।
ऐसे कब तक चलेगा सखि समुझाय।
मै भी तो हूँ प्रेम रोगी पुनि तोहिं का बताय।
इक बात अजूबी येहि रोगहिं आय।
मीठी इतनी है वेदना कि छोड़ी नहिं जाय।
उतनी ही आवे सुधि जितनोइ बिसराय।
लागी छूटे न 'कृपालु' जिय जाय तो जाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

104

(नथवारी रंगीली...)

तोसों नहिं बोलूँ जारे जारे हरजाई।
मैंने प्रीति लगाई तो सों भल भरि पाई।
मैंने प्रथम न जानी तोहिं याते ठगाई।
मैं तो थी भोरी भारी तोरी बातों में आई।
तूने तो मोते मीठी मीठी बात बनाई।
मधुकर फूल रस ले के ज्यों तजि जाई।
ऐसेहि तोहिं भी नई नई मन भाई।
कारो तन कारो मन तोरा हरजाई।
कारे तन वारे सबरे ही दुखदाई।
बामन ने भी कारो कारो तन पाई।
सो बलि को छलि पाताल पठाई।
रामहुँ ने कारो कारो तन पाई।
छुपि बालि बध्यो नहिं लाज आई।
कागहु ने कारो कारो तन पाई।
निज सुत कह पिक ते पलवाई।
तूने अधर सुधा रस प्रथम पिलाई।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

झूठी मूठी मीठी बतियन मोहिं भुराई।
तोसों उऋण न हौं ह्वै कबहुँ सकाई।
अब तजि तृण सम गये मोहिं भुलाई।
तोरी रमा भोरी जो तोरी बातों में आई।
मधुपुरी वारी आज हैं जो मनभाई।
कालि उनहुँन तजि पुनि और कहुँ जाई।
जो हुआ सो हुआ अब आवूँ न ठगाई।
अब नहिं तोरी दाल गले हरजाई।
अब लौं तो सही अब सहि नहिं जाई।
तेरे मन में तो रह नित कपट खटाई।
तूने अब लौं तो बस ढोर चराई।
तू का जाने निष्ठुर उर पीर पराई।
तोको तो बस कुबरी नारि मन भाई।
ब्रज में तो नहिं कोउ कुबरी लुगाई।
जाने कैसा जादू किया मो पे तूने हरजाई।
तेरा अवगुन भी मोहिं अति मनभाई।
हम साँप छछूँदरि गति पाई।
नहिं मरत न जियत दुसह दुख पाई।
मन तो अपना है प्रीति पराई।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नहिं जरत न बुझत आग अस लाई।
सुलगत रह यह विरहाग सदाई।
कह तबहुँ 'कृपालु' सोइ मनभाई॥

105

(नथवारी रंगीली...)

दे जा दे जा री सखी मोहिं दधि को दान।
जो भी आवे येहि मग जावे दे के दान।
लागे नई आई ब्रज याते मोहिं न जान।
सूधे सूधे दे दे दान मेरो कहनो मान।
बिना दिये नहिं जाने पाये आगे जिय जान।
सखि कह तू न मोहिं कोउ ऐरी गैरी जान।
मैं हूँ श्यामा जू की सखियन परम प्रधान।
जाके कहूँ श्यामा जू को भूलि जाय लेना दान।
जा जा चला जा चला जा सूधो कहनो मान।
दान लिये बिनु जावूँ नहिं हौं कह कान्ह।
जो न देगी तो मैं छीन लूँगा मेरो नाम कान्ह।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

मटुकिहुँ ते तू हाथ धोयेगी सच मान।
सखि कह लो मैं हारी तू ही जीता हठी कान्ह।
अच्छा जा जा ले आ लता पत्र दउँ दधि दान।
उत लेने गये लता पत्र कुंज बिच कान्ह।
इत सखि छुपि गई द्रुत कुंज लतान।
लता पत्र ले के आये नहिं पाये सखि कान्ह।
चहुँ दिशि ताके खरे खरे कान्ह खिसियान।
इतने में आईं तहँ श्यामा सँग सखियान।
लखि सखियन श्यामा सँग भाजि गये कान्ह।
आई सोइ सखि तब तजि कुंज लतान।
वाने श्यामा को बतायो कारी करतूति कान्ह।
श्यामा जू ने कहा सब छुपो कुंज लतान।
एक सखि खरी रहु आवे पुनि सोइ कान्ह।
राधे राधे कहि दीजो जब आवे सोइ कान्ह।
तब सब इक सँग पकरहु तेहि कान्ह।
पुनि सब चुनरिन तरु बाँधु कान्ह।
जब सोउ माँगे मोहिं देउ मुक्ति दान।
तब कहु श्यामा जू ही देंगी मुक्ति दान।
पुनि कहु खा शपथ नहिं मागूँ दधि दान।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जब सात बार इमि कहि लेय कान्ह।
तब कहु पकरहु अब निज दोउ कान।
पुनि कहु उठो बैठो सात बार तुम कान्ह।
जब सब कर ले तो टेरो मोहिं सखियान।
सबने ही किया ऐसे बाँधे तरु महँ कान्ह।
कान्ह ने भी किया वैसे जैसे कह सखियान।
तब आईं स्वामिनि जू हूँ ढिंग कान्ह।
अब करहु कृपा दे दो मुक्ति कह कान्ह।
स्वामिनि कह छोड़ि देहु सखि कान्ह।
तब कह 'कृपालु' द्रुत भजु घर कान्ह।

106

(नथवारी रंगीली...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नारी जाने कछु प्रीति रीति बनवारी।
तो भी वारी वारी वारी सारी ब्रजनारी।
था प्रथम तो अकेला ब्रह्म बनवारी।
आया ब्रज तो चराया गाय बनवारी।

सँग पाया भी गँवारन बनवारी।
पुनि जाने कैसे प्रीति रीति बनवारी।
मग में ही कह मोहिं प्यार करु प्यारी।
बिनु जाने पहिचाने भेंटे परनारी।
लोग क्या कहेंगे सोचे नहिँ बनवारी।
सब सोइ कह सब सो है तू ही प्यारी।
झाँके घुँघटा उठाके मुख परनारी।
निधरक कह कहु मोहिं पिय प्यारी।
सब सोइ कह तेरा चेरा बनवारी।
सब सोइ कह चलु कुंजन प्यारी।
मारे दृगन बान लखि ब्रजनारी।
घायल लखि मुसकाय बनवारी।
सखियन माँगे दधि दान बनवारी।
जो न दे फोरे मटुकिहुँ बनवारी।
गर मोतिन लर तोरे बनवारी।
सखि चुनरि उतारे फारे बनवारी।
जब वाको देय कोउ ब्रजनारी गारी।
तब कहे वारी बनवारी बलिहारी।
कह पुनि दे री गारी मीठी लागे प्यारी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सब सोइ कह तू तो मोरी घरवारी।
जाने जादू यंत्र मंत्र तंत्र बनवारी।
जब कोऊ याके विरह में रोये नारी।
तब वाय लखि मुसकाय बनवारी।
जब कोउ भरे विरह में आह नारी।
तब यह कह वाह वाह बनवारी।
बनवारी ते तो हारी सब ब्रजनारी।
बनवारी ते तो हारी उमा रमा नारी।
बनवारी लखि मदनारी बने नारी।
बनवारी लखि काम चह तनु नारी।
यह जादू की पिटारी है बनवारी।
इक प्रकटी हैं श्यामा बरसाने वारी।
लाय उनको मिला दे याय बनवारी।
तब रोये यह कहि 'हाय हाय प्यारी,।
जैसे हम सब को रुलाया बनवारी।
ऐसे रोवे बनवारी हँसे ब्रजनारी।
हैं प्रेम सुधा निधि बरसाने वारी।
उनते ही प्रीति रीति सीखे बनवारी।
तब रसिक 'कृपालु' बने बनवारी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

107

(नथवारी रंगीली...)

निज कर निज गर फाँसी डार।
मैं समझी थी सुख घन यार।
किन्तु मिला दुख विरह अपार।
गई रही कालिंदी पार।
झूमत आयो नंद कुमार।
टेर्‌यो मुरलि मधुर रिझवार।
सुनि हौं सुधि बुधि देह बिसार।
लख्यो मुरलिधर घूँघट टार।
देखत ही भये नैना चार।
वाने नैनन सैनन मार।
धँस्यो सैन मम हृदय मझार।
गिरि कहत 'हा प्राणाधार, ।
गइ मुर्छा तब देखा यार।
ललित त्रिभंग लखत रह यार।
पुनि कह सखि रह कैसा वार।
आ आ अब तो करि ले प्यार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लग जा मेरे उर ब्रज नार।
हौं कह जा जा जा बटमार।
हौं नहिं ऐसी वैसी नार।
मम पति इक नारी व्रतधार।
हौं हूँ इक पतिव्रत व्रत धार।
तू है लंपट निपट गमार।
तो सों कौन करेगी प्यार।
ज्यों मधुकर कर सुमनन प्यार।
हौं जानूँ तो कहँ रिझवार।
तू है सगुण ब्रह्म साकार।
कोऊ न पायो तेरो पार।
तोसों विधि हरि हर गये हार।
तू है मायापति रिझवार।
तेरी माया अपरंपार।
नेति नेति कह वेद पुकार।
तू माने प्रेमी सों हार।
प्रेमी तोहिं नचावन हार।
तू प्रेमिन कठपुतली यार।
प्रेमी नट तू मरकट यार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

ब्रज महँ सबै प्रेम अवतार।
तेरी दाल गले नहिं यार।
हम नहिं मान ब्रह्म साकार।
हम माने तोहिं आपुन यार।
गारी दे दारीके यार।
ब्रज नहिं अस्तुति कर कोउ नार।
ब्रज नहिं आरति कोउ उतार।
ब्रज कह कपटिन को सरदार।
ब्रज कह लबरन को सरदार।
ब्रज कह जारन को सरदार।
ब्रज कह ठगहारन सरदार।
ब्रज कह जादूगर सरदार।
ब्रज कह झूठेन को सरदार।
ब्रज कह चोरन को सरदार।
ब्रज कह बट मारन सरदार।
कह 'कृपालु' भोरो मम यार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

108

(नथवारी रंगीली...)

पिय फोरी मोरी गागरि बरजोरी।
कर जोरी नहिं मान्यो कोउ बरजोरी।
घर ते निकरन दूभर गोरी।
तट यमुन भरन गइ घट कोरी।
तहँ लख्यो ठढ़ो नटवर कोरी।
मोसोँ कह सुनु ओरी गोरी।
तू बन जा सब दिन को मोरी।
हौँ कह तू कारो हौँ गोरी।
पुनि जानति करतूतहिं तोरी।
चल हट लंपट जा निज पोरी।
भूलेहुँ जनि लखु मोरी ओरी।
हौँ ऐसी वैसी नहिं गोरी।
तू कर घर घर माखन चोरी।
माँगत दधि सखियन ब्रज खोरी।
जो सखि ना दे वा घट फोरी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

काहुहिँ खोले घूँघट को री।
काहुहिँ बोले जोरी मोरी।
काहुहिँ सिर चूनरि ले छोरी।
काहुहिँ मारे सैनन को री।
काहुहिँ गर लर मोतिन तोरी।
चल लै लख सँग सखन को री।
चोरी करि भाजे निज पोरी।
लखतहिँ लै सखियन चित चोरी।
छलि ले मृदु बोलनि सखि भोरी।
पी लइ सब लोक लाज घोरी।
सब सोइ कह लखु मोरी ओरी।
हौं ही तव पति कह सब सौं री।
लखि इकली सखि छेड़त सो री।
मग महँ उर लावत बरजोरी।
चलु कहुँ 'कृपालु' तजु ब्रज गोरी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

109

(नथवारी रंगीली...)

पिया बिनु मोरा जिया हाय घबराय।
कहाँ जावूँ कासोँ कहूँ कहा कहूँ हाय।
दृग माँगे पुनि दरसन बलभाय।
श्रुति माँगे मृदु बोलनि बलभाय।
नासा माँगे दिव्य तनु गंध बलभाय।
रसना चह अधरामृत वाय।
तनु चह आलिंगन बलभाय।
मन कर चिंतन छवि बलभाय।
बुधि कह मम सब कुछ बलभाय।
जब ते लखि सखि छवि बलभाय।
घर आँगन कछु नाहिँ सुहाय।
जित देखूँ दीखे बलभाय।
दिन पल छिन कहुँ चैन न आय।
तारे गिन गिन रैन बिताय।
पुनि पुनि उठति हूक हिय हाय।
खान पान श्रृंगार न भाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

खारा लग सारा जग हाय।
कहँ लौं जारहिं प्रेम छुपाय।
कहतहुँ बनत न होय हँसाय।
वाने अस दृग बान चलाय।
दीनो तन मन प्रान गमाय।
पर उर पीर मधुर मनभाय।
याते याको तजि न सकाय।
मन कह यह रह पीर सदाय।
बुधि कह भूलि जाहु बलभाय।
इमि मन बुधि दोउ लरत सदाय।
हौं हारी मन बुधि समुझाय।
तू ही सखि इन कहँ समुझाय।
सखि कह हौं लावूँ बलभाय।
सोई यह उरझनि सुरझाय।
इतने में आये बलभाय।
लखि मन बुधि निज सुधि बिसराय।
जब आई सुधि नहिं बलभाय।
सखि कह प्रेम रोग नहिं जाय।
याको वैद्य असाध्य बताय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

याके वश रह नित बलभाय।
यह तो मुक्त जनहुँ नहिं पाय।
धनि 'कृपालु' तू प्रेमहिं पाय॥

110

(नथवारी रंगीली...)

भाय गयो भाय गयो भाय गयो बलभाय।
अब जग सुख नहिं मोहिं नेकु सुहाय।
गइ पनघट सँग सखियन समुदाय।
आयो घूमत झूमत तहँ बलभाय।
वाने कही वोरी गोरी टुक सुनु इत आय।
हौं बोली बोल बोल मोय काहे को बुलाय।
वाने कही बात कान में कहन की आय।
यह सुनि मैं भी गइ वाय ढिंग बलभाय।
वाने कही चलु सँग तेरी माय ने बुलाय।
मैंने कही बता मोहिं काहे माय ने बुलाय।
वाने कही धीरे मुख मम कान में लगाय।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

आजु अभी अभी मेरे घर आई तेरी माय।
पुनि उर ते लगा के भेंटी तेरी मेरी माय।
पुनि खुसुर खुसुर दोउ लागी बतराय।
करूँ आजु ही सगाई इमि कह दोउ माय।
पुनि हँसि तेरी माय ते बोली मेरी माय।
निज लाली को बुला दे देखूँ मैं भी छवि वाय।
जा बुला ला लाला लाली मोते कही तेरी माय।
मैं तो चाहता ही था कि तू भी मेरी बनि जाय।
कहा तू भी मोहिं चाहती थी साँचु बताय।
मैं बोली नहिं कछु चली सँग बलभाय।
मोहिँ मग में अकेली लखि सोइ बलभाय।
गलबाँही दे के लिय मोहिं उर ते लगाय।
वह सुख सखि मुख ते नहिं कहि जाय।
मैंने सोची अब तो बने पिय बलभाय।
याते मैंने भी लगाया उर वाय बलभाय।
मैं भूली सुधि रंकिनि पारस पाय।
पुनि बार बार दोउ दोउ उर ते लगाय।
कभू बैठूँ कभू चलूँ कभू उर ते लगाय।
तनु काँपे दृग आनँद जल बरसाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तनु निकसे पसीना रोम रोम हरषाय।
मिल्यो एतिक सुख सखि उर न समाय।
कैसेहुँ गई धीरे धीरे सँग बलभाय।
जब आयो घर पास तब बोल्यो बलभाय।
तू तो चलु अलि आगे तोहिं देखे मेरी माय।
मैं भी आवूँ अभी उत मोहिं सखन बुलाय।
मैं जो गई घर देखा तहँ नहिं वाय माय।
मैंने पूछा यशुमति इत आई कहा माय।
नहिँ नहिँ इत कोउ नहिँ आई कह माय।
काहे पूछे कहा बात है बता दे कह माय।
मैंने बात बताई जो जो करी बलभाय।
माय बोली वो तो झूठा वाय काहे पतियाय।
अब कहाँ जावूँ कहाँ पावूँ पुनि बलभाय।
रोम रोम रस भरि दिय पिय बलभाय।
तेरो हाल लखि हौं 'कृपालु' बलि बलि जाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

111

(नथवारी रंगीली...)

मनिहारिनि बनि गये नंदकुमार।
मनिहारिनि छवि लखि छवि बलिहार।
लखि जुरि आईं ललितादि सखिन हजार।
मनिहारिनि मनहारिनि ब्रजनार।
मनिहारिनि किय सोरह शृंगार।
चूरिन सिर धरि गइ महलन द्वार।
पुनि पुनि कह चूरिन लेहु पुकार।
मेरी चूरी जो पहिरे नार।
वाके वश ह्वै जाय वाको यार।
स्वामिनि सों कहीं जाय ब्रजनार।
इक मनिहारिनि आई सुकुमार।
अस सुंदरि नहिं कहुँ लख्यो नार।
कोउ बड़े घरन की लगत नार।
जा ला ललिता कह भानुदुलार।
हौं हूँ देखूँ मनिहारिनि नार।
आई मनिहारिनि ढिंग सुकुमार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

लख इक टक वाय वृषभानु दुलार।
पुनि पूछा नाम गाम सुकुमार।
मम नाम साँवरी सखि सरकार।
मेरो है नंदगाम सरकार।
तू ब्याही है या अहै कुमार।
हौं अब लौं हौं कुमारि सरकार।
काहू सो किय का तूने प्यार?
मम प्रियतम तो हैं नंदकुमार।
मो सन्मुख घूँघट काहे डार।
सो कह हम लघु तुम बड़ सरकार।
ला लखूँ तोर चूरिन छविदार।
सुंदर चूरिन लखि कह सुकुमार।
ले पहिरा चूरिन कह सुकुमार।
सो पुनि पुनि कर चापति सुकुमार।
पुनि पहिरावत चूरिन सुकुमार।
टूटति पुनि पुनि चूरी मनिहार।
सो सी सी सी करि कह सुकुमार।
पहिराउ चुरी का प्रथम बार।
मनिहारिनि काँपे बार बार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि बिनु चूरिन कर महँ कर डार।
तब शंक भई मन महँ ब्रजनार।
पुनि मुर्छित गिरी साँवरी नार।
देखा ललिता कंचुकि कर डार।
कंचुकि में धरी मुरलि रिझवार।
ललिता कह यह तो है ठगहार।
निज गोद लियो तब भानुदुलार।
जब मुर्छा गइ देखा रिझवार।
खुलि गई सब पोल हँसी सुकुमार।
तब कंठ लगायो भानुदुलार।
तब पुनि पुनि कह 'कृपालु' बलिहार॥

112

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

(नथवारी रंगीली...)

मिलि द्वै द्वै ह्वै गये चार यार।
पिय कै गयो बंटाढार यार।
हौं गई धारहूँ धार यार।

दइ तन मन प्रानन हार यार।
गई पनघट सिर घट धार यार।
तहँ आयो नंद कुमार यार।
वाने कह सबहिं पुकार यार।
ब्रज पतिव्रता नहिं नार यार।
यदि हो, करि ले दृग चार यार।
हौं दउँ वा धर्म बिगार यार।
मोहिँ आयो क्रोध अपार यार।
हौं गइ करिवे दृग चार यार।
लखतहिं वाने दृग सैन मार।
रहि इकटक वाय निहार यार।
सुधि बुधि निज देह बिसार यार।
किरिकिरि सों परि गयो यार यार।
हौं जीती सो गयो हार यार।
झूठेहि कह इमि सब नार यार।
नहिं सका पतिव्रत टार यार।
मन कह पुनि लखु सोइ यार यार।
बुधि कह सुधि देह सँभार यार।
निज कर जनि जाँघ उघार यार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अब पुनि जनि घूँघट टार यार।
घूँघट पट लखु यार यार।
पति आय तबै लठ मार यार।
तेहि लखि डरि दुरि गयो यार यार।
चली घर घट भर सिर धार यार।
जित देखूँ दीखत यार यार।
मग मिली सखी दुइ चार यार।
इक सखि दइ घूँघट टार यार।
कह कहुँ देखी का यार यार।
तनु काँपे बार बार यार।
नैनन बह अँसुवन धार यार।
तू डगमगात पग धरत यार।
हौं कह हौं पतिव्रत नार यार।
नहिं सक कोउ मम व्रत टार यार।
का तो पै जादू डार यार।
यह सुनि भाजी ब्रजनार यार।
पुनि पुनि आवति सुधि यार यार।
अब कैसे हो घर कार यार।
धनि तू 'कृपालु' धनि प्यार यार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

113

(नथवारी रंगीली...)

मैंने जाना नहिं तू ही मेरा पिय रसिया।
तू तो जानता था मैं हूँ तेरी पिय रसिया।
मोहिं तो भुलाया तेरी माया ने रसिया।
यामें दोष मेरा कहा है बता दे रसिया।
तेरी माया को न जीता कोउ जग रसिया।
तेरी शक्ति पाके माया तेरे सम रसिया।
तेरी कृपा बिनु माया नहिं जाय रसिया।
तेरी माया ने भुलाया मम रूप रसिया।
तेरी माया ने कराया पुण्य पाप रसिया।
माया ने घुमाया लख चौरासी रसिया।
तुम भी घूमें मेरे साथ उर बसि रसिया।
मेरे पुण्य पाप लिखे तूने नित रसिया।
किन्तु रोका नहिं कभू मोहिँ तूने रसिया।
मेंरे भाग्य कर्म भुगवाये तूने रसिया।
बार बार लिया तूने अवतार रसिया।
बार बार तूने भेजा निज जन रसिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

किंतु मैंने सब में ही देखा दोष रसिया।
शास्त्र वेद पढ़े सुने बार बार रसिया।
सत्य क्या असत्य क्या है यह जाना रसिया।
किंतु माना नहिं किया मनमाना रसिया।
तेरी माया का न पाया पार कोउ रसिया।
तेरी माया ने भुलाया विधि बुधि रसिया।
तेरी माया ने भुलाया हरि को भी रसिया।
तेरी माया ने भुलाया शिव को भी रसिया।
तेरी माया ने भुलाया रमा को भी रसिया।
तेरी माया ने भुलाया उमा को भी रसिया।
माया ने भुलाया सरस्वती को भी रसिया।
माया ने भुलाया सनकादि को भी रसिया।
माया ने भुलाया नारद को भी रसिया।
माया ने भुलाया ब्रह्मलीन को भी रसिया।
माया ने भुलाया योगारूढ़ को भी रसिया।
माया ने भुलाया विश्वामित्र को भी रसिया।
माया ने भुलाया पराशर को भी रसिया।
माया ने भुलाया भरतहुँ ज्ञानी रसिया।
माया ने भुलाया दुर्वासा को भी रसिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

माया ने भुलाया बड़े बड़े तपी रसिया।
माया ने भुलाया कामदेव को भी रसिया।
माया ने भुलाया ऋषि मुनि को भी रसिया।
तेरी माया नटी सब मरकट रसिया।
अब तो 'कृपालु' माया को भगा दे रसिया॥

114

(नथवारी रंगीली...)

मैं तो बिकि गई बिनु ही दाम सखी।
मोहिं लियो मोल घनश्याम सखी।
गइ रहि पनघट हौं बाम सखी।
तहँ मिली मोहिं इक बाम सखी।
वाने कही जनि लखियो श्याम सखी।
जो भी लखे वापे जादू डारे श्याम सखी।
मैंने कही मैं न ऐसी वैसी बाम सखी।
मेरो कहा करि लेगो सो श्याम सखी।
इतने में आयो झूमत श्याम सखी।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

मैंने घुँघटा उठा के देखा श्याम सखी।
वो तो साँचु कोटि काम अभिराम सखी।
मैं तो लुटि गइ लखतहिं श्याम सखी।
पुनि मुरली बजाइ सोइ श्याम सखी।
गिरी मुर्छित छिति हौं बाम सखी।
जब मुर्छा गइ तो देखा श्याम सखी।
पुनि सुधि बुधि भूली लखि श्याम सखी।
वो तो मुसका के चला गया श्याम सखी।
मेरा सब कुछ ले गया श्याम सखी।
अब जित देखूँ तित दीखे श्याम सखी।
जग ते भइ मैं अब बेकाम सखी।
मेरे दृग माँगे सोइ छवि श्याम सखी।
कान माँगे पुनि धुनि बेनु श्याम सखी।
ज्यों ज्यों चाहूँ बिसराऊँ छवि श्याम सखी।
त्यों त्यों और और सुधि आवे श्याम सखी।
वो तो आग लगा के गया श्याम सखी।
वो तो जाने न बुझाना आग श्याम सखी।
मन तो लै गयो घनश्याम सखी।
मन बिनु कैसे करुँ गृह काम सखी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

नहिं भावे खान पान धन धाम सखी।
धरूँ कहूँ पाम परे कहूँ पाम सखी।
मैंने जानी नहिं ऐसी छवि श्याम सखी।
मैं थी छवि गर्वीली ब्रज बाम सखी।
मेरा गर्व चूर चूर किये श्याम सखी।
कहा जाय नहिं प्यार जार श्याम सखी।
सहा जाय न विरह दुख श्याम सखी।
जरूँ विरह अगिनि वसुयाम सखी।
बार बार कहूँ हाय पिय श्याम सखी।
लोग कहें भई बावरि बाम सखी।
रोके रुके नहिं आँसू बसुयाम सखी।
सुनु सुनु सुनु बोली इक बाम सखी।
प्रेम किये जा किये जा निष्काम सखी।
मन में न ला तू भुक्ति मुक्ति काम सखी।
येहि प्रेम के अधीन रहे श्याम सखी।
धन्य प्रेम 'कृपालु' धन्य बाम सखी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोबिंद गोबिंद राधे। राधे राधे गोबिंद गोबिंद राधे॥

115

(नथवारी रंगीली...)

मैं तो लुटि गइ लुटि गइ लुटि गइ यार।
वाने सब कछु लूटा नहिं छोड़ा कछु यार।
मैं तो गइ घट भरन यमुन तट यार।
तहँ झट आयो नटखट पनघट यार।
मैंने घट भरा सिर धरा चली घर यार।
वाने मेरे घट झट मार्यो कांकरि यार।
मैंने देखा पाछे कोउ नहिं दीखा मोय यार।
वाने जाने कैसी मुरलि बजाई छुपि यार।
मैं तो मरि गइ धुनि सुनि मुरली की यार।
पुनि आयो कहा कौन फोरा घट तोरा यार।
मैंने कही इत तेरे सिवा छोरा कौन यार।
मैंने देखा निज घुँघटा उठा के वाय यार।
मोरा तन मन प्रान सब लुट गया यार।
तनु सुधि भूली गिरी छिति मुर्छित यार।
आई तहँ कछु सखि देखी गिरी मोहिं यार।
मोकूँ लूट के लुटेरा गया छुपि कहुँ यार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

जब भई चेतना तो उठि देखा चहुँ यार।
सब सखि पूछे हुआ क्या बता दे मोय यार।
भला कैसे मैं बताऊँ वाय जार प्यार यार।
मैंने कही आया औचक चक्कर यार।
सखि कह यह और ही है चक्कर यार।
साँची साँची कहु मैं तो तेरी साँची सखि यार।
मैंने कही पिया किया नैन बान वार यार।
सखि बोली वाने तोरा घट फोरा होगा यार।
ले ले मेरा घट जा झट निज घर यार।
तेरी सासु बड़ी तेज मारे बेलन यार।
जइयो घूँघट में सिर नीचे करि अब यार।
मैं भी पुनि घट भरि चलि निज घर यार।
आयो पुनि सोइ डगर लुटेरा मेरा यार।
वाने कही तू तो अब मोरी ह्वै गइ यार।
अब घुँघटा हटा के लखु इकटक यार।
मन कह लखु बुधि कह चलु घर यार।
मैंने मानी बुधि की गइ निज घर यार।
अब जित देखूँ तित दीखे यार यार।
कभु तन काँपे कभू बह दृग जल यार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बिनु देखे कल नहिं इक पल कहँ यार।
न बताते बने ना तो छुपाते बने यार।
जो होनी थी 'कृपालु' सो तो ह्वै गइ यार॥

116

(नथवारी रंगीली...)
मैं तो लुटि गई बीच बजार सखी।
मैं तो खरी रही यमुना के पार सखी।
मैं तो लखि रही यमुना की धार सखी।
आयो कतहूँ ते नंदकुमार सखी।
वाने मोते कही सुनु ब्रज नार सखी।
तू तो जाने तेरी सास खाय खार सखी।
मोते कही काहे कीनी अबार सखी।
जा लिवा ला मारूँ बेलन मार सखी।
भोरी मैं भी चली सँग रिझवार सखी।
मग वाने गल बहिँयन डार सखी।
वाके परस ने दिया जादू डार सखी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मैंने देखा वाय घुँघटा उघार सखी।
फिर क्या था ह्वै गये दृग चार सखी।
वाने किये सैनन सों वार सखी।
मैं तो गइ तन मन सब हार सखी।
पुनि उर ते लगाया रिझवार सखी।
पुनि मोते कही तू भी कर प्यार सखी।
मैं तो तनु सुधि सकी न संभार सखी।
गिरी मुर्छित धरणि मझार सखी।
इतने में आईं मेरी सखी चार सखी।
उनने ही उठाया किया प्यार सखी।
वो तो झूठा तजि भजि गया जार सखी।
मैंने सखी को बताया प्यार जार सखी।
कही सखी ने मैं जानूँ वाय जार सखी।
वो तो सब को ही ठगे ठगहार सखी।
वो तो लबरन को सरदार सखी।
वो तो सब ते ही करे दृग चार सखी।
वो तो ब्रज को बड़ों ही बटमार सखी।
वो तो कपट रूप साकार सखी।
वाते विधि हरि हर गये हार सखी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वाको लखि उमा रमा बलिहार सखी।
जो भी देखे वाय नैन सैन मार सखी।
निज पतिव्रत धर्म विचार सखी।
मानु मेरी वाय मन से निकार सखी।
अभी तो है दूर दूर का ही प्यार सखी।
अब लखु न कबहुँ रिझवार सखी।
मग चलु निज घूँघट डार सखी।
कानन्हूँ में रूई डार सखी।
वाकी मुरलिहुँ जादू डार सखी।
सँग लै चलु सखि दुइ चार सखी।
मोय अब तो ह्वै गयो प्यार सखी।
छुटे नहिं करु यतन हजार सखी।
बसि गयो रोम रोम रिझवार सखी।
तू तो छुपि के 'कृपालु' करु प्यार सखी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

117

(नथवारी रंगीली...)

मैंने जाना तोहिं भोरा भारा छोरा छलिया।
तू तो निकला लुटेरा सरदार छलिया।
मेरी भूल यह मैंने तोहि देखा छलिया।
देखना भी क्या है बड़ा अपराध छलिया।
देखते ही तूने आँखों को मिलाया छलिया।
पुनि चुपके ते घुसा उर पुर छलिया।
मेरी सारी जमा पूँजी तूने लूटी छलिया।
तूने लूटे मेरे अगनित पाप छलिया।
पाप करने में होता बड़ा श्रम छलिया।
तू क्या जाने तूने किया नहिं पाप छलिया।
तूने लूटे मेरे अगनित पुण्य छलिया।
दिया बाती को भी छोड़ा नहि कछु छलिया।
मेरे पाप पुण्य लूटे सो तो लूटे छलिया।
मेरे हाथ पैर भी तूने काटे छलिया।
क्रियमाण कर्म भी न करि सके छलिया।
मेरे पंचक्लेश भी तूने लूटे छलिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरे पंचकोश भी तूने लूटे छलिया।
मेरे तीनों देह भी तूने लूटे छलिया।
मेरा कछु भी न छोड़ा तू लुटेरा छलिया।
शुभाशुभ कर्म कर्ता था मन छलिया।
तूने मन को भी छोड़ा नहिं लूटा छलिया।
मन गया निज स्वामिनि ढिंग छलिया।
मन स्वामिनि माया आई देखा छलिया।
भागी लखतहिं तोहिं लुटेरा छलिया।
माया के थे बड़े बड़े सेनापति छलिया।
काम क्रोध लोभ मोह भट थे छलिया।
माया भागी जब सब भागे द्रुत छलिया।
मेरे साथी थे अनादि ये सब छलिया।
मेरा साथ छोड़ि गये अब सब छलिया।
जग के लुटेरे लूटि भजि जायँ छलिया।
तू तो सब कुछ लूटा बैठा उर छलिया।
तोहिं काऊ को न डर तू निडर छलिया।
जब सब कछु लूटि लिया तूने छलिया।
ले जा लूटि प्राण को भी काहे छोड़ा छलिया।
बिनु मन यह प्राण क्या करेगा छलिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तेरा भला हो लुटेरा ले जा सब छलिया।
काउ दिन तोहिँ मिले राधारानी छलिया।
वे भी तेरा सब कुछ लूटेंगी छलिया।
तब लूटने का मजा चखे तू भी छलिया।
ब्रज की हैं महरानी राधा रानी छलिया।
उन्हें पता नहीं होगा तू लुटेरा छलिया।
जाके कहूँ अभी प्यारी जू ते हौं छलिया।
तेरी लूटने की बानि मिटा दें छलिया।
यह बानि तो 'कृपालु' नहिं छोड़े छलिया॥

118

(नथवारी रंगीली...)
मैंने जब ते लखी है सखी दृग बलभाय।
जग फीको लागे नीको लागे सोइ बलभाय।
जित देखूँ तित दीखे सोइ दृग बलभाय।
हिय उठति हूक पुनि पुनि कहि हाय।
हौं इकपल कहँ कहुँ कल नहिँ पाय।
तनु रोम रोम विरहाग जराय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मेरी नींदिहुँ लै गयो सँग बलभाय।
सारा जग सखि मो कहँ शून्य लखाय।
दृग निशि दिन अँसुवन धार बहाय।
कभू निकले पसीना कभू कँपकँपी आय।
नहिं बनत बताय नहिं बनत छुपाय।
सखि तू ही बताय कछु याय उपाय।
मैंने बैठे ठाले लिय यह रोग लगाय।
मैंने लोगों से सुना है लागी बुरी है बलाय।
तू ने कहा था न लखियो दृग बलभाय।
चली घुँघटा में मैंने दोउ दृगन छुपाय।
मन नहिं माना कहा लखु दृग बलभाय।
कोई काला नाग तो नहीं है दृग बलभाय।
बुधि ने भी हाँ कही तो लखा घुँघटा उठाय।
लखतहिं वाने जाने कैसा जादू सा चलाय।
मैं तो लखतहिं रहि गई दृग बलभाय।
पुनि बार बार वार किये सैन बलभाय।
गिरी मुर्छित छिति कहि हाय बलभाय।
मोहिं मुर्छित लखि कहूँ गयो बलभाय।
जब गइ मुर्छा तो लखा न था बलभाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

इन्द्रिय मन बुधि डूबे दृग बलभाय।
अब कहा करुँ कहाँ जावूँ विरह सताय।
सोउ बोल्यो नहिं मोय हौं हूँ बोली नहिं वाय।
अब कैसी करूँ कहाँ ढूँढूं वाय बलभाय।
मोय बड़ो रूप मद हतो तोर्‌यो बलभाय।
मेरा प्रान ले के ही रहेगा दृग बलभाय।
थे रसीले थे गँसीले थे नुकीले दृग वाय।
मोते सहा भी न जाय काऊ कहा भी न जाय।
गति साँप छछूँदरि सी भई हाय।
सखि कह वाने मोहूँ यह रोग लगाय।
चलो राधा रानी ढिंग हाल सुनाय।
वे हैं स्वामिनि उनते न चहिय छुपाय।
दोउ गईं राधा रानी ढिंग हाल सुनाय।
कहा तुम ही बताओ प्यारी कैसे रोग जाय।
बोली राधा रानी सखि याय राखु छुपाय।
यह रोग कोटि मुक्त महँ कोउ इक पाय।
तो पै कृपा भई पिय दिय रोग लगाय।
यह प्रेम रोग ऐसो मर कर भी न जाय।
बिनु हेतु कृपालु 'कृपालु' बलभाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

119

(नथवारी रंगीली...)

मोरा चित चोरा काहे तू बता दे चितचोर।
मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था बता दे चितचोर।
मैंने भोरा भारा छोरा तोहिं जाना चितचोर।
तू तो निकलो बड़ोइ बरजोर चितचोर।
तू तो अभी छोटा सा ही है ओरे चितचोर।
बड़ा होके जाने क्या करेगा तू चितचोर।
कालि घट भर घर जा रही थी चितचोर।
तू ने मारि कांकरि घट फोर्‌यो चितचोर।
मैंने क्रोध से देखा पाछे तोहिँ चितचोर।
पुनि मैंने तोहिं तूने मोहिं देखा चितचोर।
तेरी आँखों में न जाने कैसा जादू चितचोर।
मैं तो मरि गइ बिनुहिं मौत चितचोर।
इकटक टकटकि लगि गई चितचोर।
मोहिं निज तनु सुधि न रही चितचोर।
तू ने उर ते लगाया मुख चूमा चितचोर।
पुनि मैं गिरी छिति मुर्छित चितचोर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तू तो जाने कित भाजि गयो चितचोर।
मेरी सखि ने उठाया मोहिं तब चितचोर।
जब तनु सुधि आई तू न था चितचोर।
मेरी सखि ने बताया जो जो हुआ चितचोर।
मैं तो हो गइ तब ते बेहाल चितचोर।
अब कासों कैसे कहा कहूँ हौं चितचोर।
पग धरूँ कहूँ परे कहूँ पग चितचोर।
पुनि पुनि तनु काँपे हो पसीना चितचोर।
दृग झर झर बरसन लागे चितचोर।
उर धर न धीर कैसेहुँ चितचोर।
उर उठति पीर पुनि पुनि चितचोर।
पुनि सोइ चह दरस परस चितचोर।
फूटो घट सिर धर गई घर चितचोर।
पूछो सास ने जो कैसे फूटा घट चितचोर।
मैंने कहा लगी ठोकर गिरी चितचोर।
पुनि कही झूठ लागी चोट कटि चितचोर।
चोट तो लगी थी साँची उर मेरे चितचोर।
एक दिन लूगीं दाँव हौं हूँ तो सों चितचोर।
करि सोरहुँ सिंगार आवूँ तो पै चितचोर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

तकि तकि नैन बान मारुँ हौं हूँ चितचोर।
तू भी छिति गिरे मुर्छित लखूँ चितचोर।
चित चोरने का फल चाखे तब चितचोर।
तोरा चित चोरि पुनि हौं कहूँगी चितचोर।
मोरा चित दे दे ले ले निज चित चितचोर।
कोटि कोटि सखि चित चोरा तूने चितचोर।
पेट भरा नहिं अबहुँ तोर चितचोर।
जाके प्यारी जू सों कहूँगी अबहिँ चितचोर।
चलो प्यारी तुम भी चुरावो चित चितचोर।
कह छूटे न 'कृपालु' बानि चोरी चितचोर॥

120

(नथवारी रंगीली...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

मोरा चोरा चित काहे चोरी चोरी चितचोर।
मैं तो हती सीधी साधी भोरी भारी चितचोर।
तूने मुरली बजाई ऐसी कैसी चितचोर।
मैं तो गई तन मन सब हार चितचोर।

मैं तो बिकि गइ बिनुहिं दाम चितचोर।
मैं तो लुटि गइ धुनि सुनतहिं चितचोर।
मैंने तेरा क्या बिगारा था लुटेरा चितचोर।
घर की रही न घाट की मैं अब चितचोर।
मन बिनु तो भवन लागे वन चितचोर।
नहिं भाये अब सुत पितु पति चितचोर।
दृग कह दिखला दे मोहिं मेरा चितचोर।
श्रुति कह पुनि मुरलि सुना दे चितचोर।
नासिका दिव्य तनु गंध माँगे चितचोर।
रसना कह अधर पिला दे चितचोर।
कासों कहूँ कैसे कहूँ कहाँ जावूँ चितचोर।
न तो मरूँ न तो जिवूँ ऐसी दशा चितचोर।
हिय उठति हूक पुनि पुनि चितचोर।
दिन चैन न नींद रैन चितचोर।
लोग कहें मोहिं बावरी भई चितचोर।
मैं तो अच्छी भली खाती पीती हती चितचोर।
मैं तो हँसती हँसाती रहती थी चितचोर।
तूने ऐसा जादू किया सब भूली चितचोर।
मन बिनु कैसे करूँ गृह कर्म चितचोर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पति को बताऊँ कैसे जार प्रेम चितचोर।
सास बड़ी तेज मारे बेलन चितचोर।
अब तो जो था होना सो हुआ चितचोर।
इक बार और मुरलि सुना दे चितचोर।
लागी छूटे नहिं चाहे जिया जाय चितचोर।
अब तो धरा है सिर ओखलि चितचोर।
याते चोट का न डर मोहिं अब चितचोर।
सुना तोरा चितचोरा प्यारी जू ने चितचोर।
याते खीझि तू भी सब चित चोरे चितचोर।
लोक में भी है कहावत यह चितचोर।
धोबी से न जीते गधे को ही मारे चितचोर।
ऐसे तू भी हारा प्यारी जू ते पिय चितचोर।
याते सब गोपिन चित चोरे चितचोर।
ले जा ले जा और जो भी चाहे ले जा चितचोर।
तन मन तो गया ही प्राण ले जा चितचोर।
मुरलि ने किया हाल जब ऐसा चितचोर।
जब तू मिलेगा जाने क्या करेगा चितचोर।
मेरा भी तो तू 'कृपालु' चित चोर चितचोर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

121

(नथवारी रंगीली...)

मोते लिपट न निपट यमुन तट हट।
लखु लखें सखा सखी घूर घूर नटखट।
मैं भी क्वांरी तू भी क्वांरो तानो मारे जग झट।
तेरी कारी करतूत सब जाने नटखट।
तेरे रोम रोम भरा कूट कूट के कपट।
मैं हूँ तेरी यह तूने ही कहा है नटखट।
माया मारे तेरी प्यारी को तू देखे नटखट।
यह बड़ अचरज मोहिं लागे नटखट।
मम उर रह दोउ हम तुम नटखट।
माया तम कैसे रह तुम रवि नटखट।
प्यारी करे पाप लिखे वाय पिय नटखट।
पाप ते न रोके पिय कैसो नटखट।
तू है जग व्यापक तूने कहा नटखट।
काहे सामने न आये काहे डरे नटखट।
तू है सत्यसंकल्प तूने कहा नटखट।
प्यारिहिं अपनाउ संकल्पहिं झट।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

संकल्प किये तेरा कहा जाय घट।
सिता मिले जल जल लागे मीठा नटखट।
तू है मुझमें न मिला तेरा सुख नटखट।
तूने बार बार लिये अवतार नटखट।
दिव्य छवि न दिखायो कियो प्यारी सों कपट।
सँग घूमें द्वार लख चौरासी नटखट।
मैं दुखी तू सुखी नित रह नटखट।
प्यारी करे पाप दंड देय पिय नटखट।
पिय करे पाप रहे निष्पाप नटखट।
यह कैसा तेरा न्याय बता दे नटखट।
मेरी शरण में आ जा कह मोते नटखट।
उत माया को लगा दे मेरे पाछे नटखट।
कहँ लौं कह अवगुन तेरे नटखट।
भजो माता पिता तूने श्रुति कह नटखट।
भज्यो तजि माता पिता बंदीगृह नटखट।
विधि को भी बनाया तूने बुद्धू नटखट।
शिव को भी बनाया शिवानी नटखट।
मैं हूँ ऋणी कहा गोपियों ते तूने नटखट।
तजि गयो गोपिन मधुपुरी नटखट।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

किय ब्याह सोला हजार एक सौ आठ झट।
भये प्रति नारि दस दस सुत नटखट।
पुनि सबको लड़ा के मरवाया नटखट।
तू ने किसी को भी नहिं छोड़ा ओ नटखट।
ताते दूर दूर रहूँ हौं 'कृपालु' नटखट॥

122

(नीको लागे...)

यार सो ह्वै गये नैना चार।
गइ हौं तन मन प्रानन हार।
सुनति रही गुनगन रिझवार।
सब कह छवि निधि नंदकुमार।
वा पर कोटि काम बलिहार।
मन कह तुम हूँ लखु रिझवार।
बुधि समुझाय थकी गइ हार।
इक दिन गइ हौं यमुना पार।
लखत रही तहँ यमुना धार।
आयो नागर नंदकुमार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वाने कही सुनिय ब्रजनार।
हौं सुनि गइ ढिंग नंदकुमार।
दृग नीचे करि घूँघट डार।
हौं कह कहु का कह रिझवार।
लख्यो एक सपनो कह यार।
तो सो है गयो मेरो प्यार।
भयो ब्याहु पुनि तू भइ नार।
अब तुम बिनु रह कैसे यार।
तू भी करि ले मोते प्यार।
सखि कह सुनु वो लम्पट यार।
हौं तो हौं ब्याही परनार।
पुनि हौं इक पतिव्रत व्रत धार।
सो कह जो तू पतिव्रत नार।
तो क्यों डर टुक मोहिं निहार।
कत बोलति घूँघट पट डार।
यह सुनि आयो क्रोध अपार।
लखी वाय घूँघट पट टार।
लखतहिं करि गयो बंटाढार।
लगि टकटकि इकटक दृग चार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि वाने सैनन किये वार।
हौं नहिं सहि सक सो सुख यार।
पुलक कंप तनु दृग जल धार।
पुनि हौं कह सुनु पिय रिझवार।
मैंने झूठ कही पर नार।
हौं तो अब लौं अहौ कुमार।
तोसों तो अब ह्वै गयो प्यार।
तूने ऐसा जादू डार।
तू ही तू दीखत संसार।
अब घर कैसे जावूँ यार।
यह सुनि आयो मो ढिंग यार।
दिये मोहिं गल बहिँयन डार।
पुनि लगाय उर कह बलिहार।
पुनि पुनि कह प्यारी रिझवार।
जब अब ही यह हाल हमार।
आगे कहा होयगो यार।
येहि यारी 'कृपालु' बलिहार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

123

(नथवारी रंगीली...)

वाने जाने कैसा जादू किया पिया जादूगर।
मैं तो मरि गई लखतहिं वाय नटवर।
मैं तो जा रही थी यमुना ते जल घट भर।
मारी मोरी गागरि काँकरि जादूगर।
मैंने देखा पाछे मुसकाता दीखा नटवर।
मारी नैन सैन जाने कैसी सोइ जादूगर।
मेरे रोम रोम प्रेम रस वाने दिया भर।
मैं तो गिरी भू पै कहि हाय हाय जादूगर।
पुनि मुरलि बजाई वाने धरि के अधर।
आई चेतना तो देखा आगे खड़ा जादूगर।
कही क्षमा करु गोरी तोरी फोरी गागर।
दउँ नई गागरि नागरि चलु घर।
गइ नई गागरि हित जादूगर घर।
उर ते लगायो मोय मग महँ जादूगर।
पुनि जैसे तैसे हौं हूँ गइ जादूगर घर।
तहँ मैया ते बनाई झूठी बात जादूगर।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कही मैया तरु पर बैठ्यो इक वानर।
मैंने मारी वाय तकि तरु इक काँकर।
तबै आई नागरि सिर धरि गागर।
काँकरि लागी फूटी नागरि गागर।
जानि जानि के न मार्‌यो मैया कह जादूगर।
पुनि कह माय दै दे याय नई गागर।
मैं तो गागरी पाई लाई पुनि जल भर।
पुनि सिर धरि गागरि गइ निज घर।
अब न परत मोहिं कल पल भर।
कहाँ जावूँ कासों कहूँ जार प्यार जादूगर।
पुनि पुनि तनु काँपे दोउ दृग जल भर।
जित देखूँ तित दीखे सोइ सोइ जादूगर।
दृग ठाने हठ माने न दिखा दे सो लँगर।
कैसे वाय समझावूँ झरे दृग झरझर।
याय कहा है गयो है कहे मम गूजर।
सास कहे या पै जादू किया काऊ जादूगर।
काऊ ओझा ते झरावो जादू जायगो उतर।
सो उतारे जो कियो 'कृपालु' जादू जादूगर॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

124

(हैं बाको सुन्दर...)

**सखि नटखट नंदकुमार, हैं जादूगर सरदार।
मो पै अस जादू डार, मैं भूलि गई घर बार॥
मैं लखि रहि यमुना धार, आये तहँ सोइ ठगहार।
औचक ह्वै गये दृग चार, किय वाने सैनन वार॥
सो सैन भई उर पार, हौं तन मन सब गइ हार।
पुनि आयो ढिंग रिझवार, कह हौं ही साँचो यार॥
पुनि घूँघट दियो उघार, भेंट्यो बरबस रिझवार।
हौं सुधि बुधि देह बिसार, मुर्छित गिरि धरणि मझार॥
मोहिं मुर्छित लखि बटमार, लिय तान मुरलि रिझवार।
सुनि तान समाधि बिसार, उठि बैठी चितवति यार॥
पुनि सो लबरन सरदार, किय नैनन सैनन वार।
पुनि कह तू करि ले प्यार, यह जीवन है दिन चार॥
हौं हाँ या ना न उचार, पुनि लखन लगी जल धार।
मन कह पुनि वाय निहार, तजु लोक लाज ब्रजनार॥
उत सों गयो यमुना पार, इत हौं रहि वाय निहार।
कैसेहुँ सुधि देह सँभार, घर गई करि बंटाढार॥**

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अब खारो लग संसार, जित देखूँ दीखत यार।
उर मधुर वेदना धार, नस नस बस रस रिझवार॥
कासों कह जारहिं प्यार, हँसिहैं सब दै कर तार।
जो होनी थी भइ यार, तो पर 'कृपालु' बलिहार॥

125

(नीको लागे...)

सखि कोउ देउ वैद बुलवाय।
तन मन रोग लग्यो बहुताय।
पुनि पुनि उठति हूक हिय हाय।
हृदय गतिहुँ नित बाढ़ति जाय।
पुनि पुनि मम तनु काँपत जाय।
आवति दीरघ श्वास सदाय।
उर पीड़ा बाढ़ति ही जाय।
तनु ते निकसत स्वेद सदाय।
दिन नहिं चैन एक छिन आय।
तारे गिन गिन रैन बिताय।

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

दिन दिन यह तन छीजत जाय।
जग सुख सपनेहुँ नाहिँ सुहाय।
सुत पति संपति कोउ नहिं भाय।
जगत काज उलटो ह्वै जाय।
कोउ कह तोहिँ उन्माद जनाय।
कोउ कह भूत लग्यो तोहि आय।
कोउ कह तू तो गई बौराय।
जियत न मरत प्राण तनु भाय।
तलफत रहत सतत असहाय।
कैसे धर्म गृहस्थ निभाय।
कहा करुँ जावूँ कहँ हाय।
सखी बेगि उपचार बताय।
सखी जानि गई कौन बलाय।
यह तो प्रेम रोग सखि आय।
याको वैद्य सोइ बलभाय।
वाने ही यह रोग लगाय।
औषधि वैद दोउ इक आय।
यह तो रोग असाध्य बताय।
औषधि क्षणिक चैन दिलवाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

वैद्य रोग को और बढ़ाय।
अच्छा लावूँ वैद बुलाय।
गई सखी द्रुत ढिंग बलभाय।
कही चलहु मो सँग बलभाय।
न तु सखि प्राण देह तजि जाय।
तुमने ही तो रोग लगाय।
श्याम वैद बनि सखि ढिंग आय।
सखि ने लखी दृगन बलभाय।
मृतक देह जनु प्रानहिं पाय।
नारी पकरि कहत बलभाय।
याको रोग कबहुँ नहिं जाय।
भाग्य भोग्य ज्ञानिहुँ कहँ आय।
कोटि मुक्त महँ कहुँ कोउ पाय।
यह ही प्रेम रोग कहलाय।
रोगी लखि 'कृपालु' डरपाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

126

(नथवारी रंगीली...)

सुनु ओरी गोरी तोरी मोरी भल जोरी।
जा जा जा री फबे नहिं तोरी मोरी जोरी।
तू है कारो कारो मैं हूँ गोरी गोरी गोरी।
तेरी कारी करतूत जाने सब गोरी।
तू घर घर कर माखन चोरी।
तू सब सोइ कह मोरी जोरी।
तोहिं जार सरदार माने सब गोरी।
या ब्रज में न बने कोउ तोरी जोरी।
तूने काउ चित चोरी काउ लर तोरी।
तूने काउ पट चोरी काउ घट फोरी।
बनि जाय भिखारी लखि ब्रज गोरी।
प्यार करे पुनि तजे ढूँढ़े और गोरी।
तो को नेकु नहिं डर लोक वेद को री।
तोहि लंपट माने सब ब्रज गोरी।
कोउ कारी कुबरी बनेगी तोरी जोरी।
तेरो तन कारो मन कारो जाने गोरी।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पछतायेगी बनेगी जोरी तोरी जोरी।
तेरी जोरी ते तो भल रह क्वांरी गोरी।
तूने बलि को छला था जानें ब्रज गोरी।
तूने छुपि मारा बाली जानें सब गोरी।
तूने सीता को तजा था जानें ब्रज गोरी।
तूने छलि मारा कौरव जानें गोरी।
तेरा उर है कठोर बज्र जानें गोरी।
तू न जाने पर पीर जानें सब गोरी।
जा के फूटे भाग सोइ बने तोरी जोरी।
ब्रज बने नित नई नई तोरी जोरी।
तू न भयो निज माता देवकी को री।
तू न भयो निज पिता वसुदेव को री।
तजि कारागार गयो गोकुल को री।
तूने छोड़ा नहिं निज सुत विधि को री।
तूने बना दिया गोपी शंकर को री।
तूने बना दिया कपि नारद को री।
तूने छोड़ा नहिँ बानी भवानी को री।
तूने छोड़ा नहिं निज कमला को री।
तू ही है 'कृपालु' बस इक तोरी जोरी॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

127

(नथवारी रंगीली...)

जब ते मैं लखी सखि छवि वाय बलभाय।
हाय हाय मोरा पिया बिनु जिया घबराय।
मैं तो गइ पनघट सँग सखि समुदाय।
तहँ आयो घूमत झूमत बलभाय।
मैं तो घूँघट में थी नहिं देखा बलभाय।
वाने कही सुनो सुनो सुनो सखि समुदाय।
ब्रज में न कोउ पतिव्रता मोय लखाय।
यदि कोउ हो तो टुक मेरे सन्मुख आय।
यह सुनि मोय अतिशय क्रोध उर आय।
मैंने कही मैं हूँ मैं हूँ पतिव्रता बलभाय।
वाने कही ओरी गोरी जो तू पतिव्रता आय।
टुक घुँघटा उठाय दृग दृग ते मिलाय।
हौं हूँ घुँघटा उठाय के गइ ढिंग बलभाय।
वाने ऐसी आँखि मारी गिरी भू पै कहि हाय।
जब मुर्छा गई तो देखा सोइ बलभाय।
सखि मधुर मधुर धुनि मुरलि बजाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सुनि मुरलि की धुनि तनु सुधि बिसराय।
तनु काँपे दृग आनँद जल बरसाय।
सो तो गयो कहुँ मोहिं लखि मृदु मुसकाय।
हौं तो विकल भई न कल इक पल आय।
सखि बोली मैंने कहा था न लखु बलभाय।
तू न मानी किय मनमानी भल फल पाय।
यह रोग है असाध्य प्रेम रोग कहलाय।
तूने जानि जानि लिये रोग उर में लगाय।
सखि कह सुनु सखि जिया रहे चाहे जाय।
लागी छुटे नहिं लागी ऐसी बुरी है बलाय।
सखि होना था हुआ सो मेरी हाँसी न उड़ाय।
अब कछु याय रोग का उपाय तो बताय।
नभ जल थल दीखे मोय छवि बलभाय।
मन कह इक बार वाय सीने से लगाय।
अब कैसे जावूँ घर कासों कहा कहूँ जाय।
जान लेंगे लोग यह रोग छुपे न छुपाय।
सखि कह इक बात साँची मोको बताय।
यह वेदना है कितनी मधुर मनभाय।
सखि कह चुप चुप चुप बातें न बनाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

सो का जाने पीर जाके पग फटी न बिवाय।
काउ दिन तू भी देखेगी जो छवि बलभाय।
है 'कृपालु' की चुनौती रोये कहि हाय हाय॥

128

(नीको लागे...)

कीरति सौं कुँवरि कहति तुतुराय।
कर चिबुक पकरि कह सुनु टुक माय।
खेलति रहि आज वाटिका माय।
सँग रहि ललितादिक सखि समुदाय।
आई तहँ कई ब्रज युवतिन माय।
पुनि लखी मोय सब नख शिख माय।
मोहीं कहँ घूरि घूरि लख माय।
पुनि लगी कान कछु सब बतराय।
मुरि मुरि सब देखें मोय माय।
हौं कही कान ललिता सों माय।
ये जादूगरनी मोय जनाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

अब हम सब द्रुत इत ते भजि जाय।
मेरो हिय करे धक धक लखि वाय।
पुनि कह यह लाली अनुपम आय।
याको तो लखि उर्वशी लजाय।
लाला भी ऐसेहि अनुपम आय।
वाको भी तो लखि काम लजाय।
लाला लाली जोरी भल भाय।
इमि कहि सब युवतिन गईं घर माय।
यह जोरी कौन बलाय माय।
यह लाला कौन कहाँ रह माय।
मेरो मन तो डरपाय माय।
यह बात बेगि समुझाय माय।
लाली लाला नँदलाल कहाय।
लाली नँद गाम कहाय वाय।
वाते तब ब्याहु करन चह वाय।
वा छवि सम छवि तेरी ही आय।
तू भोरी काहे को डरपाय।
यह तो अति शुभ संदेश कहाय।
तू भी जा सखि सँग हर्ष मनाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कह कुँवरि ब्याहु कब होय माय।
अबहिं करि दे मम ब्याहु माय।
तू पाँच बरस की अबहिं आय।
हो अबहिं सगाई तोय वाय।
कब होय सगाई मोरि माय।
करि दे न सगाई अबहिं माय।
ऊँ ऊँ करि लाली पग पटकाय।
पुनि दोउ कर खींचत वेणी माय।
कलि दे न थगाई कह तुतुराय।
पहले वे करें बात इत आय।
तब नाता भी पक्का ह्वै जाय।
मंगल मुहूर्त पंडित बतलाय।
तब होगी तोरि सगाई वाय।
जा जा जा खेलु अबहिं कह माय।
ललितादिक सखि सुनु तोहिं बुलाय।
जब होय सगाई लउँ बुलवाय।
गइ कुँवरि कहत मोहिँ बेगि बुलाय।
भोरेपन पर 'कृपालु' बलि जाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

129

(नथवारी रंगीली...)

ओली मोली माय थुनु कह लाली तुतुराय।
खेलति रहि गहवर लुका छिपी माय।
सँग रहीं ललितादिक सखि समुदाय।
इतने में तहँ आय इक बाबा माय।
भू पर पग धरि नहिं चलि सो आय।
औचक ऊपर ते नीचे आय।
छवि वाय रहि सुंदर मनहर माय।
वाके थी मूँछ न डाढ़ी माय।
इक कर थी मनहर वीणा माय।
इक कर करताल लिये था माय।
नारायण नारायण कह माय।
तनु ते निकसत प्रकाश रह माय।
देख्यो पुनि घूरि घूरि मोहिं माय।
इकटक लगि टकटकि वाय माय।
कबहुँक नाचत तनु सुधि बिसराय।
कबहुँक राधे राधे कहि गाय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

कबहुँक हो वा तनु कंपन माय।
कबहुँक वा दृग अँसुवन झरि लाय।
पुनि कह धनि धनि धनि कीरति माय।
धनि धनि धनि भानु भूप पितु याय।
धनि धनि बरसानो धाम याय।
धनि धनि धनि सखियन को समुदाय।
जो लली सँग खेलत बलि जाय।
पुनि का भयो आगे कुँवरि बताय।
पुनि सो किय मम परिकम्मा माय।
पुनि पुनि सो राधे राधे गाय।
सँग वीणा कर करताल बजाय।
इमि किये सात परिकम्मा माय।
पुनि सो लिय मोरि बलैया माय।
पुनि मोरी चरण धूरि लिय खाय।
पुनि पुनि नाचे पुनि पुनि सो गाय।
पुनि पूछी मैंने वाय माय।
बाबा टुक अपनो नाम बताय।
कित ते आयो सो गाम बताय।
तुम सब जानति सो इमि कह माय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

पुनि हँसत भज्यो सो ऊपर माय।
हम सब ललितादि लखत रहि वाय।
है सो कोउ पागल बाबा माय।
मैंने ठीक कहा है ना ओ माय।
चुप चुप लाली सो नारद आय।
वो तो हरि को अवतार कहाय।
वो भ्रमत रहत त्रिभुवन कह माय।
सुर नर मुनि सब पूजत नित वाय।
हैं ब्रह्म 'कृपालु' कुँवरि तव माय॥

130

(नथवारी रंगीली...)

COPYRIGHT RADHA GOVIND SAMITI

लरे भोरी भारी कुँवरि माय बिरुझाय।
पुनि पुनि झगरति झकझोरति माय।
ऊँ ऊँ करि पग पटकति ढिंग माय।
झटकति मटकति लटकति गर माय।
कह कीरति माय का चहिय बताय।

कह कुँवरि प्रथम हाँ करि तुतुराय।
अच्छा कहु हाँ हाँ हाँ हाँ कह माय।
ऐड़ी लौं वेणी तेरी माय।
ऐसेहिं मोरिहुँ वेणी करु माय।
तू तो लाली अभी पाँच बरस की आय।
जैसे जैसे होगी लाली तू बड़ी कह माय।
वैसे वैसे वेणी आपुहिं बाढ़ति जाय।
लाली कह मोहिँ अबहिं बड़ी करु माय।
यह सुनि परि असमंजस महँ माय।
ना ना लाली ऐसा जनि कहु कह माय।
यदि लाली तू अबहिं मो सी बड़ी ह्वै जाय।
तेरी वेणी भी अवशि मो सी बड़ी ह्वै जाय।
तब गोदी में खिलाय काको तू हीं बताय।
पुनि वेणी खींचि श्रीदामा भी तोहिं रुलाय।
पुनि सखियन भी तोहिं सँग न खेलाय।
पुनि बाबा भी न गोद ले के तोहिँ खेलाय।
यह सुनि भोरी लाली गइ हिय डरपाय।
कह लाली अब कभू नहिं बड़ी बनूँ माय।
मैं तो सदा खेला करूँ तेरी गोद महँ माय।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बार बार बाबा चूमें मुख उर ते लगाय।
कहूँ ललितादि सखियन सो हूँ हौं माय।
सब सखि कहु निज निज माय ढिंग जाय।
मोय बड़ी जनि करियो कबहूँ माय।
बड़ी हो के नहिं मिले गोद बाबा अरु माय।
बड़ी हो के गुड्डी गुडरा का खेल छुटि जाय।
बड़ी होने पै तो करि देंगे ब्याहु बाबा माय।
ब्याहु करि घर राखे नहिं देय वा भगाय।
सब ने ही कही आजु हम कहें निज माय।
सखी कह चलो लाली खेल खेलें मनभाय।
ललिता कह लावूँ नँदलाल को बुलाय।
लाली कह नहिं नहिं नहिं वाय न बुलाय।
वो तो हारे तो न दाँव देय भाजे बलभाय।
इतने में आये आपुहिं तहँ बलभाय।
लाला कह लाली मोहूँ निज सँग खिलाय।
लाली कह यदि खेल में तू हारे बलभाय।
दाँव देना परे कान खोलि सुनु बलभाय।
दूँगो दूँगो दूँगो दूँगो दाँव कह बलभाय।
लखे जो 'कृपालु' लाली लाल खेल बलि जाय॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

131

(नथवारी रंगीली...)

सो छबीली छबि छली अति छल बलिया।
विधि हरि हर को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
उमा रमा आदि को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
सनकादिक को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
शुकदेव मुनि को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
जनकादिक को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
ब्रह्मलीन जन को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
निज परिकर को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
नित्य सिद्ध जन को भी जो छला छलिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
ब्रज गोपी जन को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
ब्रज गोप जन को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
ब्रज वासी जन को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
ब्रह्म ज्ञानी जन को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
शुद्ध बुद्ध जन को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
महा रसिकन को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
उद्धवादिक को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
मुक्त मुनि जन को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
सिद्ध योगी जन को भी छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

काम अरु रति को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
ब्रज लता पता को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
केकी कोक कीर को भी जो छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
सब शुद्ध मन वालों को छला छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया।
क्यों 'कृपालु' से पतित सों डरा छलिया।
छला गया सो छबीली छवि ते छलिया॥

132

(नथवारी रंगीली...)

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

देखो देखो आली लाली आजु बनी गोरे ग्वाल।
छलने की सोची वाने छलिया नँदलाल।
सिर बाँधी वैसी पाग जैसी बाँधे नँदलाल।
सिर मोर मुकुट तिरछे जनु लाल।

खोलि दई वेणी लटकारी प्यारी घुँघराल।
केशर को तिलक लगायो निज भाल।
कजरारी अँखियन दिय काजर डाल।
श्रुति कुंडल झलमल झलकत गाल।
नासा बेसर हलकति जनु लाल।
चंचल चितवनि अति सरस रसाल।
मुरि मुरि मृदु मुसकनि मोहीं ब्रज बाल।
कर कंकन अँगुरिन मुँदरि रसाल।
गर रंग बिरंगी मणिमय माल।
गर सोहति अति वैजंती माल।
गल सोहति पंच पुष्प वनमाल।
गल भल दुकूल पट गुंज माल।
कटि किंकिनि रुन झुन धुन है रसाल।
कटि तट पीतांबर कछनि लाल।
लइ खोंसि काछनिहिं मुरलि रसाल।
पग मणिमय नूपुर धुनि है रसाल।
दोउ कंध लकुटि कामरिहुँ रसाल।
भइ खरि जनु ललित त्रिभंगी लाल।
नख शिख श्रृंगार किये जनु लाल।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

गज मत्त लजावनि चलत चाल।
नँदलाल सरिस सब चाल ढाल।
लखि लखि ललितादिक भईं निहाल।
पुनि पुल्लिँग वाक्यन सीख हाल।
इक सखि बनि गइ पुनि नँदलाल।
संवाद किये पुनि ग्वाल लाल।
अभिनय सीखे इमि गोरे ग्वाल।
सखि कह लग साँचुहिँ गोरे ग्वाल।
अब चलहु लाल ढिंग कह ब्रज बाल।
अब नहिँ पहिचान सकत नँदलाल।
बनि साँवरि छल्यो तोहिँ नँदलाल।
तुमहूँ छलु अब बनि गोरे ग्वाल।
नित छलत फिरत भोरिन ब्रज बाल।
फल पाय छलन को आजु लाल।
बलि बलि 'कृपालु' बलि गोरे ग्वाल॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

राधे राधे गोविंद गोविंद राधे। राधे राधे गोविंद गोविंद राधे॥

133

(नीको लागे...)

आली लखु लाली लाल झुलन बहार।
झूला डर्‌यो कुंज कदमन डार।
चंदन को झूला रिझवार।
झूला की रेशम डोर निहार।
झूला किय फूलन को सिंगार।
चंदन फूलन महक अपार।
झूलन बैठी हैं भानुदुलार।
झूला झुलावत नंदकुमार।
नभ आये बदरा घिरि बलिहार।
घन दामिनि दमकनि रिझवार।
गावति अलि मिलि राग मलार।
बाजत विविध वाद्य बलिहार।
ब्रज नार बोले बलिहार बार बार।
उत लखु लाली को फुलन सिंगार।
फुलन को सिर पर मुकुट निहार।
फुलन की शीश चन्द्रिका धार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

घुँघुरारी वेणिहुँ फुलन सँवार।
कलिन को कानन कुंडल धार।
फुलन को कर कंकन बलिहार।
फुलन की पहुँची छवि छविदार।
फुलन के बाजूबंद भुजन निहार।
कलिन की अंगुरिन मुँदरिन धार।
रंग बिरंगे फुलन को हार।
उर कंचुकि भल फुलन सँवार।
फुलन की कटि किंकिनि रिझवार।
नीली सारिहुँ फुलन सँवार।
कलिन की पग पायल छविदार।
कलिन के बिछुये अँगुरिन धार।
फुलन को लालहुँ किय सिंगार।
फुलन को सब सखि किय सिंगार।
चहुँ दिशि फूली लतन निहार।
झरत फुलन सिर कदमनि डार।
सब अलि मिलि कर जय जयकार।
घन गरजन लागे गगन मझार।
घन गरजन सुनि डरीं सुकुमार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

बैठे तब सँग नंदकुमार।
गरबाहीं डार दोउ सरकार।
झुलवत दोउ 'कृपालु' सरकार॥

134

(नीको लागे...)

सखि लखु सावन मास बहार।
हरियाली हरियाली आली निहार।
मंद सुगंधित बहत बयार।
उमड़ि घुमड़ि घन गरज निहार।
रिमझिम रिमझिम परत फुहार।
घन बिच दामिनि दमक निहार।
फूलें फूल लतन बलिहार।
झूलें अलि तरु झूला डार।
चलु अलि मिलि ढिंग भानुदुलार।
कहु चलिये झूलन सरकार।
कीनी ललिहिं विनय ब्रजनार।
कीनी ललिहु विनय स्वीकार।

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI

उत ते आये नंदकुमार।
सखियन किय झूला तैयार।
चंदन झूला छवि छविदार।
रेशम डोर कदंबनि डार।
झूला को किय फुलन सिँगार।
पिय कह तुम झूलहु सुकुमार।
प्यारी कह झूलहु रिझवार।
पिय चह सेवा भानुदुलार।
प्यारी चह सेवा रिझवार।
दोउन हठ लख सब ब्रजनार।
तब कह ललिता दोउ सरकार।
तुम दोउ सँग झूलहु सरकार।
दोउन झुलवति हम ब्रजनार।
झूलन बैठे दोउ सरकार।
तब झगरन लागीं सब ब्रजनार।
हौं ही झुलवहुँ कह ब्रजनार।
झगरो लखत युगल सरकार।
तब 'कृपालु' कह सुनु ब्रजनार।
देहु मोहिं सेवा अधिकार॥

COPYRIGHT
RADHA GOVIND SAMITI